TARKSHEEL SOCIETY PUNJAB (REGD.)
BE RATIONALIST

वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL PATH

मार्च-अप्रैल 2026



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं को समर्पित विशेषांक

30/-

"शिक्षा महिलाओं की स्वतंत्रता और सम्मान का बहुत बड़ा आधार है।" सावित्रीबाई फुले

महिला दिवस

आज नहीं केवल उत्सव का दिन,
यह संघर्षों का इतिहास है,
यह उन जंजीरों की खनक है
जो टूटकर बनी आवाज़ है।
जब-जब अंधेरों ने घेरा था,
जब सपनों पर पहरा था,
तब एक स्त्री ने दीप जलाया,
अपने साहस से सवेरा था।
वह केवल आँचल की छाया नहीं,
वह रणभूमि की पुकार है,
वह शिक्षा, शक्ति, श्रम की गाथा,
वह परिवर्तन का आधार है।
आज भी देती है साहस बढ़कर।
वह कलम उठाकर लिखती है,
अधिकारों की नई कहानी,
सावित्रीबाई फुले की शिक्षा-ज्योति
आज भी करती है अगवानी।
वह खेतों में पसीना बहाए,
वह सीमा पर डटी खड़ी,
वह विज्ञान की ऊँची उड़ान,
वह अंतरिक्ष की ओर बढ़ी।
कल्पना चावला की उड़ान ने
आसमान से पूछा प्रश्न नया –
"सीमाएँ क्यों बाँधें सपनों को?
हक़ है हर बेटी का गगन सदा ।ज्
वह माँ है, बहन है, साथी है,
पर सबसे पहले इंसान है,
उसके सम्मान के बिना अधूरा
हर देश, समाज, हर विधान है।
नहीं चाहिए केवल शब्दों का
खोखला सम्मान यहाँ,
बराबरी का अधिकार मिले,
हर घर, हर कार्यस्थान यहाँ।
उसकी मेहनत को मान मिले,
उसके सपनों को पंख मिले,
वह खुद अपना निर्णय ले,
उसे आगे बढ़ने के रंग मिले।
क्रांति केवल तलवार नहीं,
क्रांति है विचारों की ज्योति,
जब स्त्री खुद को पहचान ले,
तभी मिटेगी हर एक भ्रांति।
आओ प्रतिज्ञा आज करें –
न अन्याय सहेंगे, न होने देंगे,
नारी की शक्ति को पहचानकर
उसे सम्मान से जीवन देंगे।
महिला दिवस का अर्थ यही –
समानता का उद्घोष हो,
हर बेटी निर्भय चल सके,
ऐसा समाज, ऐसा परिवेश हो।
वह क्रांति की ज्वाला बनकर
अन्याय की दीवार गिराएगी,
जब स्त्री जागेगी पूरे स्वर में,
नई दुनिया फिर से बसाएगी।
नारी नहीं अबला है,
वह परिवर्तन की धारा है,
उसके जागरण से ही
हर युग का सवेरा प्यारा है।

अज्ञात

पत्रिका शुल्क :-
वार्षिक : 150/- रू.
विदेश : वार्षिक : 40 यू.एस.डॉलर
रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:
मुख्य कार्यालय
तर्कशील भवन, संघेडा बाईपास
तर्कशील चौंक, बरनाला-148101
01679-241466, 98769 53561
tarkshiloffice@gmail.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com

राजिन्दर भदौड़, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी की तरफ से तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.) द्वारा अप्पू आर्ट प्रैस, शाहकोट (जलन्धर) से मुद्रित करके मुख्य कार्यालय तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.), बरनाला, (पंजाब) से तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण के लिए जारी किया।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क
पंजाब नैशनल बैंक में
तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.) के नाम से
खाता सं. 0044000100282234
IFSC: PUNB0004400 में जमा करा सकते है।
एंव पत्रिका भेजने के लिए एड्रेस व शुल्क की स्क्रीन शॉट/रसीद मोबाइल नम्बर
+91 98156 70725 पर वट्सएप कर दें।

इस अंक में

- संपादकीय 1
1. भ्रष्ट व्यवस्था की लंबी उम्र का राज 2
2. क्लारा जेटकिन : समाजवादी नारी आंदोलन की प्रखर अग्रदूत 4
3. हेलन केलर : अंधकार से प्रकाश की और 6
4. अगोरा : एक अद्भुत महिला 'हिपेशिया' की कहानी 8
5. रोसा पार्क्स : नागरिक अधिकार आंदोलन की साहसी प्रतीक 10
6. लघु कथा-प्रेमवती का पत्र 11
7. मलाला यूसुफ़ज़ई : शिक्षा, साहस और मानवाधिकारों की वैश्विक आवाज़ 12
8. केस रिपोर्ट-भविष्य का मार्ग 13
9. कोई नारी डायन/टोनही नहीं 15
10. कानून 16
11. एपस्टीन के अपराधों का पर्दाफाश करके दुनिया को हिला देने 17
12. वास्तु शास्त्र की वास्तविकता 20
13. मैं हूँ 22
14. हम पक्षियों की तरह क्यों नहीं उड़ सकते? 23
13. मजबूत कदम 24-25
16. शंका निवारण 26
17. साझा संघर्ष धर्मनिरपेक्षता की ... 28
18. ईश्वर विकसित राष्ट्रों में अप्रचलित... 30
19. अंध भक्ति से तर्कशीलता का सफर 31
20. अधिनायकवादी पूंजीवाद की पराकाष्ठा और लोकतंत्र के सामने 32
21. धर्म, अनीश्वरवाद, नास्तिकता और भगत सिंह 33
22. भविष्यवाणी 35
23. भारत की दो महान शिक्षिकाएँ, सावित्रीबाई फुले और फातिमा शेख 37
24. सिजोफ्रेनिया : मन-मन के सवाल 39
25. अब्राहम टी. कावूर 41
26. तर्कशील हलचल-गांव थानोद में अंधविश्वास के विरुद्ध व्याख्यान 43
27. तर्कशील संस्थाओं की समन्वय समिति की दो दिवसीय कार्यशाला हुई, ... 47

आनलाईन पत्रिका को पढ़ने के लिए :

www.tarksheel.org,
http://tarksheelblog.
wordpress.com
सर्च करें: tarksheel :
www.archive.org
Readwhere.com

संपादकीय

हर वर्ष 8 मार्च को दुनियां अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाती है। यह दिन महिलाओं के अधिकारों, समानता और गरिमा की बात करता है। लेकिन जब हम महिला अधिकारों की चर्चा करते हैं, तो हमें उन सच्चाइयों का भी सामना करना पड़ता है जो समाज की परतों के नीचे छिपी रहती है। इसी संदर्भ में जेफ्री एपस्टीन से जुड़ी तथाकथित ''एपस्टीन फाइल्स'' हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि सत्ता, धन और प्रभाव के पीछे कितनी बार महिलाओं और नाबालिग लड़कियों की आवाज़ दबा दी जाती है।

एपस्टीन एक प्रभावशाली वित्तीय कारोबारी था, जिस पर यौन शोषण और तस्करी जैसे गंभीर आरोप लगे हैं। उसके मामले में सामने आए दस्तावेज़ों और न्यायिक कार्यवाहियों ने यह दिखाया कि किस प्रकार प्रभावशाली लोग लंबे समय तक कानून की पकड़ से बचते रहे और बचते रहते हैं। यह केवल एक व्यक्ति की कहानी नहीं, बल्कि उस व्यवस्था की भी कहानी है जिसमें पीड़ितों की शिकायतें अक्सर अनसुनी कर दी जाती है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस केवल उत्सव का दिन नहीं है; यह आत्ममंथन का भी अवसर है। जब हम महिला सशक्तिकरण की बात करते हैं, तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि दुनिया के कई हिस्सों में महिलाएँ अब भी शोषण, हिंसा और भेदभाव का सामना कर रही है। एपस्टीन प्रकरण यह याद दिलाता है कि न्याय व्यवस्था में पारदर्शिता और जवाबदेही कितनी आवश्यकता है। यदि शक्तिशाली लोगों के अपराध छिपा दिए जाएँ तों समाज में न्याय का विश्वास कमज़ोर हो जाता है। महिला दिवस का मूल उद्देश्य समान, अवसर, सम्मान और सुरक्षा सुनिश्चित करना है। इसके लिए केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं; समाज की सोच में भी बदलाव ज़रूरी है। हमें ऐसी संस्कृति विकसित करनी होगी जहाँ पीड़ितों को दोषी न ठहराया जाए, बल्कि उनकी बात को गंभीरता से सुना जाए। मीडिया, न्यायपालिका और सरकार-सभी की जिम्मेदारी है कि वे निष्पक्षता और संवेदनशीलता से कार्य करें। एपस्टीन फाइल्स से जुड़ी चर्चाएँ यह भी दर्शाती हैं कि डिजिटल युग में जानकारी छिपाना कठिन होता जा रहा है। पारदर्शिता की मांग बढ़ रही है और नागरिक समाज अधिक सजग हो चुका है। यह एक सकारात्मक संकेत है, क्योंकि जवाबदेही लोकतंत्र की बुनियाद है। जब समाज मिलकर अन्याय के खिलाफ खड़ा होता है, तब बदलाव संभव होता है।

अंतत:, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस हमें केवल प्रेरक नारों तक सीमित नहीं रखता; यह ठोस कार्रवाई की मांग करता है। शिक्षा, कानूनी सुधार, और सामाजिक जागरूकता-इन तीनों के माध्यम में ही हम वास्तविक समानात की ओर बढ़ सकते हैं। एपस्टीन जैसे मामलों में सीख लेकर हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि भविष्य में किसी भी महिला या लड़की को अपनी आवाज़ उठाने में भय न लगे।

न्याय, समानता और सम्मान-यही वे स्तंभ हैं जिन पर एक स्वस्थ समाज खड़ा होता है। महिला दिवस पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम हर प्रकार के शोषण के खिलाफ खड़े होंगे और एक ऐसे विश्व के निर्माण में योगदान देंगे जहाँ हर महिला सुरक्षित और सम्मानित महसूस करें।

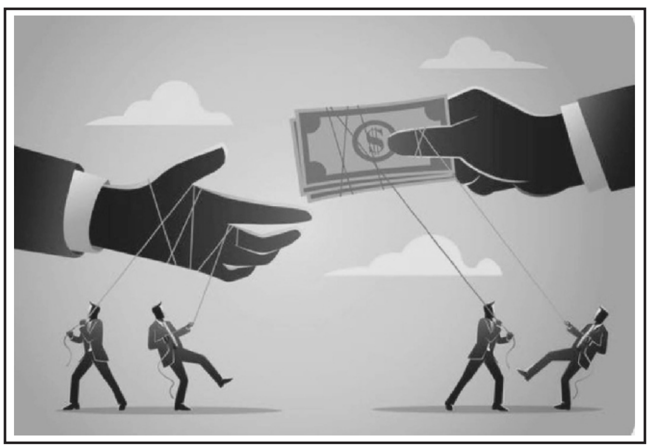
भ्रष्ट व्यवस्था की लंबी उम्र का राज

–गुरचरण सिंह नूरपुर

डेरों /आश्रमो में असंख्य श्रद्धालु आते हैं – माथा टेकते हैं, मन्नतें माँगते हैं और अपने घरों की गरीबी, दुर्दशा और पारिवारिक कलह से मुक्ति पाने की प्रार्थना करते हैं।

उसी डेरे का एक श्रद्धालु जिसकी श्रद्धा बेहद गहरी थी। वह हर काम डेरे की कृपा और आशीर्वाद से करता। घर में गरीबी थी, फिर भी वह नियम से दान देता, कई दिन डेरे में सफ़ाई करता, जहाँ निर्माण हो रहा होता वहाँ मिट्टी, बजरी, रेत और ईंटें ढोने की सेवा करता। वह डेरे में झूठे बर्तन धोने तक को भी पुण्य मानता और खुद को भाग्यशाली समझता।

डेरे का प्रमुख/मुखिया/बाबा उसकी अटूट श्रद्धा से परिचित था। एक दिन जब डेराधारी दूध जैसे सफेद वस्त्र पहने हरे लॉन में घूम रहा था, उसने उस श्रद्धालु को पौधों की जड़ों में खाद डालते देखा। उसे दया आई। उसने आवाज़ दी–



''हम तेरी सेवा से बहुत खुश हैं, आज जो माँगना है माँग ले।''

श्रद्धालु की आँखों से खुशी के आँसू निकल आए। जो वह वर्षों से चाहता था, आज मानो वह क्षण आ गया था। उसने कहा –

''महाराज, मुझे और मेरे परिवार को खुशियों का आशीर्वाद दो। हम सुखमय जीवन जीने के योग्य बनें। हमारे जीवन में सुख-शांति और समृद्धि हो।''

डेराधारी थोड़ी निराशा में बोला

''मैं तुझे मुक्ति का वरदान देता हूँ।''

श्रद्धालु बोला –

''पर महाराज! मैं अच्छी ज़िंदगी भी जीना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरे बच्चे भी अच्छा जीवन जिएँ, उन्हें किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े।''

इस पर डेराधारी झल्लाया–

''अरे मूर्ख! हम तुझे मुक्ति दे रहे हैं और तू अभी भी दुनियावी झंझटों में फँसा है। कुछ होश कर–किस प्रकार का जीवन चाहिए तुझे?''

सफेद वस्त्रों के बीच उसकी सोने की घड़ी चमकी।

श्रद्धालु बोला –

''वैसा ही जीवन जैसे आपका और आपके परिवार का है। जब ये मुक्ति मिलेगी तब तो मैं रहूँगा ही नहीं, तब इसका मुझसे क्या लाभ? पहले जी कर तो देख लें, फिर मुक्ति का सोच लेंगे।''

और इस तरह जीवन की सच्चाई के आगे मुक्ति का वरदान बौना हो गया।

आज के प्रचारक, डेराधारी और पुजारी हमें अगले जन्म को सँवारने की बातें बताते हैं, पर इस जन्म की समस्याओं के बारे में मौन हैं। रोज़मर्रा की ज़िंदगी में बढ़ते भ्रष्टाचार, राजनीतिक नीचता और नैतिक पतन ने लाखों लोगों को दबा दिया है। माताओं के लाडले बेटे नशे की आग में जल रहे हैं; जनता को दान और राहत के पात्र बना दिया गया है।

आपा-धापी और हिंसा के इस युग में प्रकृति के संसाधनों की लूट चरम पर है। जल, जंगल और पर्यावरण की ऐसी तबाही मानव इतिहास में कभी नहीं हुई। इसका परिणाम है – गरीबी, भूख, बीमारी और बेरोज़गारी। मगर ये झूठे धार्मिक मंच, जहाँ से मुक्ति और परलोक की बातें सिखाई जाती हैं, इन वास्तविक मानवीय समस्याओं से कोसों दूर हैं। यही हमारे समय का सबसे बड़ा प्रश्न है, जिसका उत्तर इन दिखावटी धार्मिक गुरुओं के पास नहीं है।

आज सारे पाखंड, धोखा, रिश्वत और अत्याचार उच्च स्तर पर है। मानव जीवन की समस्याएं मानव को चैन से बैठने नहीं दे रही, वैज्ञानिक चिंतन के अभाव में एवं गुरुडम का माहौल बनने से लोगों डेरों में अपनी समस्याओं के हल ढूंढने निकल पड़ते हैं जहां पर अपने जैसे लोगों की भीड़ देख उनके मन में यह आशा जागती है कि वे भी जीवन की समस्याओं गरीबी, बेरोजगारी बीमारी, गृह क्लेश,परिवार में नशे आदि पर बाबा/ गुरु की कृपा से काबू पा लेंगे ,लेकिन होता उल्टा है ये समस्याएं तो ज्यों की त्यों बनी रहती हैं उल्टा डेरों में मानसिक,आर्थिक और शारीरिक शोषण होने लगता है लोग स्वयं तो पीड़ित होते ही रहते हैं साथ ही बाबाओ/गुरुओं के झूठे किस्से अपने आस पास के समाज में प्रेषित कर उन्हें भी डेरो में जाने के लिए प्रेरित करते रहते है ,जिससे बाबाओं के डेरों में भीड़ बढ़ती रहती है कुछ लोग तो इतने अंध श्रद्धा में डूब जाते हैं कि अपनी संपत्तियां भी दान कर देते हैं और डेरों शारीरिक श्रम करते हुए जीने लगते हैं उनकी यह अंधश्रद्धा या तो टूटती नहीं या जब डेरे में गलत काम होते देख उन्हें कुछ दिखने लगता है तो भागने की कोशिश करते हैं लेकिन तब तक बहुत देर हो जाती है कुछ केसों में बाबा लोग अपनी पोल खुलने के डर से कत्ल तक करवा देते हैं। के डेरों/आश्रमों में एक समय के बाद राजनीति पक्ष को प्रभावित करने की ताकत आने लगती है।तब जुड़े श्रद्धालु वोट बैंक के रूप में भी बन जाते हैं और राजनीतिक बाबा गठजोड़ का कुचक्र चल पड़ता है।

आम जनता के पक्ष में कोई आवाज़ नहीं उठती। ये लोग जनता से कहते हैं – तुम्हारी तकलीफ़ें किसी राजनीतिक धोखाधड़ी की वजह से नहीं, बल्कि तुम्हारे कर्मों और किस्मत की वजह से हैं।

अगर किसी सरकारी दफ्तर में तुम्हारी सुनवाई नहीं होती, अगर तुम्हारे हक छीने जाते हैं, अगर नशे से तुम्हारी पीढ़ियाँ बर्बाद होती हैं, नकली दवाइयाँ और नकली खाना तुम्हें बीमार बना रहा है – तो इसके लिए कोई भ्रष्ट प्रणाली नहीं, बल्कि तुम्हारी ''किस्मत'' ज़िम्मेदार है!

और किस्मत बदलने के लिए कहा जाता है – ''डेरों/ आश्रमों , पर जाकर सिर झुकाओ, दान दो, सेवा करो।'' इस अंधविश्वास ने जनता की सोचने-समझने की क्षमता को छोटा कर दिया है। यही मानसिकता इस भ्रष्ट व्यवस्था को मजबूती देती है और उसकी उम्र लंबी करती है।

लोग जब-जब अपनी परेशानियों से मुक्ति के लिए इन डेरों में झुकते हैं, तब-तब डेरों की संपत्तियाँ बढ़ती जाती हैं,अवैध कब्जे होते हैं राजनेता वोटों के लिए इन डेरे दारों पर माथा टेकते हैं, और धार्मिक मुद्दों को भड़काकर समाज को बाँटा जाता है – ताकि जनता अपने अधिकारों के प्रति जागरूक न हो सके, धार्मिक पहचान को एक तरफ रख कर एकजुट न हो सके।

जब तक लोग भाग्य और कर्मफल के चक्र में फँसे रहेंगे, तब तक भ्रष्टाचार फलता-फूलता रहेगा। वैज्ञानिक चिंतन की बजाय अंधविश्वास पनपेगा, तब तक डेरों की भीड़ बढ़ती रहेगी। यह धर्म और राजनीति का गठजोड़ एक-दूसरे के पूरक की तरह काम करता रहेगा। जिससे दोनों की सत्ता मज़बूत होती रहेगी।

किसी भी देश या समाज को अपनी समस्याओं से मुक्ति पाने के लिए 'वैज्ञानिक चिंतन और तर्कपूर्ण दृष्टिकोण' की आवश्यकता होती है। जिन देशों में इस वैज्ञानिक चेतना का प्रसार हुआ, वहाँ समस्याएँ कम हो गईं हैं, लेकिन जहाँ अंधविश्वास और रूढ़िवाद बढ़ रहा वहाँ लोगों की पीड़ाएँ और बढ़ रही हैं।

यदि कोई व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से समृद्ध भी हो, पर उसके आस-पास का समाज भ्रष्ट, हिंसक और नशे में डूबा हो – तो वह भी उस पीड़ा से मुक्त नहीं रह सकता। इसलिए यदि हमें एक बेहतर समाज चाहिए, स्वच्छ वातावरण, शांति और सम्मान से भरा जीवन चाहिए, तो हमें अपनी समस्याओं को पहचानना होगा और उनका हल खुद तलाशना होगा – किसी ''दिव्य शक्ति'' या चमत्कार की प्रतीक्षा नहीं करनी होगी। इसी में मनुष्य की सच्ची मुक्ति और सभ्य समाज का भविष्य समाया है।

मो. 98555051099

भ्रष्टाचार समाज की नैतिक नींव को कमजोर करता है। यह विकास, न्याय और समान अवसरों में बाधा बनता है। रिश्वत, पक्षपात और सत्ता का दुरुपयोग जनता का विश्वास तोड़ते हैं। ईमानदारी, पारदर्शिता और कठोर कानून से इसे रोका जा सकता है।

क्लारा जेटकिन : समाजवादी नारी आंदोलन की प्रखर अग्रदूत

- अमर आज़ाद

क्लारा जेटकिन (Clara Zetkin) विश्व इतिहास की उन महान महिलाओं में शामिल हैं, जिन्होंने महिलाओं के अधिकारों, श्रमिक आंदोलन और समाजवादी विचारधारा को एक नई दिशा दी। वे न केवल एक क्रांतिकारी समाजवादी नेता थीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय महिला आंदोलन की सशक्त वैचारिक आधारशिला भी थीं। आज अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के इतिहास में उनका नाम विशेष सम्मान के साथ लिया जाता है। क्लारा जेटकिन का जीवन संघर्ष, विचार और संगठन की शक्ति का अनुपम उदाहरण है।

क्लारा जेटकिन का जन्म 5 जुलाई 1857 को जर्मनी के सैक्सोनी क्षेत्र के एक छोटे से गाँव विडेराउ में हुआ। उनका बचपन शिक्षित और प्रगतिशील वातावरण में बीता। उनकी माता जोसेफिन विटाले एक शिक्षिका और महिलाओं की शिक्षा की समर्थक थीं। माँ के विचारों का गहरा प्रभाव क्लारा पर पड़ा, जिसके कारण वे प्रारंभ से ही सामाजिक अन्याय और लैंगिक असमानता के प्रति संवेदनशील बन गईं। उन्होंने शिक्षण का अध्ययन किया, लेकिन जल्द ही उनका झुकाव राजनीति और समाज सुधार की ओर हो गया।



युवा अवस्था में क्लारा जेटकिन समाजवादी विचारधारा से प्रभावित हुईं और जर्मनी की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी (SPD) से जुड़ गईं। उस समय जर्मनी में महिलाओं की राजनीतिक गतिविधियों पर कड़े प्रतिबंध थे, फिर भी क्लारा ने साहसपूर्वक आंदोलन का मार्ग चुना। सरकार के दमन के कारण उन्हें कुछ समय के लिए देश छोड़ना पड़ा और वे फ्रांस तथा स्विट्ज़रलैंड में निर्वासन का जीवन जीने लगीं। निर्वासन के दौरान भी उन्होंने श्रमिक वर्ग और महिलाओं के अधिकारों के लिए लेखन और संगठन का कार्य जारी रखा।

क्लारा जेटकिन का मानना था कि महिलाओं की मुक्ति केवल कानूनी सुधारों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए सामाजिक और आर्थिक ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन आवश्यक है। वे यह स्पष्ट रूप से कहती थीं कि पूँजीवादी व्यवस्था में स्त्री शोषण अनिवार्य है और स्त्रियों की वास्तविक मुक्ति समाजवादी व्यवस्था में ही संभव हो सकती है। इसी कारण वे बुर्जुआ नारीवाद की आलोचक थीं, जो केवल मध्यम वर्ग की महिलाओं के सीमित अधिकारों की बात करता था।

उन्होंने श्रमिक महिलाओं को संगठित करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। क्लारा जेटकिन लंबे समय तक समाजवादी पत्रिका ''डि ग्लाइषाइट'' (Die Gleichheit - समानता) की संपादक रहीं। इस पत्रिका के माध्यम से उन्होंने महिलाओं में वर्ग चेतना, राजनीतिक जागरूकता और संगठन की भावना विकसित की। उनके लेखों में नारी प्रश्न को वर्ग संघर्ष से जोड़कर देखा गया, जो उस समय एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण था।

क्लारा जेटकिन की सबसे ऐतिहासिक उपलब्धि अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की अवधारणा है। 1910 में कोपेनहेगन में आयोजित अंतरराष्ट्रीय समाजवादी महिला सम्मेलन में उन्होंने यह प्रस्ताव रखा कि हर वर्ष एक दिन महिलाओं के अधिकारों, विशेषकर मताधिकार और श्रमिक अधिकारों, के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाए। इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। इसके बाद 1911 में पहली बार कई देशों में महिला दिवस मनाया गया, जो आगे चलकर 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में स्थापित हुआ।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान क्लारा जेटकिन ने युद्ध का कड़ा विरोध किया। वे युद्ध को पूँजीवादी शक्तियों का परिणाम

मानती थीं, जिसमें सबसे अधिक नुकसान श्रमिकों और महिलाओं का होता है। युद्ध विरोधी रुख के कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा, लेकिन उन्होंने अपने विचारों से कभी समझौता नहीं किया। बाद में वे जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी (KPD) से जुड़ीं और जर्मनी की संसद (राइखस्टाग) की सदस्य भी बनीं। एक वृद्ध महिला के रूप में भी उन्होंने संसद में फासीवाद और युद्ध के विरुद्ध निर्भीक भाषण दिए।

क्लारा जेटकिन का जीवन यह दर्शाता है कि वे केवल महिला अधिकारों की नेता नहीं थीं, बल्कि व्यापक सामाजिक परिवर्तन की पक्षधर थीं। उनके लिए नारी मुक्ति, श्रमिक अधिकार और शांति–तीनों एक–दूसरे से गहराई से जुड़े हुए थे। वे मानती थीं कि जब तक समाज से शोषण की व्यवस्था समाप्त नहीं होती, तब तक महिलाओं को वास्तविक समानता नहीं मिल सकती।

20 जून 1933 को सोवियत संघ में उनका निधन हुआ, लेकिन उनके विचार आज भी जीवित हैं। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, श्रमिक महिलाओं के संगठन और समाजवादी नारीवाद की परंपरा में क्लारा जेटकिन का योगदान अमर है। निष्कर्षत:, क्लारा जेटकिन का जीवन संघर्षशील महिलाओं और सामाजिक न्याय के लिए लड़ने वाले सभी लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने साबित किया कि विचारों की ताकत से इतिहास की दिशा बदली जा सकती

नारी तू शक्ति

नारी तू शक्ति, तू सृष्टि की पहचान,
तेरे साहस से रोशन हर एक जहान।
ममता की मूरत, हिम्मत की मिसाल,
तेरे बिना सूना हर उत्सव, हर साल।
तू सपनों की उड़ान, तू आशा की किरण,
तेरे कदमों से सजता जीवन–आँगन।
संघर्षों में भी मुस्कान सजाए,
हर मुश्किल से आगे बढ़ जाए।
शिक्षा, सम्मान और अधिकार मिले,
तेरे सपनों को खुला आकाश मिले।
नमन तुझे हर दिन, हर बार,
तू ही भविष्य, तू ही संसार।

महिलाओं के बारे में विद्वानों के विचार

महान यूनानी दार्शनिक प्लेटो का मानना था कि स्त्री और पुरुष में स्वभाविक रूप से कोई मौलिक भेद नहीं है। उन्होंने कहा कि यदि महिलाओं को समान शिक्षा और अवसर दिए जाएँ, तो वे भी राज्य और समाज के संचालन में पुरुषों के समान योगदान दे सकती हैं। यह विचार उस युग में अत्यंत प्रगतिशील था।

फ्रांसीसी दार्शनिक ज्यां–जैक रूसो ने यद्यपि महिलाओं को पारिवारिक भूमिका से जोड़ा, परंतु यह भी स्वीकार किया कि समाज की नैतिकता और भावनात्मक संतुलन में महिलाओं की भूमिका केंद्रीय है। उनके अनुसार, माँ के रूप में स्त्री ही बच्चे के चरित्र का निर्माण करती है।

अंग्रेज़ दार्शनिक जॉन स्टुअर्ट मिल महिलाओं की स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक थे। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक The Subjection of Women में उन्होंने स्त्री–पुरुष असमानता को सामाजिक अन्याय बताया। मिल का मानना था कि महिलाओं को शिक्षा, संपत्ति और राजनीतिक अधिकार मिलना चाहिए, क्योंकि बिना महिला सशक्तिकरण के समाज की प्रगति अधूरी है।

अमेरिकी समाज सुधारक मार्गरेट मीड ने अपने मानवशास्त्रीय अध्ययनों के आधार पर कहा कि स्त्री–पुरुष भूमिकाएँ जैविक नहीं, बल्कि सामाजिक निर्माण हैं। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि किसी समाज की संस्कृति ही यह तय करती है कि महिलाओं को कितना सम्मान और स्वतंत्रता मिलेगी।

प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखिका और दार्शनिक सिमोन द बोउवार ने कहा, ''स्त्री पैदा नहीं होती, बल्कि बना दी जाती है।'' उनके अनुसार, समाज महिलाओं पर परंपरागत भूमिकाएँ थोपता है, जिससे उनका व्यक्तित्व सीमित हो जाता है। उन्होंने महिलाओं की आत्मनिर्भरता और आत्मचेतना पर विशेष बल दिया।

नोबेल पुरस्कार विजेता मलाला यूसुफ़ज़ई (आधुनिक विचारक) ने शिक्षा को महिला सशक्तिकरण की कुंजी बताया। उनका मानना है कि जब एक लड़की शिक्षित होती है, तो वह पूरे समाज को आगे बढ़ाती है।

हेलन केलर : अंधकार से प्रकाश की ओर

–गीतिका दूबे

मानव इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जिनका जीवन केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाता है। हेलन केलर ऐसी ही एक विलक्षण व्यक्तित्व थीं, जिनका जीवन संघर्ष, साहस, धैर्य और अदम्य इच्छाशक्ति का अद्भुत उदाहरण है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि शारीरिक सीमाएँ मनुष्य की संभावनाओं को सीमित नहीं कर सकतीं, यदि उसके भीतर सीखने और आगे बढ़ने की इच्छा जीवित हो।

हेलन केलर का जन्म 27 जून 1880 को अमेरिका के अलबामा राज्य के टस्कंबिया नामक स्थान पर हुआ। प्रारंभिक डेढ़ वर्ष तक वे एक सामान्य, स्वस्थ बालिका की तरह विकसित हो रही थीं। किंतु 19 माह की आयु में एक गंभीर बीमारी–जिसे उस समय ''ब्रेन फीवर'' कहा गया–ने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी। इस बीमारी के कारण वे दृष्टि और श्रवण–दोनों से वंचित हो गईं। न देख पाने और न सुन पाने की यह स्थिति उनके लिए ही नहीं, उनके परिवार के लिए भी अत्यंत पीड़ादायक थी।



बाल्यावस्था में संचार का कोई माध्यम न होने के कारण हेलन का व्यवहार उग्र और चिड़चिड़ा हो गया। वे अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाती थीं, जिससे उनके भीतर कुंठा बढ़ती चली गई। परिवार उन्हें बहुत प्रेम करता था, किंतु सही मार्गदर्शन के अभाव में वे उनकी शिक्षा और विकास को लेकर असहाय महसूस करते थे। ऐसे समय में परिवार के लिए आशा की किरण बनकर आईं–एनी सुलिवन।

एनी सुलिवन स्वयं भी कठिनाइयों से जूझकर आगे बढ़ी थीं। वे आंशिक रूप से दृष्टिबाधित थीं और उनका जीवन भी संघर्षों से भरा रहा था। 1887 में जब वे हेलन की शिक्षिका बनकर आईं, तब किसी ने नहीं सोचा था कि यह मुलाकात इतिहास रच देगी। एनी सुलिवन ने अत्यंत धैर्य और संवेदनशीलता के साथ हेलन को स्पर्श–भाषा (टैक्टाइल लैंग्वेज) के माध्यम से शब्दों का अर्थ समझाना आरंभ किया।

हेलन के जीवन का सबसे निर्णायक क्षण वह था जब एनी सुलिवन ने उनके हाथ पर पानी बहाते हुए 'वॉटर' शब्द को उकेरा। उसी क्षण हेलन के मन में यह बोध हुआ कि हर वस्तु का एक नाम होता है। यह समझ उनके लिए ज्ञान के द्वार खुलने जैसा था। इसके बाद उन्होंने तेजी से शब्दों और विचारों को सीखना शुरू किया। यह केवल शिक्षा नहीं थी, बल्कि अंधकार में प्रकाश का प्रवेश था।

धीरे–धीरे हेलन ने ब्रेल लिपि के माध्यम से पढ़ना और लिखना सीखा। उन्होंने कई भाषाएँ सीखीं और बोलना भी सीखा, जो अपने आप में एक असाधारण उपलब्धि थी। उच्चारण पूर्णत: स्पष्ट न होने के बावजूद, उनका आत्मविश्वास और संकल्प अडिग था। उन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय से संबद्ध रैडक्लिफ कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और इस प्रकार वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली पहली दृष्टि–श्रवण बाधित महिला बनीं।

हेलन केलर केवल एक शिक्षित महिला ही नहीं थीं, बल्कि एक सशक्त लेखिका, वक्ता और समाज सुधारक भी थीं। उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों को शब्दों में ढालकर कई पुस्तकें लिखीं। उनकी आत्मकथा ''द स्टोरी ऑफ माई लाइफ'' आज भी विश्व की सबसे प्रेरणादायक पुस्तकों में गिनी जाती है। इस पुस्तक में उन्होंने अपने संघर्ष, भावनाएँ और सीखने की यात्रा को अत्यंत ईमानदारी से प्रस्तुत किया है।

हेलन केलर ने अपने जीवन को केवल अपनी सफलता तक सीमित नहीं रखा। वे दिव्यांगजनों के अधिकारों के लिए

आजीवन संघर्ष करती रहीं। उन्होंने अंधों और बधिरों की शिक्षा, रोजगार और सामाजिक सम्मान के लिए आवाज़ उठाई। वे समाजवादी विचारधारा से प्रभावित थीं और सामाजिक असमानताओं, स्त्री अधिकारों तथा श्रमिकों की स्थिति पर भी खुलकर अपने विचार व्यक्त करती थीं।

उन्होंने अमेरिका ही नहीं, बल्कि विश्व के अनेक देशों की यात्राएँ कीं और लोगों को प्रेरित किया कि दिव्यांगता को कमजोरी नहीं, बल्कि एक अलग स्थिति के रूप में समझा जाए। उनका मानना था कि समाज की सबसे बड़ी बाधा शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक होती है। यदि समाज का दृष्टिकोण सकारात्मक हो, तो कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को सार्थक बना सकता है।

हेलन केलर का जीवन हमें यह सिखाता है कि शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं होती। शिक्षा वह प्रकाश है जो मनुष्य को स्वयं पर विश्वास करना सिखाता है। वे कहती थीं कि ''चरित्र को शांति और आराम में नहीं, बल्कि कठिनाइयों और संघर्षों के अनुभव से गढ़ा जाता है।'' उनका यह कथन आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

आज के समय में, जब छोटी-छोटी असफलताएँ हमें निराश कर देती हैं, हेलन केलर का जीवन हमें धैर्य और साहस का पाठ पढ़ाता है। उन्होंने न केवल अपनी सीमाओं को स्वीकार किया, बल्कि उन्हें अपनी शक्ति में परिवर्तित किया। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि सच्ची दृष्टि आँखों से नहीं, बल्कि मन से होती है और सच्ची आवाज़ शब्दों की नहीं, बल्कि विचारों की होती है।

हेलन केलर का निधन 1 जून 1968 को हुआ, किंतु उनके विचार, उनके संघर्ष और उनकी प्रेरणा आज भी जीवित हैं। वे केवल एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व नहीं, बल्कि मानव आत्मा की असीम संभावनाओं की प्रतीक हैं। उनका जीवन हमें यह विश्वास दिलाता है कि यदि संकल्प दृढ़ हो, तो अंधकार कितना ही गहरा क्यों न हो, प्रकाश का मार्ग अवश्य निकलता है।

अंततः कहा जा सकता है कि हेलन केलर का जीवन हर उस व्यक्ति के लिए संदेश है जो स्वयं को परिस्थितियों का बंदी मान लेता है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि सीमाएँ हमारे शरीर में नहीं, हमारी सोच में होती हैं। यही कारण है कि हेलन केलर केवल एक नाम नहीं, बल्कि आशा, संघर्ष और विजय की अमर कहानी हैं।

जॉन स्टुअर्ट मिल के महिलाओं के बारे में विचार

जॉन स्टुअर्ट मिल (1806-1873) उन्नीसवीं सदी के महान दार्शनिक, अर्थशास्त्री और समाज सुधारक थे। वे महिलाओं की समानता के सबसे सशक्त समर्थकों में से एक माने जाते हैं। उनकी प्रसिद्ध कृति "The Subjection of Women" (1869) महिलाओं के अधिकारों पर लिखी गई सबसे क्रांतिकारी पुस्तकों में गिनी जाती है।

मिल का मूल तर्क यह था कि समाज में महिलाओं की अधीनता प्राकृतिक नहीं, बल्कि सामाजिक और कानूनी व्यवस्था की देन है। उन्होंने कहा कि जैसे दासता अन्यायपूर्ण थी, वैसे ही स्त्रियों को पुरुषों के अधीन रखना भी अन्याय है। उनके अनुसार पुरुष-प्रधान व्यवस्था ने महिलाओं की क्षमताओं को कभी विकसित ही नहीं होने दिया, इसलिए यह कहना गलत है कि महिलाएँ पुरुषों से कम योग्य हैं।

मिल ने कानूनी और राजनीतिक समानता पर विशेष ज़ोर दिया। वे महिलाओं को मताधिकार (वोट का अधिकार) देने के प्रबल समर्थक थे। ब्रिटिश संसद के सदस्य रहते हुए उन्होंने महिलाओं को वोट का अधिकार दिलाने के लिए प्रस्ताव भी रखा। उनका मानना था कि जब तक महिलाओं को राजनीतिक अधिकार नहीं मिलेंगे, तब तक लोकतंत्र अधूरा रहेगा।

शिक्षा के विषय में मिल के विचार अत्यंत प्रगतिशील थे। वे कहते थे कि महिलाओं को पुरुषों के समान शिक्षा और बौद्धिक अवसर मिलने चाहिए। यदि लड़कियों को बचपन से ही समान शिक्षा दी जाए, तो वे समाज, विज्ञान, कला और राजनीति में उतना ही योगदान दे सकती हैं जितना पुरुष।

विवाह संस्था पर भी मिल ने आलोचनात्मक दृष्टि रखी। उनके अनुसार उस समय का विवाह स्त्री के लिए एक प्रकार की कानूनी गुलामी था, जहाँ पत्नी को पति की संपत्ति जैसा समझा जाता था। मिल समानता पर आधारित विवाह के पक्षधर थे, जिसमें पति और पत्नी दोनों को समान अधिकार और स्वतंत्रता हो।

मिल के विचारों पर उनकी पत्नी हैरियट टेलर मिल का गहरा प्रभाव था। वे मानते थे कि समाज की वास्तविक प्रगति तब ही संभव है, जब महिलाओं को दबाने के बजाय उनकी प्रतिभा और स्वतंत्रता को विकसित होने दिया जाए।

अगोरा : एक अद्भुत महिला 'हिपेशिया' की कहानी

–मनीष आजाद

कोपरनिकस और गैलिलिओ से लगभग 1000 साल पहले मिश्र के अलेक्जेंड्रिया शहर में एक महिला हुआ करती थी। उसका कहना था कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। और वह भी अंडाकार वृत्त में। बिना किसी आधुनिक उपकरण और दूरबीन की सहायता के उसने उस वक्त स्थापित टालेमी माडल को चुनौती दी।



इस अद्भुत महिला दार्शनिक, गणितज्ञ व वैज्ञानिक का नाम हिपेशिया था।

2009 में आयी फिल्म 'अगोरा' हिपेशिया की कहानी के बहाने उस दौर में धर्म, विवेक, विज्ञान के खूनी टकराव को इस तरह प्रस्तुत करती है कि यह हमे आज के दौर पर भी सोचने को बाध्य करती है।

हिपेशिया अलेक्जेंड्रिया में अभिजात्य वर्ग के युवकों को पढ़ाती है। उसका पिता अलेक्जेंड्रिया लाइब्रेरी में ही काम करता हैं। उसकी भी रूचि वही है जो हिपेशिया की है। दोनों लाइब्रेरी में दुनिया भर से एकत्र की गयी किताबों के बीच बैठ कर विज्ञान, गणित, दर्शन के गूढ़ सवालों पर चर्चा करते हैं। पिता–पुत्री के बीच का यह सम्बन्ध फिल्म में बहुत ही प्रभावी है।

हिपेशिया के महत्व को आप इस तथ्य से भी समझ सकते हैं कि अरस्तू का यह कथन उस वक्त के समाज का कॉमन सेंस था कि औरतों और गुलामों में दिमाग नहीं होता। सार्वजनिक जीवन में महिलायें न के बराबर थी।

बहरहाल, युवकों को पढ़ाते हुए ही एक छात्र युवक हिपेशिया की सुन्दरता पर मोहित होकर उससे प्रेम निवेदन कर बैठता है। दूसरे दिन हिपेशिया अपनी कक्षा में अपने पीरियड के खून से सने रूमाल को पूरी कक्षा के सामने उसे देते हुए कहती है– मैं यह भी हूँ। संकेत साफ है कि किसी औरत से प्यार करना है तो उसे सम्पूर्णता में करो। महज बाहरी सौन्दर्य के आधार पर नही।

उसका अंगरक्षक उसका गुलाम भी मन ही मन उसे चाहता है, लेकिन गुलाम होने के कारण उसे व्यक्त नहीं करपाता। उस गुलाम की भी अपनी समानांतर कहानी पूरी फिल्म में अंत तक चलती है।

यहीं पर यह बताना महत्वपूर्ण है कि हिपेशिया का किरदार जीने वाली रसेल वीज़ सच में बहुत खूबसूरत है। लेकिन उन्होंने अपने अभिनय में कहीं भी अपनी सुन्दरता का 'शोषण' नहीं किया है। अगर ऐसा होता तो उनका किरदार फीका पड़ सकता था। जैसा कि आम ऐतिहासिक फिल्मों में होता है।

जिस समय हिपेशिया अलेक्जेंड्रिया में पढ़ा रही है और अपने दार्शनिक, वैज्ञानिक जूनून का अनुसरण कर रही है, ठीक उसी समय रोम में ईसाइयत राज्य धर्म बन चुका है। यहूदियों और मूर्तिपूजकों [Pagan] को निशाना बनाया जा रहा है। इस समय अलेक्जेंड्रिया रोम का हिस्सा है। इसलिए यहाँ भी राज्य–धर्म बन चुके ईसाइयत का कट्टरपन बढ़ता जा रहा है। हिपेशिया के ही कुछ छात्र सत्ता की सीढ़ी में ऊपर जाने के लिए ईसाई बन चुके हैं। हिपेशिया के लिए स्वतंत्र माहौल में पढ़ाना अब मुश्किल होता जा रहा है। सच तो यह है कि अब हिपेशिया के लिए सार्वजनिक रूप से पहले की तरह बाहर निकलना भी दूभर होता जा रहा है।

उसके वे छात्र जो अब ईसाई बनकर सत्ता में ऊँची जगहों पर बैठे हैं वे भी दबाव बना रहे हैं कि हिपेशिया ईसाई धर्म ग्रहण कर ले। ऐसे ही एक दिलचस्प वार्तालाप में हिपेशिया कहती है कि मेरा धर्म दर्शन है और मैं ईसाई कभी नहीं बनूंगी।

काम 'पागान' [Pagan] धर्म से जुड़े विशालकाय 'देवताओं' को ईसाई कट्टरपंथी गिरा रहे है। यह दृश्य बरबस तालिबान द्वारा विशालकाय बौद्ध प्रतिमाओं को गिराए जाने की

याद दिला देता है। तालिबानी कुछ नया नहीं कर रहे थे वे महज इतिहास को दोहरा रहे थे। माण कि ठीक बाइबिल में जो 'ज्ञान' है, उसके अलावा सभी ज्ञान पर अब पाबंदी लगा दी जाती है। बाइबिल है तो फिर विश्व प्रसिद्ध अलेक्जेंड्रिया की लाइब्रेरी की क्या जरूरत है, जहाँ विश्व का विविध ज्ञान भरा हुआ है। लाइब्रेरी को जलाने के लिए ईसाई कट्टरपंथियों की भीड़ निकल पड़ती है। जब यह बात हिपेशिया और उसके चंद उन छात्रों को पता चलती है जो अभी भी विवेक को धर्म से ऊपर रखते हैं और स्वतंत्र चिंतन में विश्वास रखते हैं, तो ये लोग लाइब्रेरी से जितनी जल्दी, जितनी महत्वपूर्ण किताबें [scrolls] निकाल सकते हैं, निकाल कर दूसरी जगह पंहुचा देते हैं। शायद यही बची किताबों ने बाद में दुनिया को रोशन करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यह फिल्म का बहुत ही सशक्त दृश्य है। एरियल शाट का इस्तेमाल करते हुए पूरी इमेज को उलट दिया गया है। सन्देश साफ़ है कि इसके बाद सब कुछ उलट गया। दुनिया अन्धकार युग में प्रवेश कर गयी। यहाँ निर्देशक इस विजुअल से यह साफ संकेत देता है कि जहाँ विज्ञान चीजों को पैरों के बल खड़ा करता है, वहाँ धर्म उसे सर के बल खड़ा कर देता है।

लेकिन क्लाइमेक्स अभी बाकी है, क्योंकि हिपेशिया अभी बाकी है। और जब तक हिपेशिया बाकी है, तब तक विवेक और विज्ञान बाकी है। घने अन्धकार में दीया बाकी है। बिना इस दीये को बुझाए अन्धकार की पूर्ण विजय कैसे हो सकती है। कार

हिपेशिया पर हबीब तनवीर का एक प्रसिद्ध नाटक है- एक औरत हिपेशिया भी थी। उसकी यह पंक्ति देखिये-हिपेशिया को रास्तों से घसीटते हुए गिरजा के अंदर ले गए। गिरजा खपरैलों से खुरच खुरच कर उसकी खाल नोची। फिर देखा कि उसकी आँखों में जान बाकी है, तो आँखें नोच लीं। फिर उसके जिस्म का एक-एक अंग काट कर टुकड़े-टुकड़े किया और बाहर ले जाकर उसे जला दिया।

फिल्म में हिपेशिया की मौत को थोड़ा दूसरे तरीके से दिखाया गया है। लेकिन बर्बरता वही है।

इस फिल्म के निर्देशक Alejandro Amenábar हैं जो खुद घोषित नास्तिक हैं। शायद इसीलिए वे धर्म की बर्बरता को इतने सशक्त तरीके से दिखा सके।

यह फिल्म बनाते हुए उनकी नज़र आज के समाज में बढ़ती धार्मिक कट्टरता और राज्य का बहुसंख्यक धर्म से अपने को जोड़ते चले जाने पर है। यानी राज्य के बर्बर बनते चले जाने पर है। एक तरह से यह एतिहासिक सेटिंग की फिल्म होने के साथ ही आज के समाज की भी एक तीखी आलोचना है। आज धार्मिक राज्यों की भी वही स्थिति है, जो उस समय रोम और अलेक्जेंड्रिया की थी। चाहे वह इस्लामिक देश हों, बौद्ध धर्म वाला राज्य म्यामार हो या हिन्दू धर्म वाला [भले ही अघोषित तौर पर] भारत हो। हर जगह हिपेशिया को चुन चुन कर मारा जा रहा है। गौरी लंकेश, पानसारे, दाभोलकर जैसे लोग हिपेशिया नहीं तो और कौन हैं?

यह फिल्म हमें सचेत करती है कि हमे एक बार फिर अन्धकार युग में जाना है या लाखों करोड़ो हिपेशिया बनकर इस अन्धकार को चीर देना है।

फैसला पूरी तरह हमारा है...

गदरी बीबी गुलाब कौर

बीबी गुलाब कौर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक साहसी और समर्पित क्रांतिकारी थीं। उनका जन्म पंजाब के संगरूर जिले के बख्शीवाला गाँव में हुआ। वे गदर आंदोलन से जुड़ीं, जिसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन को समाप्त करना था।

पति के साथ विदेश (फिलीपींस) जाने के दौरान उनका संपर्क गदर पार्टी के कार्यकर्ताओं से हुआ। वहीं उन्होंने स्वतंत्रता की भावना को अपनाया और क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाई। वे गदर पार्टी के समाचार पत्र और पर्चों का वितरण करती थीं तथा लोगों को अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जागरूक करती थीं।

भारत लौटने पर उन्होंने पंजाब में गुप्त रूप से क्रांतिकारी संदेश फैलाए। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और कठोर कारावास दिया। जेल में भी उन्होंने अपने आदर्शों से समझौता नहीं किया।

बीबी गुलाब कौर का जीवन साहस, त्याग और देशभक्ति का प्रतीक है। उनका योगदान यह दर्शाता है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक रही है।

रोसा पार्क्स : नागरिक अधिकार आंदोलन की साहसी प्रतीक

—फ्रांज काफ्का

रोसा पार्क्स (Rosa Parks) अमेरिका के नागरिक अधिकार आंदोलन की एक महान और ऐतिहासिक हस्ती थीं। उन्हें अक्सर ''नागरिक अधिकार आंदोलन की जननी'' कहा जाता है। उनका साहस, आत्मसम्मान और शांतिपूर्ण विरोध नस्लीय भेदभाव के खिलाफ संघर्ष का प्रतीक बन गया। रोसा पार्क्स का जीवन यह सिद्ध करता है कि एक साधारण-सा निर्णय भी इतिहास की दिशा बदल सकता है।

रोसा पार्क्स का जन्म 4 फ़रवरी 1913 को अलाबामा राज्य के टस्केगी शहर में हुआ। उनका पूरा नाम रोसा लुईस मैकॉली पार्क्स था। उस समय अमेरिका में अश्वेत लोगों के साथ गंभीर नस्लीय भेदभाव किया जाता था। स्कूल, बसें, रेस्तराँ और सार्वजनिक स्थान गोरे और अश्वेत लोगों के लिए अलग-अलग थे। बचपन से ही रोसा ने इस अन्याय को नज़दीक से देखा, जिसने उनके मन में समानता की भावना को मजबूत किया।

1 दिसंबर 1955 को रोसा पार्क्स ने ऐसा साहसिक कदम उठाया जिसने पूरे अमेरिका को झकझोर दिया। अलाबामा के मोंटगोमेरी शहर में बस यात्रा के दौरान उनसे कहा गया कि वे अपनी सीट एक गोरे व्यक्ति को दे दें। उस समय कानून के अनुसार अश्वेत लोगों को पीछे बैठना पड़ता था और जरूरत पड़ने पर उन्हें अपनी सीट छोड़नी होती थी। रोसा पार्क्स ने शांतिपूर्वक लेकिन दृढ़ता से अपनी सीट छोड़ने से इनकार कर दिया। इस ''न'' ने नस्लीय अन्याय को खुली चुनौती दी।

इस विरोध के परिणामस्वरूप रोसा पार्क्स को गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर जुर्माना लगाया गया। लेकिन उनकी गिरफ्तारी ने मोंटगोमेरी बस बहिष्कार आंदोलन को जन्म दिया, जिसका नेतृत्व युवा पादरी मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने किया। यह बहिष्कार लगभग 381 दिनों तक चला और अंततः अमेरिका की सर्वोच्च अदालत ने बसों में नस्लीय भेदभाव को असंवैधानिक घोषित कर दिया। यह नागरिक अधिकार आंदोलन की ऐतिहासिक जीत थी।

रोसा पार्क्स का संघर्ष केवल एक दिन या एक घटना तक सीमित नहीं था। वे लंबे समय से नागरिक अधिकार संगठन NAACP से जुड़ी हुई थीं और नस्लीय अन्याय के विरुद्ध सक्रिय रूप से काम कर रही थीं। उन्होंने अपने जीवन के शेष वर्षों में भी समानता, न्याय और मानवाधिकारों के लिए संघर्ष जारी रखा।

उनके योगदान के लिए रोसा पार्क्स को अनेक सम्मान मिले। 1996 में उन्हें अमेरिका का सर्वोच्च नागरिक सम्मान प्रेसिडेंशियल मेडल ऑफ़ फ़्रीडम प्रदान किया गया और 1999 में कांग्रेसनल गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया। 24 अक्टूबर 2005 को उनका निधन हुआ, लेकिन उनके विचार और संघर्ष आज भी जीवित हैं।

रोसा पार्क्स का जीवन हमें यह सिखाता है कि साहस का अर्थ शोर मचाना नहीं, बल्कि अन्याय के सामने शांतिपूर्वक डटे रहना भी हो सकता है। उनका प्रसिद्ध कथन-''मैं थकी नहीं थी, मैं अन्याय से थकी हुई थी''-आज भी समानता और मानवाधिकारों की लड़ाई में प्रेरणा देता है। रोसा पार्क्स इतिहास में उस रोशनी की तरह हैं, जिसने अंधेरे में न्याय का रास्ता दिखाया।

***

प्रेमवती का पत्र

-गजेंद्र रावत्र

बैरक में घुसते ही प्रकाश ने कमर से बेल्ट खींचकर खूंटी पर टांग दी। पलंग के पास कुर्सी पर बैठकर उसने संदूक के नीचे से अपनी पत्नी का पत्र निकाला और पढ़ने लगा...

''मुन्नी के पापा, हम सब यहाँ ठीक हैं। आशा करती हुँ कि आप भी खुश और संतुष्ट होंगे। पूरा एक साल हो गया, आप घर नहीं आए। पता नहीं क्यों मुझे डर और चिंता सताती रहती है। पापा की खांसी ठीक नहीं हो रही है। मुझे उन्हें रोज़ डॉक्टर के पास ले जाना पड़ता है। कोने वाले डॉक्टर ने फीस तीन-चार गुना बढ़ा दी है। लेकिन उनके पास जाना भी मजबूरी है। मुन्नी को भी आपकी बहुत याद आती है। मैंने उसे एक छोटे से स्कूल में भी डाल दिया है। अभी फीस देनी बाकी है। आप जो पैसे भेजते हैं, उससे वे जमा हुआ कर्ज़ चुकाते हैं। हो सके तो कुछ और पैसे भेज देना। हर चीज़ की क़ीमत बढ़ गई है। महीने के आखिर में एक पाई-पाई के लिए दूसरों का मुँह ताकना पड़ता है। बस इतना ही,आपके जवाब का इंतज़ार है।

आपकी प्यारी,

प्रेमावती

''फीस बढ़ गई......

फीस भरनी है.... दाम बढ़ गए.... पाई-पाई के लिए...'' वह बड़बड़ाया। फिर उसने आँखें बंद कर लीं और बिस्तर पर पैर पसार लिए।

उसकी नींद तब खुली जब कांस्टेबल महेंद्र ने उसे बताया, ''भाई। कल संसद मार्ग पर भी ड्यूटी है।''

''क्यों, कल क्या है?'', प्रकाश ने बिस्तर पर लेटे - लेटे पूछा।

''होगा कोई धरना-प्रदर्शन।''

''क्या नौकरी है ?'' वह बड़बड़ाया। सुबह से ही तैयारियाँ शुरू हो गई। संसद मार्ग को बैरिकेड्स से बंद कर दिया गया । हेलमेट और डंडों से लैस कांस्टेबलों की दो कतारें बैरिकेड्स पर खड़ी थीं। दोनों तरफ़ दो-दो सिपाही आँसू गैस के गोले लेकर तैनात थे। आखिरी कतार हथियार बंद सिपाहियों की थी।

थोड़ी देर बाद, एसीपी ने सिपाहियों को संबोधित किया।

''तुम्हें हर समय तैयार रहना है, इशारे पर आगे बढ़ना है, कोशिश करो कि वे बैरिकेड तक न पहुँचें। समझे ! वे बैरिकेड तोड़ने की कोशिश करेंगे। तुम्हें जो भी आदेश मिले, उसका सख्ती से पालन करना है। हर कीमत पर कानून-व्यवस्था बनाए रखनी है। समझे !''

प्रकाश बैरिकेड के साथ पहली कतार में खड़ा था। सारी तैयारियाँ हो चुकी थीं। बस प्रदर्शनकारियों का इंतज़ार था। कुछ ही देर में नारे सुनाई देने लगे। आवाज़ धीरे-धीरे साफ़ होती गई।

''इंकलाब-जिंदाबाद।''

''पूंजीवाद मुर्दाबाद।''

''महंगाई रोको।''

देखते ही देखते ही आँखों के सामने झंडों और बैनरों का सैलाब उमड़ पड़ा।

अब उनके हाथों उठाई तख्तियों पर लिखा संदेश साफ़ दिखाई देने लगा।

''दवाओं के दाम कम करो।''

''महँगाई रोको।''

''शिक्षा मुफ़्त करो।''

प्रकाश हर बैनर को ध्यान से पढ़ने लगा। फिर अचानक हैरानी से बोला,

''ओह... यह तो प्रेमवती का पत्र है।''

तभी पीछे से ए.सी.पी. की आवाज़ आई, ''लाठीचार्ज।''

(इस कहानी को कथादेश लघु कहानी पुरस्कार भी मिला है)

मलाला यूसुफ़ज़ई : शिक्षा, साहस और मानवाधिकारों की वैश्विक आवाज़

मलाला यूसुफ़ज़ई विश्व की उन महान विभूतियों में शामिल हैं, जिन्होंने कम उम्र में ही मानवता के लिए असाधारण संघर्ष किया। वे लड़कियों की शिक्षा के अधिकार की सबसे सशक्त अंतरराष्ट्रीय प्रतीक मानी जाती हैं। मलाला न केवल एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं, बल्कि साहस, दृढ़ निश्चय और लोकतांत्रिक मूल्यों की जीवंत मिसाल भी हैं। उनका जीवन यह सिद्ध करता है कि अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए उम्र नहीं, बल्कि विचार और हिम्मत की आवश्यकता होती है।



मलाला यूसुफ़ज़ई का जन्म 12 जुलाई 1997 को पाकिस्तान के ख़ैबर पख़ूतूनख़ूवा प्रांत की स्वात घाटी में हुआ। यह क्षेत्र प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ सामाजिक और राजनीतिक संघर्षों के लिए भी जाना जाता है। उनके पिता ज़ियाउद्दीन यूसुफ़ज़ई स्वयं शिक्षक और शिक्षा-प्रेमी व्यक्ति थे। उन्होंने एक स्कूल की स्थापना की थी और समाज में शिक्षा के महत्व पर निरंतर बोलते थे। पिता के विचारों का गहरा प्रभाव मलाला के व्यक्तित्व पर पड़ा और बचपन से ही वे शिक्षा को अपना अधिकार मानने लगीं।

2007 के बाद जब स्वात घाटी में तालिबान का प्रभाव बढ़ा, तो सबसे पहले लड़कियों की शिक्षा को निशाना बनाया गया। स्कूल बंद कर दिए गए, किताबें जलाई गईं और लड़कियों को घरों में रहने के लिए मजबूर किया गया। इस भयावह वातावरण में भी मलाला ने चुप रहने के बजाय सच बोलने का रास्ता चुना। मात्र 11 वर्ष की आयु में उन्होंने बीबीसी उर्दू के लिए 'गुल मकई' नाम से ब्लॉग लिखना शुरू किया। इन ब्लॉगों में उन्होंने तालिबान के आतंक, शिक्षा पर प्रतिबंध और एक छात्रा के रूप में अपने डर व सपनों को शब्द दिए।

मलाला की पहचान धीरे-धीरे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने लगी। वे खुले मंचों पर लड़कियों की शिक्षा के समर्थन में बोलने लगीं। यह साहस तालिबान को नागवार गुज़रा। 9 अक्टूबर 2012 को जब मलाला स्कूल से बस द्वारा घर लौट रही थीं, तब तालिबान के आतंकियों ने उन पर गोली चला दी। यह हमला केवल मलाला पर नहीं, बल्कि शिक्षा और मानवाधिकारों पर हमला था। गंभीर रूप से घायल मलाला को पहले पाकिस्तान और फिर इंग्लैंड ले जाया गया, जहाँ उनका सफल इलाज हुआ।

इस नृशंस हमले ने पूरी दुनिया को झकझोर दिया। जहाँ तालिबान का उद्देश्य मलाला की आवाज़ को हमेशा के लिए दबाना था, वहीं यह घटना उन्हें और अधिक शक्तिशाली बना गई। स्वस्थ होने के बाद मलाला ने पहले से अधिक दृढ़ संकल्प के साथ शिक्षा की लड़ाई को आगे बढ़ाया। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में भाषण दिया और स्पष्ट कहा कि आतंकवाद गोलियों से विचारों को नहीं मार सकता।

2014 में मलाला यूसुफ़ज़ई को भारतीय बाल अधिकार कार्यकर्ता कैलाश सत्यार्थी के साथ संयुक्त रूप से नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान किया गया। वे यह सम्मान पाने वाली विश्व की सबसे कम उम्र की व्यक्ति बनीं। यह पुरस्कार केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं था, बल्कि दुनिया भर की उन करोड़ों लड़कियों की जीत थी, जिन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता है।

मलाला ने मलाला फंड की स्थापना की, जिसका उद्देश्य दुनिया के गरीब और संघर्षग्रस्त क्षेत्रों में लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देना है। यह संस्था शिक्षा के लिए नीतिगत सुधार, स्कूलों की स्थापना और लड़कियों के अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य करती है। मलाला का मानना है कि शिक्षा ही गरीबी, हिंसा और असमानता को समाप्त करने का सबसे प्रभावी साधन है।

मलाला यूसुफ़ज़ई ने अपनी आत्मकथा ''आई ऐम मलाला'' के माध्यम से अपने संघर्ष को दुनिया के सामने रखा। यह पुस्तक युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी है। आज भी मलाला विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर शांति, समानता और शिक्षा के पक्ष में आवाज़ उठाती हैं।

भविष्य का मार्ग

–कुलजीत डंगर खेड़ा

अगर जीवन जीने की दिशा में दूर दृष्टि न हो, तो व्यक्ति भटक जाता है। तर्कशील सोसाइटी लंबे समय से अपने प्रयासों से परेशान लोगों के जीवन की जटिलताओं और कठिनाइयों को सुलझाने में लगी हुई है। जीवन को नई दिशा देने के ऐसे प्रयास सीख और प्रेरणा का स्रोत भी बनते हैं। बहुत समय पहले, अबोहर तर्कशील इकाई के सदस्य डॉ. रविंदर के मेडिकल स्टोर पर नए वर्ष के कैलेंडर को देखकर दवाई लेने आए एक युवक ने पूछा, ''डॉ. साहब, ये तर्कशील सोसाइटी वाले क्या करते हैं?'' रविंदर ने उन्हें बताया कि सोसाइटी लोगों में वैज्ञानिक 'दृष्टिकोण' को बढ़ावा देने का कार्य करती है ताकि लोग रूढ़िवादी सोच से बाहर निकलकर समाज का एक बेहतर हिस्सा बन सकें। सोसाइटी समाज में फैले अंधविश्वासों, भ्रांतियों को खत्म करने और घरों में होने वाली जादू-टोना, कपड़े कटने, आग लगने की घटनाओं और भूत-प्रेत जैसी तथाकथित घटनाओं का वैज्ञानिक तरीके से समाधान करती है।

युवक ने डॉ. रविंदर की बात बड़े ध्यान से सुनी। उसने बताया कि राजस्थान के एक गाँव में उनके ननिहाल में पिछले काफी समय से अचानक आग लगने की घटनाएँ होती रहती हैं। वो कई तथाकथित बाबाओं और मौलवियों को अपने घर बहुत बार लेकर आए हैं, लेकिन घर में कपड़ों और अन्य वस्तुओं को अभी भी वैसे कि तैसे आग लग रही है। मेरे ननिहाल वाले बहुत सारे बाबाओं को हज़ारों रुपये लुटा चुके हैं, लेकिन कोई भी उनकी समस्या का हल नहीं निकाल सका, वो बेहद परेशान हैं। क्या तर्कशील सोसायटी के लोग इस समस्या का समाधान कर सकते हैं? डॉ. रविंदर ने हाँ में सिर हिलाया और तर्कशील सोसायटी द्वारा इस तरह समस्याओं के समाधान की शर्तें भी बताईं।

युवक ने तुरंत अपने रिश्तेदारों से फ़ोन पर संपर्क किया और उन्हें पूरी कहानी बताई। पूरी कहानी सुनने के बाद, वे इस समस्या से निजात पाने के लिए सहमत हो गए।

अगले रविवार, मैं, सुखदेव मलूकपुरी और डॉ. रविंदर उस युवक के साथ मंडी पदमपुर के पास एक गांव में उस घटनाओं वाले घर पहुँच गए। गाँव के बाहरी इलाके में एक खुला घर था जिसमें एक बड़ा आँगन था। हमने परिवार के सदस्यों के बारे में जानकारी को इकट्ठा करना शुरू किया। परिवार में बुज़ुर्ग माता-पिता, एक बहू और उसका सात साल का बेटा और उस बुजुर्ग की दो लड़कियाँ और एक लड़का था। तीनों की उम्र शादी लायक थी, लेकिन वे अविवाहित थे। बुज़ुर्ग से पता चला कि उसका बड़ा बेटा शादीशुदा है और हत्या के आरोप में जेल में बीस साल की सज़ा काट रहा है। उसने बताया कि यह बहू और लड़का उसके ही हैं। फिर हमने घटनाक्रम के बारे में पूछा तो बुज़ुर्ग ने बताना शुरू किया कि पहले घर में लकड़ियों के ढेर में आग लगी। फिर कपड़ों में और एक दिन अचानक मवेशियों के बाड़े से आग की लपटें निकलने लगीं जिसमें दो भैंसें भी जल गईं। फिर ट्रैक्टर और फिर पता नहीं किस-किस चीज़ को । अब तक घर का बहुत सारा कीमती सामान आग में जलकर राख हो चुका था। अपनी दर्द भरी कहानी सुनाते हुए बुज़ुर्ग रोने लगा। हमने उसे दिलासा दिया और चुप कराया। जैसे-जैसे घटना की जाँच आगे बढ़ी, आग लगने की घटना की कड़ियाँ दोनों लड़कियों से जुड़ने लगीं। बड़ी लड़की, जो लगभग तीस साल की थी। जब हमने उससे बात करना शुरू किया, तो वह काफ़ी घबराई हुई थी। हमने उसे विश्वास में लिया और समझाया कि उसे किसी से डरने की ज़रूरत नहीं है। वह जो भी कहेगी, वे उसे परिवार के बाकी सदस्यों से साझा नहीं करेंगे।

उसकी उम्र को देखते हुए हमने उसकी शादी के बारे में बात करनी शुरू की और पूछा कि उसकी अभी तक शादी क्यों नहीं हुई है। यह सुनकर उसकी आँखें भर आईं और वह कुछ देर चुप रही और बोली, ''बस यही तो सारा बखेड़ा है। परिवार में किसी को हमारी दोनों बहनों की जन्दिगी की परवाह नहीं। पूरा परिवार दिन-रात खेतों में लगा रहता है। न परिवार की चिंता, न गुज़र रहे वक़्त की चिंता।

पड़ोसियों और रिश्तेदारों से कोई संपर्क नहीं। मैं बड़ी हूँ और मेरी छोटी बहन सत्ताईस साल की है। परिवार में कभी भी हमारी शादी की बात ही नहीं होती। घर में कोई भी शादी की बात शुरू नहीं करता। न ही रिश्तेदारों से कोई सलाह-

मशविरा होता है। यह सच है कि काम के बिना रोज़ी-रोटी नहीं चलती, लेकिन सिर्फ़ काम ही सब कुछ नहीं है। माता-पिता को भी पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ निभानी होती हैं। शायद हमारे माता-पिता के हिस्से सिर्फ़ खेतों का काम है,

ज़िम्मेदारियाँ नहीं। हम इस मुद्दे पर कुछ बोल नहीं पाती, बस अपनी बेबसी पर रो सकतीं हैं।

हम ज़िंदगी से छिनती शांति को चुपचाप देखने को मजबूर हैं।

बातचीत के ज़रिए हम दोनों बहनों को यह मनाने में कामयाब हो गए कि वे दोनों अपने गुस्से को शांत करने के लिए जाने-अनजाने में आग लगाने जैसी घटनाएँ करती थीं। हमने उन्हें समझाया कि अपनी बात मनवाने का ये तरीका सही नहीं है। इससे परिवार को बहुत नुकसान हुआ है, और मानसिक पीड़ा तो अलग से है ही। बड़ी लड़की कहने लगी, ''जी, आपकी बात अपनी जगह सही है, लेकिन हमारी मन:स्थिति के बारे में किसी ने नहीं सोचा?'' हमने उन्हें भरोसा दिलाया कि हम परिवार से अप्रत्यक्ष रूप से शादी की बात करेंगे और उन्हें शादी के लिए मना लेंगे। लेकिन शर्त यह है कि इसके बाद तुम कभी भी आग नहीं लगाओगे। वे दोनों घर में आग न लगाने पर राजी हो गए।

जब हमने बुज़ुर्ग माता-पिता से लड़कियों की शादी की बात की, तो उनका जवाब सुनकर हमें बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा कि जब हमारा बड़ा बेटा जेल से बाहर आएगा, तब हम तीनों बच्चों की शादी कर देंगे। हमने तर्क दिया कि उसकी जेल की सज़ा अभी कई साल बाकी है। तब तक तो इनकी शादी की उम्र गुजर जाएगी। हमने उन्हें बताया कि जेल में बंद व्यक्ति को अपने भाई-बहन की शादी के लिए पैरोल यानी कुछ दिनों की छुट्टी मिल जाती है।

वे हमारे बताए भविष्य के मार्ग को जानकर बहुत खुश हुए और अपनी दोनों बेटियों की जल्द ही शादी करने के लिए राज़ी हो गए। शायद उन्हें अपनी नासमझी का एहसास हो गया था। कुछ समय बाद, दोनों लड़कियों और लड़के की शादी हो गई। घर में अचानक आग लगने की घटनाओं का सिलसिला हमेशा के लिए थम गया।

97819-25566

***

बड़ी-बड़ी गाड़ियां

बड़ी-बड़ी गाड़ियां
बड़े-बड़े बंगले
अंगरक्षकों संग
घूमते विदेश
सुंदर परिवश
अपनाकर बाबा का भेष
देते शिक्षा
मोक्ष की
मुक्ति की
नाम जपने की
स्वर्ग के सपने की
सब अय्याश हैं
आपका धन और परिश्रम
उनका हर्षोल्लास है।
आपके लिए
तप-जप-सयंम का संदेश
माया से दूरी
आपकी नेक कमाई
इनके आश्रम चमकाती
भीड़ की भीड़ बढ़ती जाती
बना देते इंसान का पाषाण
ये शोषण सबसे आसान
कोरी झूठ
एक नंबर की लूट
पढ़िए कबीर, रैदास,पेरियार, अंबेडकर।
पढ़िए बुद्ध
बनिए प्रबुद्ध
न कोई आत्मा, न परमात्मा, न मोक्ष, न मुक्ति
सब है लूट की युक्ति
न स्वर्ग, न नरक
बस चेतना का है फर्क

- डॉ फूल सिंह

कोई नारी डायन/टोनही नहीं

- डॉ. दिनेश मिश्र

अंधविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ अभियान से जुड़ें

डायन या टोनही की धारणा हमारे देश में प्रमुख अंधविश्वासों में से एक है जिसमें किसी महिला को डायन (टोनही) घोषित कर दिया जाता है तथा उस पर जादू-टोना कर बीमारी फैलाने, गाँव में विपत्तियाँ लाने का आरोप लगाकर उसे लांछित किया जाता है। डायन (टोनही) के रूप में आरोपित इन महिलाओं को न केवल सार्वजनिक रूप से बेइज्जत किया जाता है, बल्कि उन्हें शारीरिक प्रताडऩा दी जाती है तथा समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। ऐसे मामलों में शारीरिक प्रताडना इतनी अधिक होती है कि वे महिनों शारीरिक जख्मों का दर्द लिये कराहती रहती है तथा गाँव में उन्हें उपचार मिलना भी संभव नहीं होता। सार्वजनिक रूप से बेइज्जती व अपमान के जख्म तो आजीवन दुख देते हैं। इन स्थानों पर प्रभावशाली समूह का दबाव इतना अधिक रहता है कि प्रताडऩा की घटनाओं की जानकारी गाँव के बाहर नहीं जा पाती तथा प्रताडि़त महिला व उसका परिवार नारकीय जीवन जीता रहता है, ऐसे मामलों में कई बार महिलाएँ आत्महत्या तक कर लेती है।

डायन (टोनही) के संदेह में प्रताडऩा के मामले में गाँवों के जनप्रतिनिधि व शासकीय कर्मचारी भी सामने आने का साहस नहीं कर पाते, ऐसे अधिकांश मामलों में जो जानकारी ही गाँवों से बाहर नहीं आ पाती, जिससे कथित बैगाओं का राज कायम हो जाता है। जो गाँव में सभी विपदाओं का कारण जादू-टोना व डायन (टोनही) बताकर, टोनही पकड़वाने, चिन्हित करने, गाँव बाँधने के नाम पर न केवल मनमानी राशि वसूलते हैं बल्कि किसी भी गरीब बेकसूर महिला को डायन (टोनही) घोषित कर हमेशा अभिशप्त जीवन जीने व प्रताडऩा सहने के लिये छोड़ देते हैं, इन बैगाओं द्वारा महिला को डायन (टोनही) न होने का प्रमाण देने के लिये ऐसी परीक्षाएँ ली जाती है जो किसी भी महिलाओं के लिये संभव नहीं है। ऐसे मामलों में खुद को निर्दोष साबित करना बहुत मुश्किल हो जाता है वह भी जब पूरा गाँव ही अंधविश्वास के कारण विरोध में खड़ा हो, जबकि वास्तविकता यह है कि डायन (टोनही) के रूप में घोषित की जाने वाली महिला में इतनी ताकत नहीं होती है कि आत्मरक्षा ही कर सके, दूसरों के नुकसान करना तो संभव ही नहीं है।

हम पिछले 30 वर्षों से समाज में फैले अंधविश्वासों एवं सामाजिक कुरीतियों के निर्मूलन के लिए अभियान चला रहे हैं जिसका एक प्रमुख हिस्सा डायन (टोनही) की धारणा का निर्मूलन भी है, इसलिये व्याख्यान, चमत्कारिक घटनाओं की वैज्ञानिक धारणा, विभिन्न ग्रामों में दौरा कर समझाना, अंधविश्वास का पर्याय बनने वाले मामलों की जाँच व सत्य की जानकारी, गोष्ठियाँ, बैठकें की जाती है। वहीं सामाजिक बहिष्कार जैसी कुरीति के भी अनेक मामले लगातार सामने आते रहते हैं,जिससे हजारों परिवार परेशान है उन्हें समाज में वापस लौटाने के लिए भी निरंतर प्रयास किया जाता है.

हमें कई बार विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न स्थानों के बुद्धिजीवी साथियों, छात्रों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, समाज-सुधार के संबंध में विचार पढऩे को मिलते हैं, मेरा यह मानना है कि अंधविश्वासों एवं सामाजिक कुरीतियों का समूल निर्मूलन किसी एक व्यक्ति, एक संगठन या प्रशासन के लिये संभव नहीं है। अलग-अलग स्थानों पर निवास व कार्य कर रहे सभी व्यक्ति यदि इस कार्य के लिये अपना थोड़ा समय व बहुमूल्य विचार हमें प्रदान करें, व सहयोग से कार्य करें तो ऐसा कोई भी कारण नहीं है कि इन कुरीतियों व अंधविश्वासों का निर्मूलन न किया जा सके, नये वर्ष में सर्व सहयोग से यह काम बेहतर ढंग से किया जा सकता है। इच्छुक स्वयंसेवी व्यक्ति व उत्साही कार्यकर्ता मुझसे इस पते पर सम्पर्क कर सकते हैं।

अध्यक्ष, अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति, 98274-00859

कानून

—फ्रांज काफ्का

कानून के द्वार पर पहरेदार खड़ा है। उस देश का एक आम आदमी उसके पास आता है और कानून के समक्ष पेश होने की अनुमति मांगता है, लेकिन वह उसे अंदर नहीं जाने देता।

आम आदमी सोचने लगता है। फिर वह पूछता है, ''क्या कुछ समय बाद मेरी बातें सुनी जाएंगी?''

''देखते हैं,'' कानून के रक्षक अधिकारी ने कहा, ''लेकिन अभी नहीं।''

कानून का दरवाजा आज भी हमेशा की तरह खुला है। आदमी अंदर झांकता है।

उसे ऐसा करते देख पहरेदार उसे डांटने लगा और बोला, ''अगर मेरे मना करने के बाद भी तुम अंदर जाने के लिए इतने बेताब हो, तो फिर कोशिश करके देख क्यों नहीं लेते , पर याद रखना, मैं बहुत सख्त हूँ, भले ही मैं बाकी पहरेदारों से छोटा हूँ। यहाँ हर कमरे से दूसरे कमरे में जाने के लिए हर दरवाजे पर एक पहरेदार खड़ा रहता है, और हर पहरेदार दूसरे से ज्यादा ताकतवर है। कई पहरेदारों के सामने होने की तै मेरे में हिम्मत भी नहीं है।''

उस व्यक्ति ने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि कानून तक पहुँचने में उसे इतनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। उसका मानना था कि हर व्यक्ति को हर समय कानून तक पहुँच का अधिकार होना चाहिए। फिर, कोट पहने हुए पहरेदार की नुकीली नाक और लंबी, बिखरी हुई काली दाढ़ी को ध्यान से देखने के बाद, उसने अनुमति मिलने तक बाहर इंतजार करने का फैसला किया। पहरेदार ने उसे दरवाजे के एक तरफ एक स्टूल पर बैठने दिया। वह वहाँ कई दिनों तक बैठा रहा। यहाँ तक कि कई साल भी बीत गए। इस बीच, उसने बार-बार अंदर जाने की कोशिश की। पहरेदार उससे उसके घर और कई अन्य चीजों के बारे में उदासीन भाव से पूछता रहा, और हर बार यही कहकर बात खत्म करता रहा कि उसे अभी अंदर नहीं जाने दिया जा सकता।

वह व्यक्ति यात्रा के लिए इकट्ठा की गई अपनी सारी संपत्ति और अपने पास मौजूद हर चीज पहरेदार को खुश करने में खर्च कर देता है।

पहरेदार उससे सब कुछ ऐसे स्वीकार करता रहता है मानो कोई उस पर एहसान कर रहा हो।

वर्षों तक आशा भरी निगाहों से उस पहरेदार को देखते-देखते वह अन्य पहरेदारों को भूल जाता है। उसे केवल वही पहरेदार कानून के रास्ते में एक बाधा लगता है। जवानी में वह अपनी 'किस्मत' को पुरज़ोर कोसता है और बुढ़ापे में धीमी आवाज़ में। वह एक बच्चे जैसा हो जाता है। वर्षों तक पहरेदार पर कड़ी नज़र रखते हुए, उसे उसके कॉलर में छिपी हुई झींगुरों का पता चल जाता है। वह झींगुरों की भी चापलूसी करता है ताकि वे पहरेदार का मन उसके पक्ष में बदल दें। अंततः, उसकी आँखें बदलने लगती हैं। वह नहीं समझ पाता कि दुनिया सचमुच पहले से ज़्यादा अँधेरी हो गई है या उसकी आँखें उसे धोखा दे रही हैं, लेकिन वह अब भी चारों ओर अँधेरे को चीरते हुए, कानून के द्वार से प्रकाश के घेरे को महसूस कर सकता है।

उसे मृत्यु निकट आती हुई महसूस होने लगती है। मरने से पहले वह पहरेदार से एक ऐसा सवाल पूछना चाहता है जो उसे कई सालों से परेशान कर रहा है। वह पहरेदार को पास आने का इशारा करता है क्योंकि बैठने से उसका शरीर इतना अकड़ गया है कि चाहकर भी उठ नहीं सकता। पहरेदार को उसकी ओर झुकना पड़ता है क्योंकि कद में अंतर के कारण वह बौना सा दिखता है।

''अब तुम क्या पूछना चाहते हो?'' पहरेदार पूछता है, ''क्या तुम्हारी इच्छा का कोई अंत भी है?''

''कानून सबके लिए है,'' आदमी कहता है, ''लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि इतने सालों में किसी और ने यहां दरवाजा क्यों नहीं खटखटाया।''

पहरेदार को यह समझने में देर नहीं लगी कि यह आदमी अपने आखिरी पलों की गिनती कर रहा है। उसने लगभग बहरे कर देने वाली आवाज़ में चिल्लाकर कहा, ''यहाँ किसी और के आने का कोई मतलब नहीं था, क्योंकि कानून का यह दरवाज़ा सिर्फ़ तुम्हारे लिए खोला गया था, और अब मैं इसे बंद करने जा रहा हूँ।''

एपस्टीन के अपराधों का पर्दाफाश करके दुनिया को हिला देने वाली पत्रकार-जूली के ब्राउन!

-हरिंदर सिंह चहल

आज दुनिया में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो एपस्टीन फाइलों के बारे में न जानता हो! पूरी दुनिया जानती है कि कैसे एक धनी अरबपति ने वर्षों तक नाबालिग लड़कियों का शोषण किया!

कैसे प्रभावशाली लोगों ने उसको बचाया!

लेकिन आखिर यह बात सामने कैसे आई!

एक खतरनाक सच्चाई जिसे सभी शक्तिशाली लोग छुपाना चाहते थे! इसे किसने उजागर किया! किसने पूरी दुनिया की शक्ति के आगे घुटने टेके, किसने इस सनसनीखेज सच्चाई को सामने लाया! एक ईमानदार और साहसी महिला पत्रकार, एक साधारण महिला जो एक साधारण समाचार कक्ष में बैठी थी!

न तो वह किसी समाचार संगठन का कोई खास चेहरा थीं और न ही उनका कोई प्रभावशाली पृष्ठभूमि थी! वह एक साधारण परिवार की सिंगल मदर थी! एक जिम्मेदार माँ जो अपनी 15 वर्षीय बेटी का पालन-पोषण कर रही थीं! अमेरिका में, वह एक स्थानीय समाचार पत्र के लिए खोजी पत्रकार थी!

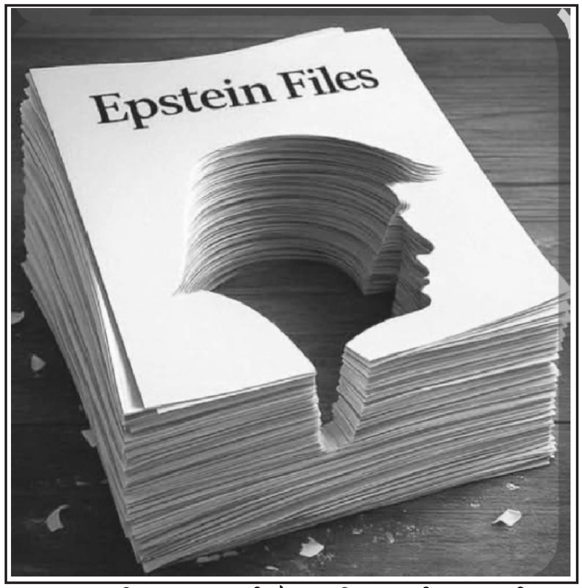
उनका नाम जूली के ब्राउन था!

वह मियामी के एक छोटे से न्यूज़ रूम में काम करती थी, और वेतन बहुत कम था। पिछले पाँच सालों से उसकी तनख्वाह नहीं बढ़ी थी और गुज़ारा करना मुश्किल था। उसके सहकर्मी उसे चिढ़ाते हुए कहते थे, ''ऐसी खबरें ढूंढने वाली रिपोर्टर जो अब काम की नहीं हैं।''

उनका करियर भी खतरे में पड़ गया था। उनके संपादक अक्सर उनसे कहते थे कि खोजी पत्रकारिता अब जोखिम भरी है। उन्हें बताया गया था कि जो लोग शक्तिशाली लोगों से टकरातें हैं, वे हमेशा हारते हैं। एक बेटी की माँ होने के नाते, उन्हें भी शक्तिशाली लोगों से टक्कर लेने से डर लगता था।

एक बार भ्रष्ट पार्षद के बारे में कहानी लिखने के कारण उनकी कार के टायर काट दिए गए और उनकी बेटी का पीछा किया गया। उनकी कहानी को एक बार दबा दिया गया था। उन्हें कई बार धमकियाँ भी मिलीं।

उसकी बेटी भी डरी हुई थी। 42 साल की उम्र में, उसे



लग रहा था कि वह हार रही है। इसलिए जूली सावधानी बरत रही थी। छोटे-मोटे अपराध, स्थानीय घोटाले उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं थे।

लेकिन सावधानी बरतने से न तो डूबता हुआ करियर बच सकता था और न ही बिलों का भुगतान हो सकता था।

फिर एक दिन सब कुछ बदल गया। पुरानी फाइलों की सफाई करते समय जूली को एक पुरानी पुलिस रिपोर्ट मिली। यह रिपोर्ट 2005 की थी। इसमें एक नाम लिखा था, वर्जीनिया रॉबर्ट्स, एक नाबालिग लड़की का और दूसरा नाम जेफरी एपस्टीन का। इसमें यह भी लिखा था, ''नाबालिग मामला खारिज'', यानी उस नाबालिग लड़की का मामला खारिज कर दिया गया है। फाइल बंद कर दी गई है। उस समय जूली को पता ही नहीं था कि वह किस चीज से टक्कर ले रही है। उसे यह भी नहीं पता था कि यह कोई मामूली खबर नहीं, बल्कि उसके जीवन की सबसे खतरनाक लड़ाई है। उसे यह भी नहीं पता था कि एक आम से न्यूज़ रूम में शुरू हुई यह लड़ाई पूरी दुनिया को हिला देगी। ऐसी सैकड़ों नाबालिग लड़कियां थीं जिनके साथ यह सब हो रहा था और दुनिया ने आंखें मूंद ली थीं। क्योंकि दुनिया के सबसे ताकतवर लोग उस गंदे खेल में शामिल थे। किसी ने कुछ नहीं कहा क्योंकि वह इतना ताकतवर

आदमी था कि अमेरिकी राष्ट्रपति से लेकर ब्रिटिश राजकुमार तक, हर कोई उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा था।

लेकिन जो काम महान कानूनी विशेषज्ञों की फौज भी नहीं कर पाई वो कर दिखाया एक साधारण महिला ने। उस फाइल को ढूंढने के बाद, जूली ने एपस्टीन के बारे में पढ़ना शुरू किया। उसने बहुत लगन से पढ़ना शुरू किया।

जब जूली ने इस मुद्दे की छानबीन की, तो वह हैरान रह गई। उसे बिल क्लिंटन, डोनाल्ड ट्रम्प, प्रिंस एंड्रयू और बड़े-बड़े वैज्ञानिकों के साथ उसकी तस्वीरें मिलीं। उसके (एपस्टीन) पास अपना द्वीप, निजी जेट और आलीशान बंगले थे। जूली को एक 53 पन्नों की रिपोर्ट मिली जिसमें नाबालिग लड़कियों ने उस पर आरोप लगाए थे, लेकिन सब कुछ दबा दिया गया था। मामले बंद कर दिए गए थे। उसने उसकी दौलत, निजी जेट, द्वीप और ताकतवर दोस्तों के बारे में पढ़ा और यह भी जाना कि कैसे एक गणित का शिक्षक इतना ताकतवर बन गया। उसने यह भी देखा कि एपस्टीन के खिलाफ दर्जनों शिकायतें दर्ज की गई थीं।

पिछले मामले को याद करते हुए, जूली ने इस कहानी को छोड़ने के बारे में भी सोचा, लेकिन उसे पूरी रात नींद नहीं आई। उन लड़कियों के लिए, वह सोचती रही कि वर्जीनिया के साथ आखिर हुआ क्या था। जूली ने चुपके से रात में वर्जीनिया रोबोट्स के बारे में खोजबीन शुरू कर दी। दोपहर के भोजन के समय और बेटी के सोने के बाद घर आकर, वह सिर्फ खोजबीन करती रहती। आखिरकार, उसने वर्जीनिया को एक ईमेल भेजा। उसने लिखा कि मुझे तुम पर भरोसा है। तीन दिन तक कोई जवाब नहीं आया। लेकिन आखिरकार, चौथी रात को फोन की घंटी बजी, कॉल ऑस्ट्रेलिया से था। वर्जीनिया की आवाज़ कांप रही थी। उसने बताया कि कैसे 15 साल की उम्र में उसे बहकाया गया, कैसे उसे अमीर आदमियों के लिए तैयार किया गया, कैसे पैसे की ज़रूरत उसकी कमजोरी बन गई। वर्जीनिया ने कांपती आवाज़ में पूछा कि क्या तुम सच में उसके खिलाफ लड़ोगी। क्योंकि हर बार जब मैंने कोशिश की, तो मैं सिर्फ बर्बाद ही हुई।

वर्जीनिया ने बताया कि कैसे 15 साल की उम्र में उसे एक ब्रिटिश महिला, जिलियन मैक्सवेल ने बहकाया था, जिसने उसे यह वादा करके फुसलाया था कि एक अमीर आदमी को एक मालिश करने वाली की जरूरत है और वह उसे 200 डॉलर प्रति घंटे का भुगतान करेगा।

वर्जीनिया गरीब थी और उसे पैसों की ज़रूरत थी, इसलिए वह मान गई। लेकिन वहाँ पहुँचते ही उसकी ज़िंदगी नरक बन गई। उसे प्राइवेट जेट में बिठाकर दुनिया भर के ताकतवर लोगों के पास भेजा जाने लगा। वर्जीनिया ने जूली को यह भी बताया कि एपस्टीन के खिलाफ बोलने वाले हर व्यक्ति को बर्बाद कर दिया जाता था। अब जूली समझ गई कि यह सिर्फ़ एक कहानी नहीं, बल्कि एक व्यवस्था थी। एक ऐसी व्यवस्था जो अमीरों की रक्षा करती है और कमज़ोरों को कुचलकर बर्बाद कर देती है। जूली ने इस मामले को लड़ने का फैसला किया । उसने कोटली वाइल्ड और मिशेल निकिता जैसी अन्य पीड़ित लड़कियों को भी ढूँढा। हर लड़की की कहानी एक जैसी थी। गरीबी का फ़ायदा उठाकर, उन्हें पैसों का लालच देकर, फिर उनका यौन शोषण करना। एपस्टीन इतना चालाक था कि वह इन लड़कियों को और लड़कियों को लाने के लिए पैसे देता था। ताकि उनमें शर्म और अपराधबोध पैदा हो। उसने दूसरों को भी इस दलदल में धकेल दिया। जूली ने ऐसी ही अन्य पीड़ितों की तलाश शुरू की। उनमें 14, 15 और 16 साल की नाबालिग लड़कियाँ भी शामिल थीं।

आज वे सभी वयस्क महिलाएं हैं। वे उम्रदराज हैं, लेकिन अंदर से अभी भी टूटी हुई हैं। हर इंटरव्यू जूली को अंदर तक झकझोर देता था। अब जूली दिन में 18 घंटे काम करने लगी। वह सिर्फ चार घंटे सोती थी। उसने एपस्टीन के निजी जेट लोलिता एक्सप्रेस के रिकॉर्ड हासिल कर लिए।

2008 में, उसे एक ऐसे शानदार सौदे के बारे में पता चला। एपस्टीन पर यौन तस्करी का भी आरोप था। लेकिन उसके वकीलों ने सरकारी अभियोजक (अलेक्जेंडर अकास्टा) के साथ मिलकर मामला सुलझा लिया था। उसे केवल 13 महीने की हल्की सजा मिली और वह हफ्ते में छह दिन जेल से बाहर जाकर अपने दफ्तर में काम कर सकता था। कितनी नरम सजा! जब जूली ने यह सब अपने संपादक को बताया, तो उसने कहा कि एपस्टीन हमें अदालत में बर्बाद कर देगा। लेकिन जूली ने हर तथ्य के लिए तीन सबूत इकट्ठा किए क्योंकि उसके संपादक ने कहा था कि अगर यह कहानी प्रकाशित करनी है, तो हर तथ्य के लिए तीन स्रोत जुटाने होंगे। अब जब कहानी छपने के लिए तैयार थी, तो धमकियां शुरू हो गईं। एपस्टीन के लोगों ने जूली को धमकाना शुरू कर दिया।

यहां तक कि जूली की बेटी का भी फिर से पीछा किया गया। जूली के खिलाफ, यानी उसकी मां के खिलाफ, उसकी बेटी के स्कूल में झूठी खबरें भेजी गईं कि वह अपनी बेटी की देखभाल नहीं कर रही है। कानूनी फर्मों ने मुकदमा करने की धमकी दी। जूली के संपादक को भी बड़ी कानूनी फर्मों से धमकियां मिलने लगीं। लेकिन इन सबके बावजूद, जूली डरी नहीं क्योंकि वह बहादुर थी। उसे पता था कि अगर वह अब रुक गई, तो राक्षस फिर से जीत जाएगा। आखिरकार, एक पुराने जासूस ने जूली को एक गुप्त फ्लैश ड्राइव दी जिसमें सारे सबूत तस्वीरों और वीडियो के रूप में मौजूद थे। जब उसके अखबार ने कहानी को रोकने की कोशिश की, तो जूली ने यह भी साफ कर दिया कि वह अपनी कहानी किसी बड़े अखबार को देगी।

28 नवंबर, 2018 को मियामी हेराल्ड ने ''न्याय का विकृतीकरण'' शीर्षक से एक बड़ी रिपोर्ट प्रकाशित की, जो एक धमाके के समान थी। पूरी दुनिया में हलचल मच गई। एफबीआई को फिर से जांच करनी पड़ी। एलेक्जेंडर अकोस्टा (वह अभियोजक जिसने एपस्टीन का बचाव किया था) को इस्तीफा देना पड़ा।

6 जुलाई 2019 को, एपस्टीन को उनके निजी जेट से उतरते ही गिरफ्तार कर लिया गया। खबर पढ़ते ही जूली की आंखों में आंसू आ गए।

चौदह साल बाद न्याय की उम्मीद जगी थी। लेकिन 10 अगस्त 2019 को खबर आई कि एपस्टीन की जेल में मौत हो गई है। क्या उसने आत्महत्या की या उसकी जान ली गई?

यह एक रहस्य ही बना रहा। क्योंकि जिस बैरक में उसे बंद किया गया था, वह पूरी तरह से रहस्यमय था। उसके कैमरे भी टूटे हुए थे। यहाँ तक कि गार्ड भी सो रहे थे। सब कुछ बेहद संदिग्ध था।

लेकिन कोई जांच नहीं हुई? पीड़ित लड़कियों को लगा जैसे वे फिर हार गईं। क्योंकि कोई मुकदमा नहीं चला। लेकिन जूली ने कहा कि कहानी अभी खत्म नहीं हुई है। उसने गिलियन मैक्सवेल पर कार्रवाई की, जिसने एपस्टीन को सब कुछ मुहैया कराया था। एक बड़ा गिरोह था। इन सबके बीच, गिलियन को भी 2020 में गिरफ्तार किया गया और 2021 में उसे 20 साल की सजा सुनाई गई।

जूली के ब्राउन ने तो अपनी बहादुरी के लिए पुलित्जर पुरस्कार (ब्रेकिंग न्यूज़ रिपोर्टिंग) भी जीता। जूली आज भी कहती हैं कि यह जीत उनकी नहीं बल्कि उन लड़कियों की है, उन लड़कियों की जिन्होंने खुलकर बोलने का साहस दिखाया।

इससे हमें यही सीख मिलती है कि सच्चाई की आवाज़ को कभी चुप नहीं कराया जा सकता। जूली ने साबित कर दिया कि जब एक महिला डरना छोड़ देती है, तो बड़े से बड़ा शैतान भी बेनकाब हो सकता है।

हम जूली के ब्राउन जैसी पत्रकारों को सलाम करते हैं। जो डरती नहीं, जो दबती नहीं, जो बिकती नहीं।

मैं घास हूँ

–अवतार पाश

मैं आपके हर किए–धरे पर
उग आऊंगा
बम फेंक दो चाहे विश्वविद्यालय पर
बना दो होस्टल को मलबे का ढेर
सुहागा फिरा दो
भले ही हमारी झोपड़ियों पर
मुझे क्या करोगे
मैं तो घास हूँ
हर चीज पर उग आऊंगा
बंगे को ढेर कर दो
संगरूर मिटा डालो
धूल में मिला दो लुधियाना जिला
मेरी हरियाली अपना काम करेगी...
दो साल दस साल बाद
सवारियाँ फिर किसी कंडक्टर से पूछेंगी
यह कौन–सी जगह है
मुझे बरनाला उतार देना
जहाँ हरे घास का जंगल है
मैं घास हूँ, मैं अपना काम करूगा
मैं आपके हर किए–धरे पर उग आऊंगा।

(क्रांतिकारी कवि पाश की साम्प्रदायिक लोगों द्वारा 23 मार्च 1988 को हत्या की गई)

वास्तु शास्त्र की वास्तविकता

–संजीव खुदशाह

विगत 40 वर्षों में वास्तु के प्रति लोगों में जिज्ञासा बढ़ी है। वास्तु के बारे में लोगों के अलग-अलग अभिमत रहे हैं। कुछ लोग इसे प्राचीन शास्त्र मान बैठते हैं तो कुछ लोग कहते हैं कि यह पूरी तरह से निराधार और अवैज्ञानिक है। जो भी हो वास्तु शास्त्र हमेशा विवाद में रहा है। मेरे एक आर्किटेक्ट मित्र नाम ना छापने की शर्त में कहते हैं कि जब पूरे मकान का नक्शा बना दिया जाता है और उसे सिविल और आर्किटेक्ट के नियमों में फिट कर दिया जाता है। उसके बाद मकान मालिक को कोई दसवीं पढ़ा हुआ तथाकथित वास्तु शास्त्री कोई सलाह देता है। तो ऐसा लगता है मानो खूबसूरत रंगोली में किसी ने पानी फेर दिया हो। आर्किटेक्ट और वास्तु के मेल का मतलब होता है विज्ञान और अंधविश्वरास का मेल।

वास्तु पुरुष की कहानी : वास्तु शास्त्र में वास्तु पुरुष की एक कथा है। देवताओं और असुरों का युद्ध में असुरों की ओर से अंधकासुर और देवताओं की ओर से भगवान शिव युद्ध में दोनों के पसीने की कुछ बूंदें जब भूमि पर गिरीं तो एक अत्यंत बलशाली और विराट पुरुष की उत्पति हुई। उस विराट पुरुष से देवता और असुर दोनों ही भयभीत हो गये। देवताओं को लगा कि यह असुरों की ओर से कोई पुरुष है जबकि असुरों को लगा कि यह देवताओं की तरफ से कोई नया देवता प्रकट हो गया है। इस विस्मय के कारण युद्ध थम गया और अंत में दोनों उस विराट पुरुष को लेकर ब्रह्मा जी के पास गए। ब्रह्मा जी ने उस पुरुष को अपने मानसिक पुत्र की संज्ञा दी और उनसे कहा कि इसका नाम वास्तु पुरुष होगा। वास्तु पुरुष वहां पर एक बिशेष मुद्रा में शयन के लिए लेट गए और उनके कुछ हिस्सों पर देवताओं ने तथा कुछ हिस्सों पर असुरों ने अपना वास कर लिया। ब्रह्माजी ने यह भी आदेश दिया कि जो कोई भी भवन नगर तालाब मंदिर आदि का निर्माण करते समय बास्तु पुरुष को ध्यान में रखकर काम नहीं करेगा तो असुर लोग उसका भक्षण कर लेंगे। जो व्यक्ति वास्तु वास्तु पुरुष का ध्यान रख कर कार्य करेगा देवता उसके कार्य में सहायक होंगे। इस प्रकार वास्तु पुरुष की रचना हुई।

आखिर यह वास्तु शास्त्र है क्या ?

ऐसा माना जाता है कि वास्तु शब्द के वास्तु शब्द से वास्तु का निर्माण हुआ है। वास्तु शास्त्र पर आधारित कोई एक प्राचीन किताब नहीं है। लेकिन बहुत सारी प्राचीन किताबों से जमीन के चयन से लेकर मकान बनाने तक का संदर्भ खोज कर वास्तु शास्त्र की कई किताबें अभी लिखी जा चुकी हैं। इन किताबों का संदर्भ या कहें कि सोर्स समरांगण सूत्र, मनुस्मृति, वास्तु रत्नाकर, शिल्प शास्त्र,, राजबल्लभमंडलम, बृहद वास्तु माला, वास्तु सार संग्रह गृह वास्तु प्रदीप, मत्स्य पुराण आदि हैं।

वास्तु शास्त्र का क्या उद्देश्य है ?

वास्तु शास्त्री यह दावा करते रहे हैं कि यदि कोई जजमान वास्तु के हिसाब से मकान, दुकान, कारखाने व मंदिर बनाता है तो उसके यह स्थान खुशहाली शांति में उत्तरोतर वृद्धि होगी। किसी प्रकार की जन धन यश की हानि नहीं होगी। यही वास्तु का उद्देश्य है। किसी जजमान (जो वास्तु के हिसाब से निर्माण कर सकता है) की जन धन एवं यश की गारंटी सुनिश्चत करना वास्तु का लक्ष्य है। इसमें यह दावा करते हैं कि तमाम प्रकार की विपत्ति बीमारी, पारिवारिक कलह वास्तु के हिसाब से बनाए हुए घर में वास्तु के हिस्से बनाए हुए घर में नहीं होती है। वास्तु के मुख्य स्तंभ। पौराणिक शास्त्रों के अध्ययन के बाद यह ज्ञात होता है कि वास्तु अपनी बात को कहने के लिए तीन आधारों का प्रयोग किया जाता है। इन आधारों या स्तंभों के बिना वास्तु की कल्पना नहीं की जा सकती :

1. जाति 2. दिशा 3. दिवस

1. जाति : यह वास्तु शास्त्र का सबसे प्रमुख नियम आधार है। जाति के आधारपर वास्तु की सलाह तय होती है। चाहे बात भूमि के चयन की हो या निर्माण सामग्री की, हर पल वास्तु सलाह जाति आधार पर अलग-अलग तरह की जाती है। यदि आप ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र हैं तो सभी के लिए वास्तु के अलग-अलग नियम एवं सलाह है।

लम्बाई, चौड़ाई व जाति ब्राह्मणों के घरों की लंबाई, चौडाई से 10 अंश अधिक हो, क्षत्रिय के घर की लंबाई चौड़ाई से 8 अंश अधिक, वैश्य की 6 अंश और शुद्र की 4 अंश अधिक हो:

दशंशयुक्तो विस्तारा-आयामो विषवेश्मनामु अष्टषट्चतुरंशाढ्य क्षत्रादित्रियवेश्मनाम्

जाति के अनुसार घर की सीमा : वास्तुशास्त्र कहता है कि शूद्रों के लिए साढ़े 3 तल वाला भवन कल्याणकारी होता है। इस से बढ़कर यदि शूद्र का भवनहोगा तोउस के कुल का नाश हो जाएगा।

साधात्रिभूमि शूद्राणा देश्म कुयांदृ विभूतय अतोअधिकतरं यत् स्वात् तत्करोति कुलक्षण्म्

दिशा : वास्तु शास्त्र नियम का दूसरा आधार है दिशा। यह एक प्रमुख आधार हैं उत्तर और पूर्व दिशा के मकान शुभ माने जाते हैं। वहीं दक्षिण मुख वाले मकान अशुभ माने जाते हैं। लेकिन विश्वकम्रा वास्तुशास्त्र में 16 दिशाओं का वर्णन है। आठ दिशाएं इस प्रकार है- उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम, ईशान, आग्नेय, नेतृत्व, वायव्य, जाति के अनुसार कौन व्यक्ति को किसे दशा में से फल मिलेगा, चेक किया जाता है।

3. दिवस : दिवस जानें तिथि का वास्तु में बड़ा महत्व है। यह एक आधार के रूप में काम करता है। इसके अंतर्गत पूर्णिमा, अमावस्या, वार का विचार किया जाता हैं खासतौर पर गृह निर्माण करते समय गृह प्रवेश करते समय तिथि और दिवस का वास्तव में एक महत्वपूर्ण स्थान है। गृह वास्तु पर ग्रंथ मत्स्य पुराण में कुछ मास पक्ष व वार आदि को गृह निर्माण के लिए शुभ तथा कुछ को अशुभ बताया गया है।....

ज्यादातर वास्तु शास्त्री जिनमें कुछ आर्किटेक्ट भी होते हैं, वास्तु को विज्ञान के रूप में प्रचारित करते हैं। लेकिन वे भूल जाते हैं कि विज्ञान का एक नियम होता है। विज्ञान की कसौटी पर कसने के लिए उसका परीक्षण, प्रयोग, प्रवृत्ति, अनुमान, डाटा संग्रहण करना होता है। यदि हर बार एक ही परिणाम आए तो उसे विज्ञान कहेंगे नहीं तो तुक्का या अंधविश्वास कहा जाता है।

वास्तु शास्त्र के नियम अनुसार किसी भी बिल्डिंग का प्रवेश द्वार दक्षिण की ओर नहीं होना चाहिए। यह अशुभ माना जाता है। लेकिन किसी भी गांव शहर में घनी आबादी में देखें तो सैंकड़ों सालों से दक्षिण मुखी मकान मिलेंगे और वे अच्छे से फल-फूल रहे हैं। उसी प्रकार दुकान भी सड़कों के दोनों और खुली रहती हैं। एक तरफ उत्तर दिशा में, दूसरी तरफ दक्षिण दिशा मुख वाली। लेकिन दोनों अच्छा बिजनेस कर रहीं होती हैं।

शराब की दुकान : शराब की दुकान किसी भी दिशा की ओर हो सड़क पर हो या भीतर की गलियों में हो, अच्छी भीड़ रहती हैं इसमें वास्तु का नियम फिट नहीं बैठता। वास्तु विज्ञान टाय-टाय फिस हो जाता है। आखिर इस मामले में वास्तु का नियम क्यों लागू नहीं होता ? जाहिर है वास्तु शास्त्री इस पर भी कोई तुक्का फिट करने की कोशिश करेंगे।

अमेरिका का वाइट हाउस : अमेरिका का वाइट हाऊस का प्रवेश द्वार भी दक्षिणमुखी है और पूरी बिल्डिंग वास्तु के नियम के हिसाब से नहीं बनाई गई है। लेकिन अमेरिका का राष्ट्र का सबसे प्रबल सत्ता का प्रमुख होता है और कई सालों से पूरे विश्व का सबसे शक्तिशाली देश कहलाने का खिताब उसके नाम पर है।

पुणे का किला शनिवार वाड़ा : पेशवा ब्राह्मणों के द्वारा पुणे में उनके निवास के लिए एक किला बनाया गया जिसका नाम शनिवार वाड़ा है। शनिवार वाड़ा पूरी तरह से वास्तु के अनुरूप बनाया गया है। यह एक राजमहल है। फिर भी हमेशा इनके ऊपर मुसीबतों का पहाड़ गिरता रहा। वह कर्ज के बोझ से लदे हुए थे। परिवार के सदस्यों को जान से हाथ धोना पड़ता रहा है। प्रश्न यह उठता है कि यदि वास्तु के अनुरूप है तो फिर पेशवाओं ने इतनी तकलीफ क्यों झेलनी पड़ी।

वास्तु के इतने सारे उदाहरणों से साफ हो जाता है कि वास्तु एक नए प्रकार का अंधविश्वास हैं इसलिए इसे सूडो साइंस इंगलिश में और हिंदी में छद्म विज्ञान कहते हैं। वास्तु का यह रोग सिर्फ हिंदुओं में नहीं है, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध भी इसकी जद में आ गए हैं। ज्योतिष की तरह यह भी देश में अंधविश्वास को बढ़वा देकर घुन की तरह खोखला कर रहा है।

उपभोक्ता कानून के अंतर्गत लाने की जरूरत : जिस प्रकार भवन निर्माण कार्यों को उसकी गुणवत्ता के अनुसार कानून की परिधि में लाया गया है, उसी प्रकार यदि वास्तुशास्त्र एक विज्ञान है तो उसके द्वारा किए गए परिवर्तन एवं दावों का दस्तावेज बनाने और उसे उपभोक्ता कानून की जद में लाने की जरूरत है ताकि भोले-भाले नागरिकों को न्याय दिलाया जा सके। लोग ठगों के चंगुल से बाहर निकल सकें और विज्ञान का बढ़ावा हो सके।

मैं हूं

-कुमुद सिंह

कुछ साल पहले एक संस्था ने मुझे मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया ? शायद उनकी तैयारी दुरुस्त नहीं थी तो उन्होंने कार्यक्रम में मेरा परिचय देते हुए कहा कि हमारी आज की मुख्य अतिथि अपना परिचय खुद देंगी ? अब एक पल को तो समझ नहीं आया कि क्या कहूँ क्योंकि ये भी कोई तरीका हुआ भला ? लेकिन अगले ही पल मुझे लगा कि यह तो एक अच्छा अवसर है सामने बैठे 100 से ज्यादा लोगों को, जिसमें महिलाएं ज्यादा थीं उन्हें कुछ बेहतरीन संदेश देने का ?

तो हमने अपना परिचय कुछ यूँ दिया --

जब मेरा जन्म हुआ था तब मेरे माता पिता ने मेरा नाम रखा ''कुमुद''? समाज में जाति व्यवस्था है तो सिंह परिवार में जन्म लेने के कारण मेरा उपनाम है ''सिंह'' ? इसमें मैने कोई योगदान नहीं दिया ? इसके अलावा जो मेरा परिचय है वो ये है कि -

बावजूद इसके कि मै करीना जैसी जीरो फिगर नहीं हूँ

बावजूद इसके कि मेरी हाइट दीपिका जैसी नहीं है

बावजूद इसके कि मेरी त्वचा ऐश्वर्या जैसी धब्बारहित नहीं है

बावजूद इसके कि मेरे कपड़े बहुत मँहगे नहीं हैं

बावजूद इसके कि मेरे चेहरे पर मेकअप बाजार के ब्यूटी प्रोडक्ट से नहीं बल्कि धूल और पसीने से हुआ है (ये तुलना इसलिए की कि हमारी सोच में खूबसूरती का पैमाना ऐसे ही तय है)

मैं दावे से कह सकती हूँ कि मै इस दुनिया के खूबसूरत लोगों की लिस्ट में शामिल हूँ ? क्योंकि मैं सोच सकती हूँ, मैं फैसले ले सकती हूँ और मैं हर रिश्ते में होने से पहले एक व्यक्ति हूँ ?

और सबसे बड़ी बात जो मै बखूबी जानती हूँ कि ''मैं हूँ'' ?

एक पल के सन्नाटे के बाद हॉल तालियों से गूंज उठा ? कार्यक्रम खत्म होने पर ढेर सारे लोगों ने इस खूबसूरत महिला के साथ सेल्फी लेने में गर्व महसूस किया ? मुझे क्या महसूस हुआ मै शब्दों में बयान नहीं कर सकती ? बस कई आँखों में कुछ तैरता हुआ छोड़ आने का आनंद ले रही थी? कई जहन खटखटा आई थी ? और अपना परिचय देना भी सीख आई थी?

ऐसा परिचय देने लायक बनाने के लिए मम्मी पापा को नमन, जिन्होंने मेरे जन्म पर खुशी महसूस की थी और मुझे एक मजबूत इंसान बनने के लिए तराशा ?

उन सभी महिलाओं पुरुषों को सलाम जिनके संघर्षों ने हमें सम्मान से खड़ा रहना सिखाया , संघर्ष करना सिखाया ?

कौन कहता है ?

कौन कहता है कि निर्जीव बोलता नहीं ?
साइंस अध्यापक के घर पर लगा नजरबट्टू
बहुत कुछ बयां करता है।
साधुओं के नाम पर रखे गए स्कूलों नाम
बहुत कुछ बयां करतें हैं।
धार्मिक स्थलों की भव्यता
बहुत कुछ बयां करती है।
और बाहर लगे जूतों के ढेर
बहुत कुछ बयां करतें हैं।
बच्चों पर थोपे गए धार्मिक वस्त्र
भी बहुत कुछ बयां करतें हैं।
नालियों में बहता दूध
बहुत कुछ बयां करता है।
और बोतलों में बेचा जाने वाला मूत्र भी
बहुत कुछ बयां करता है।
दरवाजों पर लटके नींबू और मिर्च भी
बहुत कुछ बयां करतें हैं।
किसी बाबा के फर्लो पर आने पर की गई दीपमाला
बहुत कुछ बयां करती है।3
मगर हमें सुनाई नहीं देता
हमें तो सिर्फ जुमले बाजी सुनाई देती है।

जगजीत मंसूरपुरी

हम पक्षियों की तरह क्यों नहीं उड़ सकते?

–राजपाल सिंह

आकाश में पक्षियों की तरह उड़ने की इच्छा मनुष्य के मन में हमेशा से रही है। हवाई जहाज के आविष्कार से पहले, इस तरह उड़ने की कोशिश में कई लोगों ने अपनी जान गंवाई या उनके अंग टूट गए। उड़ने की चाह में ये साहसी लोग अपनी बाहों में पंख बांधकर ऊंची जगहों से छलांग लगाते , लेकिन हवा में उड़ना तो दूर की बात वे जमीन पर चल भी नहीं पाते थे।



दरअसल, पक्षियों और मनुष्यों की शारीरिक संरचना में कुछ मूलभूत अंतर हैं, जिनकी वजह से मनुष्य पक्षियों की तरह पंख फड़फड़ाकर उड़ नहीं सकते। सबसे पहले, पक्षियों का वजन बहुत कम होता है, उनकी हड्डियाँ अन्य जानवरों की तुलना में बहुत हल्की होती हैं। इसके अलावा, उनके शरीर में मौजूद वायु थैलियाँ भी उनके शरीर को हल्का बनाती हैं। दूसरे, उनके आकार के हिसाब से उनकी मांसपेशियां मनुष्यों की मांसपेशियों की तुलना में कहीं अधिक शक्तिशाली होती हैं। इसके अलावा, उनके शरीर की एक विशेष आकृति होती है जो हवा के प्रतिरोध को न्यूनतम करती है।

वैसे तो मोर और मुर्गी जैसे भारी पक्षी भी थोड़ी ही दूर तक उड़ सकते हैं, और शुतुरमुर्ग और पेंगुइन जैसे भारी पक्षी पंख होने के बावजूद उड़ नहीं सकते। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि केवल एक निश्चित वजन वाले जानवर ही पंखों की मदद से उड़ सकते हैं। इसलिए मनुष्य के लिए अपने भारी शरीर को केवल शारीरिक बल से पंख फड़फड़ाकर हवा में उठाना असंभव है। लेकिन विज्ञान की प्रगति के साथ, शायद ऐसी हल्की मशीन विकसित करना संभव हो जाए जो बड़े पंखों को तेजी से हिला सके और जिसे मनुष्य अपनी पीठ पर बांध सके। इस तरह, शायद भविष्य में पक्षी की तरह उड़ने का उसका सपना सच हो सके। *(नोट – इस दिशा में कुछ प्रगति हुई है। एक जेट जैसी मशीन विकसित की गई है, जिसे मनुष्य अपनी पीठ पर बांधकर हवा में उड़ा सकता है, लेकिन यह पक्षी की तरह नहीं उड़ती।)*

पक्षियों की विचित्र दुनिया

पक्षी प्रकृति के सबसे अद्भुत और विविध जीवों में से एक हैं। दुनिया में लगभग 10,000 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं। हमिंगबर्ड ऐसा पक्षी है जो पीछे की ओर भी उड़ सकता है और उसके पंख बहुत तेजी से फड़फड़ाते है।शुतुरमुर्ग दुनिया का सबसे बड़ा पक्षी है, लेकिन उड़ नहीं सकता; यह 70 किमी/घंटा की गति तक दौड़ सकता है।

आर्कटिक टर्न हर वर्ष हजारों किलोमीटर की यात्रा कर उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक जाता है, जो सबसे लंबा प्रवास माना जाता है। पेंगुइन उड़ नहीं सकते, पर वे बेहतरीन तैराक होते हैं और बर्फीले क्षेत्रों में समूह बनाकर रहते हैं। बाज़ की दृष्टि मनुष्य से लगभग 4–5 गुना तेज होती है।

कौए और तोते जैसे पक्षी अत्यंत चलाक होते हैं; वे मानव आवाज़ की नकल भी कर सकते हैं। पक्षियों की हड्डियाँ खोखली होती हैं, जिससे उनका शरीर हल्का रहता है और उड़ान आसान होती है।

पक्षी केवल सुंदरता ही नहीं बढ़ाते, बल्कि पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जैसे बीज फैलाना और कीट नियंत्रण करना।

शहीद-ए-आज़म भगत सिंह के विचार

मेरे मन में 'अध्ययन' की तरंगे बार-बार उभरती रही। अध्ययन करो, ताकि तुम अपने विरोधियों के तर्कों का उत्तर दे सको। अध्ययन करो ताकि तुम अपने सिद्धांत के समर्थन में तर्क जुटा सको।

जिस दिन अनेक पुरुष और महिलाएं मानवता की सेवा करने और पीड़ित मानवता को मुक्ति दिलाने की भावना से आगे आएंगे, उस दिन स्वतंत्रता के युग का प्रारंभ होगा।

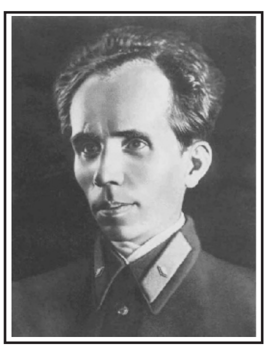
मेरे विचार में, जिस व्यक्ति में थोड़ी सी भी तर्कशक्ति होती है, वह हमेशा अपने आस-पास को तर्क की कसौटी पर परखता है। जहाँ प्रत्यक्ष प्रमाण उपलब्ध न हो, वहाँ दर्शनशास्त्र का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

आपके के अनुसार, चमार या भंगी जाति के निरक्षर परिवार में जन्मे व्यक्ति का क्या होगा? वह गरीब है, इसलिए पढ़-लिख नहीं सकता। खुद को अच्छा समझने वाले अन्य लोग उससे नफरत करते हैं और उसको बुरा-भला बोलते हैं, क्योंकि वह उच्च जाति में पैदा हुए हैं।

हालांकि मैं इस मूलभूत बिंदु पर उनसे असहमत नहीं हूं कि सभी धार्मिक मान्यताएं,धार्मिक सिद्धांत और अन्य ऐसी संस्थाएं अंततः दमनकारी संस्थाएं, व्यक्तियों और वर्गों की ही पक्ष लेती हैं। हर धर्म कहता है कि बादशाह के विरुद्ध विद्रोह करना हमेशा ही पाप हैता है।

अमूल्य संपत्ति

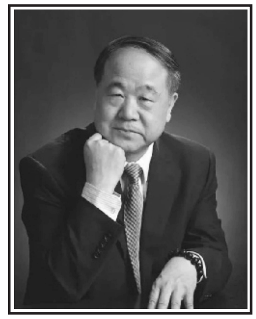
मनुष्य का सबसे अनमोल और अमूल्य धन उसका जीवन है, जो उसे केवल एक बार मिलता है। वो जीए, आवश्य जीए, एसे जीए कि बीते हुए वर्षों का पीड़ादायक पछतावा उसे कभी न सताए। व्यर्थ अतीत के अहसास की शर्म उसे कभी न सताए।



एक व्यक्ति को इस प्रकार जीना चाहिए कि अपनी अंतिम सांस के समय वह कह सके कि उसका जीवन, उसकी सारी शक्ति, दुनिया के सर्वश्रेष्ठ आदर्श, यानी मानव स्वतंत्रता के संघर्ष के लिए समर्पित रही है।

निकोलाई असर्तोवस्की

मो यान (Mo Yan) के महिलाओं के प्रति विचार



नोबेल पुरस्कार विजेता मो यान के लेखन में महिलाएँ केवल सहायक पात्र नहीं हैं, बल्कि समाज, इतिहास और सत्ता संरचनाओं के बीच संघर्ष करती सशक्त और जटिल व्यक्तित्व के रूप में उभरती हैं। उनके विचार सीधे उपदेशात्मक न होकर कथात्मक और यथार्थवादी हैं।

मो यान की रचनाओं-जैसे रेड सोरघम और बिग ब्रेस्ट्स एंड वाइड हिप्स-में महिलाएँ साहसी, सहनशील और जीवन-संघर्षों से जूझती दिखाई देती हैं। वे युद्ध, गरीबी, पितृसत्ता और सामाजिक दमन के बीच परिवार और समाज की धुरी बनी रहती हैं। लेखक यह दिखाते हैं कि चीनी ग्रामीण समाज में महिलाएँ सबसे अधिक शोषण झेलती हैं, फिर भी वे परिस्थितियों को चुनौती देने का साहस रखती हैं।

वे महिलाओं को केवल पीड़ित नहीं दिखाते, बल्कि उनकी कामनाओं, देह, भावनाओं और निर्णयों को खुलकर स्थान देते हैं। उनके पात्र पारंपरिक नैतिकताओं को तोड़ते हैं, जिससे यह संदेश जाता है कि स्त्री की पहचान सामाजिक बंधनों से बड़ी है। इस दृष्टि से वे स्त्री की स्वायत्तता का समर्थन करते प्रतीत होते हैं।

हालाँकि कुछ आलोचक मानते हैं कि उनके लेखन में स्त्री-देह का अत्यधिक वर्णन है, पर मो यान का उद्देश्य उत्तेजना नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ को नग्न रूप में सामने रखना है-जहाँ स्त्री देह भी सत्ता और शोषण की राजनीति से जुड़ी है। मो यान के महिलाओं के प्रति विचार सम्मान, यथार्थ और सशक्तिकरण की ओर संकेत करते हैं। वे स्त्री को इतिहास की मौन दर्शक नहीं, बल्कि इतिहास गढ़ने वाली सक्रिय शक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

विज्ञान की देन



विज्ञान प्रकृति में घटित सभी घटनाओं का अध्ययन करता है, जिसमें मनुष्य भी शामिल हैं। आपकी स्वाभाविक जिज्ञासा आपको अपने आसपास की चीजों और घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। जब आप सूर्य, तारों, पेड़-पौधे और जानवरों को देखते हैं, तो आप आश्चर्यचकित और उत्सुक हो जाते हैं। आप इस बाहरी दुनिया के क्यों और कैसे को जानना चाहते हैं। इसी तरह आप एक वैज्ञानिक बनते हैं। टी. एच. हक्सले का एक खूबसूरत कथन है कि विज्ञान सामान्य ज्ञान का प्रशिक्षित और संगठित रूप है। विज्ञान आपको अंधविश्वासों से मुक्त करता है। प्राचीन काल में, जब मनुष्य अनेक अंधविश्वासों का शिकार था और जीवन में घटित होने वाली हर घटना को किसी न किसी देवता, शैतान या परियों से जोड़ता था, तब विज्ञान ने ही मानव मन को इन विनाशकारी और मनोबल गिराने वाले प्रभावों से मुक्त किया था।

लाला हरदयाल

अहंकार और स्वार्थ

हम शिक्षक यह भूल जाते हैं कि छोटे बच्चों के लिए संसार का ज्ञान व्यक्ति के ज्ञान से शुरू होता है। एक बच्चे के लिए, अच्छाई या बुराई उसके पिता द्वारा उसकी माता से बात करने के लहजे से प्रकट होती है। यह उसके पिता के हाव-भाव और कार्यों से भी प्रकट होती है। बच्चा अपने माता-पिता के नैतिक जीवन का प्रतिबिंब होता है। अच्छे माता-पिता का सबसे मूल्यवान नैतिक गुण, जिसे बच्चे सबसे अधिक सीखते हैं, वह है दयालुता और दूसरों के प्रति भलाई की इच्छा। जिन परिवारों में माता-पिता अपना कुछ समय दूसरों की भलाई के लिए देते हैं, वे दूसरों के सुख-दुख में साथ देतें हैं। उनके बच्चे अच्छे, दयालु और स्नेही बनते हैं। सबसे बड़ी बुराई कुछ माता-पिता का अहंकार और स्वार्थ है।

सुखमोलिंस्की

ये राहें

ये राहें किनकी ?
जो चले उनकी !
ये आसमां किनका ?
जो उड़ें उनका !
ये धरती किनकी ?
जो खपे उनकी !
ये पर्वत किनके ?
जो साथ उठे उनके !
ये मंजिलें किनकी ?
जो आगे बढ़े उनकी
ये नदियां किनकी ?
जो संग बहे उनकी !
ये सागर किनके ?
जो उतरे इनमें उनके !
दूर क्षितिज किनारे किनके ?
जो चले उस ओर उनके !

- ओम प्रकाश करुणेश

मजदूर औरत

खिली हर सुबह, तपी हर दोपहर,
ढली हर शाम, अंधकार में दबी रही रात भर।
ढोती रही पत्थर, तोड़ती रही पत्थर, खाती रही पत्थर।
पसीने से महक उठे खेत,
धुल गए गांव-नगर-बस्तियां, पल गए घर-परिवार।
ईट गारा बनकर, दीवारों में चिन गई,
बजरी बन सड़कों पर, पांव तले बिछ गई।
कोई भी न देख सका, कितना वह कर गई,
किसी को न पता चला, कहां वह चली गई।
मेरी खामोशी ही मेरा प्रतिरोध है

-जयपाल

मो: 9466610508

विद्यार्थियों का कोना

शंका निवारण



क्या सांप के सिर में मणि होती है ?

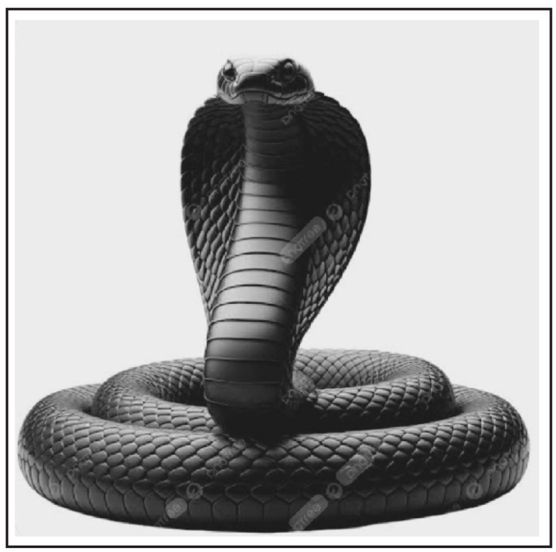
नहीं, साँप के सिर में कोई ''मणि'' नहीं होती। यह धारणा पूरी तरह अंधविश्वास और लोककथाओं पर आधारित है।

सच क्या है ?

वैज्ञानिक रूप से साँप के सिर या शरीर में किसी भी प्रकार की चमकदार मणि, पत्थर या रत्न का अस्तित्व नहीं पाया गया।

साँप का सिर हड्डी, मांसपेशी, त्वचा और मस्तिष्क से बना होता है–उसमें कोई अलग वस्तु नहीं होती।

फिर यह भ्रम क्यों फैला ?



लोककथाएँ और पुराण कथाएँ - पुराने समय में साँप को रहस्यमयी जीव माना गया, जिससे ऐसी कहानियाँ बनीं।

आँखों की चमक–रात में साँप की आँखें रोशनी पड़ने पर चमकती हैं, जिसे लोग ''मणि'' समझ लेते हैं।

ठगों और सपेरों की कहानियाँ–कुछ लोग धन या चमत्कार के लालच में ऐसी झूठी बातें फैलाते रहे। कभी–कभी सूखी खाल या स्राव को मणि बताकर भ्रम पैदा किया जाता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण :– अब तक किसी भी वैज्ञानिक अध्ययन या शोध में साँप की मणि का प्रमाण नहीं मिला।

ऐसे दावे करने वाले लोग अक्सर ठगी या अंधविश्वास को बढ़ावा देते हैं। हमें ऐसे ठग लोगों से बचना चाहिए।

क्या सांप गाय या भैंस का दूध चूस जातें हैं ?

नहीं, साँप गाय का दूध नहीं चूसते। यह धारणा भी पूरी तरह अंधविश्वास पर आधारित है।

वैज्ञानिक सच्चाई :– साँप मांसाहारी (Carnivorous) होते हैं।

वे चूहे, मेंढक, छिपकली, पक्षी या अन्य छोटे जीव खाते हैं।

साँप दूध पचा ही नहीं सकते, क्योंकि उनके शरीर में दूध (लैक्टोज) को पचाने के लिए आवश्यक एंज़ाइम नहीं होते।

साँप के होंठ नहीं होते, इसलिए ''चूसना'' उनके लिए संभव नहीं है।

फिर लोग ऐसा क्यों मानते हैं ?

गोशालाओं में साँप आम तौर पर दिख जातें हैं क्योंकि वहाँ चूहे अधिक होते हैं, साँप उन्हें खाने के लिए आते हैं। पीढ़ी–दर–पीढ़ी चली आ रही कहानियाँ और परंपराएँ बिना किसी प्रमाण के सच मान ली जाती हैं, साँप से जुड़ा भय ऐसे भ्रमों को बढ़ाता है।

यदि साँप को दूध दिया जाए तो?

दूध साँप के लिए हानिकारक हो सकता है और उसकी मृत्यु भी हो सकती है। इसलिए नाग पंचमी आदि पर दूध चढ़ाना वैज्ञानिक और नैतिक रूप से गलत है।

क्या साँप बदला लेते हैं?

यह मान्यता पूरी तरह गलत और अंधविश्वास है। साँप के पास सोचने, योजना बनाने या बदला लेने की मानसिक क्षमता नहीं होती। उनका मस्तिष्क बहुत सरल होता है, जो केवल तीन बातों पर प्रतिक्रिया करता है–भूख, डर और आत्मरक्षा।

साँप क्यों काटते हैं ?

जब उन्हें अचानक खतरा महसूस होता है जब कोई उन्हें छेड़ता या कुचलने की कोशिश करता है। जब उनके बचने का रास्ता बंद हो जाता है

''बदला'' जैसा भ्रम क्यों पैदा होता है ?

कई बार संयोग से एक जगह साँप दिखने पर दूसरा साँप

भी दिख सकता है।

डर और कल्पना स्थिति में लोग कहानियाँ गढ़ लेतें हैं। लोककथाएँ और फिल्में भी समाज में इस मिथक को फैलाती हैं। साँप इंसान को पहचान नहीं सकते। वे घटनाओं को याद रखकर पीछा नहीं करते।

वे केवल कंपन, गंध और तापमान पर प्रतिक्रिया करते हैं।

क्या साँप को मंत्र से वश में किया जा सकता है?

यह धारणा पूरी तरह अंधविश्वास है। साँप किसी भी मंत्र, शब्द या आवाज़ से वश में नहीं होते।

वैज्ञानिक सच्चाई :-

साँप के बाहरी कान नहीं होते, इसलिए वे मंत्र या आवाज़ सुन ही नहीं सकते। वे केवल ज़मीन के कंपन (vibrations) और आस-पास की हलचल को महसूस करते हैं। सपेरों द्वारा साँप का ''नाचना'' मंत्र का प्रभाव नहीं, बल्कि बीन (पुंगी) की गति और कंपन पर प्रतिक्रिया होती है।

फिर भ्रम क्यों फैला ?

सपेरों द्वारा बीन के साथ मंत्र बोलना दिखावे का हिस्सा होता है। साँप की फन फैलाने की मुद्रा को वश में होना समझ लिया जाता है।

लोककथाएँ और फिल्में इस मिथक को मजबूत करती हैं।

अज्ञानता के कारण लोग इसे चमत्कार मान लेते हैं।

साँप का वास्तविक व्यवहार

साँप ''नाचता'' नहीं, बल्कि खतरे से खुद को बचाने की मुद्रा अपनाता है। वह बीन की ऊँच-नीच और गति का अनुसरण करता है, आवाज़ का नहीं।

अधिकतर धार्मिक लोग धर्मग्रंथों को पढ़ते नहीं, केवल उनका जाप करते हैं-क्योंकि उन्हें सिखाया गया है कि प्रश्न करना पाप है।

जिस दिन वे प्रश्न-तर्क से जुड़ी अनहोनी के भय से मुक्त होकर, बुद्धि और विवेक के साथ उन्हें पढ़ेंगे, उसी दिन उनके दिमाग़ों से धर्म का नशा ख़ुद-ब-ख़ुद उतर जाएगा, और खुली, विवेकशील सोच की एक नई ज़िंदगी शुरू हो जाएगी।

-धर्मेन्द्र आजाद

न आत्मा
न परमात्मा
ढोंग सब साधु-महात्मा
कोरी कल्पना
स्वर्ग की
मोक्ष की, मुक्ति की
भक्ति की, शक्ति की
कल्पनाओं का खेल
भटकती दुनिया
पाने को मोक्ष
तीर्थ-स्थलों पर
बाबाओं के दर
टोने-टोटके
तंत्र-मंत्रों में
स्याने-सेवड़े
अय्याश और बेवड़े
सब भ्रष्ट
दिग्भ्रमित
आमजन के शोषक
खोजते अंधभक्त
करते प्रचार
दिखाने स्वर्ग का द्वार
जिसका इनसे वास्ता
भटकते रास्ता
सबका एक उपाय
वैचारिक चिंतन और ज्ञान
तर्क और विज्ञान
जहां होगा तर्क
वहां न स्वर्ग, न नरक
सब भीतरी ऊर्जा का आधार
यही एक उपचार
आओ !तर्क अपनाएं
न भटकें,न भटकाएं
पढ़ो बुद्ध
बढ़ाओ बुद्धि
कीजिए आत्म शुद्धि
खुद को जानो
अपनी ताकत पहचानो।
जीवन की सफलता
नकारात्मक ऊर्जा की विफलता।

डॉ. फूल सिंह लुहानी

साझा संघर्ष धर्मनिरपेक्षता की बुनियाद

–जसवंत, मोहाली

भारतीय संविधान के तीन 'स' बहुत महत्वपूर्ण हैं। यदि कहा जाए कि यही तय कर सकते हैं कि हमारी ज़िंदगी कैसी होगी, तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। ये हैं– सेक्युलर (धर्मनिरपेक्ष), सोशलिस्ट (समाजवादी) और सॉवरेन (संप्रभु)। वैसे ये तीनों 'स' आपस में काफी हद तक जुड़े हुए हैं, लेकिन यहाँ हम केवल सेक्युलरिज़्म यानी धर्मनिरपेक्षता पर ही चर्चा करेंगे।

धर्मनिरपेक्षता की चर्चा में यह सवाल भी शामिल है कि धर्म–आधारित राष्ट्र की बात कौन कर रहा था और कौन कर रहा है। जहाँ आरएसएस के नेताओं का उद्देश्य भारत को हिंदू राष्ट्र बनाना था/है, वहीं मुस्लिम लीग इस्लामी देश पाकिस्तान की माँग कर रही थी। दोनों की यह माँग अंग्रेज़ों की ''फूट डालो और राज करो'' की नीति के अनुकूल थी और उनके शासन को लंबा करती थी। दूसरी ओर, देश की आज़ादी और उसके लिए संघर्ष के लिए ज़रूरी था कि जनता की व्यापक एकता बने।

धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा कहाँ से आई?

इतिहासकार इरफ़ान हबीब ने एक साक्षात्कार में कहा था, ''दुनिया के संदर्भ में धर्मनिरपेक्षता का एक अलग अर्थ है और भारत में सुप्रीम कोर्ट ने जो माना है, वह अलग है। दुनिया में धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा फ्रांसीसी क्रांति के दौरान उभरी। जॉर्ज जैकब होलियोक (ब्रिटिश लेखक) ने 1851 में धर्मनिरपेक्षता को इस विचार के साथ परिभाषित किया कि इस जीवन में किए जाने वाले सभी कार्य मानव कल्याण के लिए हों, न कि इस उम्मीद में कि अगले जीवन में ईश्वर कोई लाभ देगा। इसका अर्थ यह है कि राज्य शिक्षा और अन्य सामाजिक कार्य इस आधार पर करें कि मनुष्य के लिए क्या बेहतर है, न कि इस आधार पर कि धर्म क्या कहता है। जैसे– पुरुष और महिला में समानता होनी चाहिए, चाहे धर्म कुछ भी कहे। शिक्षा में धर्म का कोई हस्तक्षेप न हो।''

''जवाहरलाल नेहरू का भी यही विचार था। लेकिन राधाकृष्णन का मानना था कि धर्मनिरपेक्ष राज्य का अर्थ धर्म का निषेध नहीं है, क्योंकि भारतीय लोगों का किसी अदृश्य शक्ति में विश्वास है; पर राज्य किसी एक विशेष धर्म को मान्यता नहीं देगा। सुप्रीम कोर्ट ने भी यही माना। मेरे विचार में यह फैसला ठीक नहीं है, क्योंकि धर्मनिरपेक्षता का अर्थ वही होना चाहिए जिसे दुनिया भर की अदालतों और राजनीतिक दार्शनिकों ने स्वीकार किया है।''

हिंदू राष्ट्र की अवधारणा कहाँ से आई?

शम्सुल इस्लाम की पुस्तक ''आर.एस.एस. को जानिए'' के संदर्भ में देखें तो इतिहास में हिंदुत्ववादी नेता क्या कहते रहे हैं–

1937 में अहमदाबाद में हिंदू महासभा के 19वें अधिवेशन में सावरकर ने कहा था:

''यह किसी भी तरह स्वीकार नहीं किया जा सकता कि हिंदुस्तान एक संयुक्त और मिश्रित राष्ट्र है; इसके विपरीत, हिंदुस्तान में मुख्य रूप से दो राष्ट्र हैं– हिंदू और मुसलमान।''

आरएसएस के अंग्रेज़ी मुखपत्र के पहले अंक (3 जुलाई 1947) के संपादकीय में उन लोगों की निंदा की गई जो मानते थे कि हिंदू और मुसलमान मिलकर एक राष्ट्र बनाते हैं। 14 अगस्त 1947 के संपादकीय में लिखा गया:

''हिंदुस्तान में केवल हिंदू ही राष्ट्र का निर्माण करते हैंज् और राष्ट्र को हिंदुओं द्वारा हिंदू परंपराओं, संस्कृति, विचारों और इच्छाओं के आधार पर गठित किया जाना चाहिए।''

यही सोच मुसलमानों के बारे में मुस्लिम लीग की भी थी। 1940 में अंबेडकर ने टिप्पणी की थी:

''यह बात सुनने में अजीब लग सकती है कि राष्ट्र के प्रश्न पर सावरकर और जिन्ना के विचार पूरी तरह मेल खाते हैं। दोनों एक–दूसरे के विरोधी लगते हैं, पर हैं एक ही। दोनों इस बात पर ज़ोर देते हैं कि भारत में दो राष्ट्र हैं– एक मुस्लिम राष्ट्र और एक हिंदू राष्ट्र।''

आर. एस. एस. प्रमुख गोलवलकर ने तो यहाँ तक कहा : ''हिंदुस्तान में गैर–हिंदू जनता को हिंदू संस्कृति और भाषा अपना लेनी चाहिए। हिंदू राष्ट्र की महिमा के अलावा कुछ नहीं करना चाहिए। उन्हें अपनी अलग पहचान समाप्त कर हिंदू नस्ल में विलीन हो जाना चाहिएज् उन्हें न तो किसी प्रकार

की विशेष रियायत मिलेगी और न ही सामान्य नागरिक अधिकार।''

आरएसएस आज़ादी की लड़ाई के विरुद्ध ही खड़ी रही। अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ संघर्ष में सभी धर्मों, क्षेत्रों और भाषाओं के लोगों ने बलिदान दिया और कांग्रेस एक बड़े संगठन के रूप में उनकी साझा प्रतिनिधि बनी। इसलिए संविधान सभा ने लंबी बहस के बाद भारतीय संविधान का स्वरूप धर्मनिरपेक्ष रखा।

धर्म-आधारित राज्य कैसा होता है ?

इसके लिए दूर जाने की ज़रूरत नहीं– पाकिस्तान एक इस्लामी देश है। प्रसिद्ध लेखक असगर वजाहत की पुस्तक ''पाकिस्तान का मतलब क्या'' में उनके यात्रा अनुभव दर्ज हैं। पुस्तक के कुछ अंश–

वे लिखते हैं कि जनरल ज़िया-उल-हक़ ने सत्ता बनाए रखने के लिए इस्लाम का सहारा लिया और पाकिस्तान का इस्लामीकरण किया। इस्लामी क़ानून बनाए गए, जिनमें यह भी था कि यदि दो मुसलमान किसी गैर-मुस्लिम के ख़िलाफ़ यह गवाही दे दें कि उसने पैग़म्बर मोहम्मद साहब का अपमान किया है, तो धार्मिक अदालत उसे फाँसी की सज़ा दे सकती है। जनता के मन में यह बैठा दिया गया कि 'तौहीन-ए-रिसालत' करने वाले की हत्या सबसे पवित्र कार्य है। यहाँ तक कि एक गृह मंत्री ने भी ऐसी हत्या की बात कही।

रिपोर्टों के अनुसार कई ईसाई और अहमदिया लोगों को फाँसी की सज़ा दी गई; उच्च अदालतों से बरी होने के बाद उन्हें कट्टरपंथियों ने मार डाला, और बरी करने वाले जजों तक की हत्या कर दी गई।

ज़िया के इस्लामीकरण ने पाकिस्तान को बुरी तरह बाँट दिया– अहमदियों पर अत्याचार बढ़े, शिया-सुन्नी संघर्ष बढ़ा। समाज की यह विभाजनकारी स्थिति जनता की एकता और न्यायपूर्ण संघर्ष की शक्ति को समाप्त कर गई– और यही ज़िया चाहता था।

भारत की ओर लौटते हुए

पिछले वर्षों में सरकार ने किस तरह संविधान की धर्मनिरपेक्षता को कमजोर किया है– इसके उदाहरण सामने हैं: हिंदू राष्ट्र के दावे, भड़काऊ बयान, भीड़ हिंसा, गीता को राष्ट्रीय पुस्तक बनाने की बातें, और नफ़रत भरे वक्तव्य– जिनमें से बहुत कम पर कार्रवाई हुई।

स्पष्ट होना चाहिए कि हिंदू राष्ट्र की अवधारणा पाकिस्तान के इस्लामी राष्ट्र की नकल ही है। भारत में धर्मनिरपेक्षता का विचार देशभक्तों ने अपने खून से सींचा है। यह अवधारणा अंग्रेज़ी साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ लड़े गए साझा संघर्षों से निकली – इस संघर्ष में राष्ट्रीय आंदोलनों, क्रांतिकारियों की कार्रवाइयों, ग़दर आंदोलन तथा विभिन्न क्षेत्रों में लड़े गए अनेक आंदोलनों का समावेश था। इसका एक उदाहरण रॉलेट एक्ट के खिलाफ लड़ा गया संघर्ष है।

साल 2019 में बैसाखी के दिन जलियांवाला बाग़ के रक्तरंजित कांड को सौ वर्ष पूरे हुए थे। इस अवसर पर उस समय के हालात पर 7 अप्रैल 2019 को प्रकाशित पंजाबी ट्रिब्यून में परमिंदर सिंह के लेख के अंश इस प्रकार हैं–

''ज्रॉलेट एक्ट के खिलाफ संघर्ष का एक अत्यंत महत्वपूर्ण चरण 9 अप्रैल को अमृतसर में राम नवमी के अवसर पर निकाला गया जुलूस थाऽ इस जुलूस का नेतृत्व एक मेडिकल प्रैक्टिशनर डॉ. हाफ़िज़ मुहम्मद बशीर ने घोड़े पर सवार होकर किया। बाद में 10 अप्रैल की हिंसक घटनाओं के आरोप में मार्शल लॉ के तहत इसी डॉ. बशीर को फाँसी की सज़ा सुनाई गई, जिसे बाद में कैद की सज़ा में बदल दिया गया। इस जुलूस में डॉ. बशीर के पीछे साइकिल सवारों का जत्था था और उनके पीछे पैदल चलने वाले लोग थे। इस जुलूस को महाशा रतन चंद उर्फ़ रत्तो के साथी चौधरी बुग्गा मल ने बहुत ही सुव्यवस्थित ढंग से क्रमबद्ध किया थाऽ।''

राहत इंदौरी ने उपर्युक्त सारे विवरण को मानो एक ही शेयर में समेट दिया है :

''मैं जानता हूँ कि दुश्मन भी कम नहीं,
लेकिन हमारी तरह हथेली पर जान थोड़ी है।
सभी का खून शामिल है यहाँ की मिट्टी में,
किसी के बाप का हिंदुस्तान थोड़ी है।''

13 अप्रैल की बैसाखी के दिन जलियांवाला बाग़ में चली गोलियों ने किसी का धर्म नहीं देखा।

''इहो मंदिर ते इहो मसीत समझो,
रलिया खून हिंदू मुसलमान ऐथे।''

ईश्वर विकसित राष्ट्रों में अप्रचलित हो जाएगा ?

–अभिनव

आधुनिक युग में विज्ञान, तकनीक और शिक्षा का तेजी से विस्तार हो रहा है। विकसित राष्ट्रों में लोग अब तर्क, प्रमाण और आलोचनात्मक सोच पर आधारित निर्णय ले रहे हैं। इस प्रक्रिया में धार्मिक विश्वास, जो सदियों से समाज की नींव रहे हैं, धीरे-धीरे कमजोर पड़ रहे हैं। मेरा मानना यह है कि जब शिक्षा अपनी वास्तविक दिशा में आगे बढ़ेगी और आलोचनात्मक सोच हर जगह प्रचलित हो जाएगी, तो पूजा स्थल–मंदिर, मस्जिद, चर्च और गुरुद्वारे–अपनी प्रासंगिकता खो देंगे और धीरे-धीरे लुप्त हो जाएंगे। ईश्वर की अवधारणा अप्रचलित हो जाएगी, क्योंकि मनुष्य स्वयं अपनी नियति का स्वामी बनेगा।

शिक्षा और आलोचनात्मक सोच की भूमिका

शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति को तर्कशील बनाना है। प्राचीन काल में शिक्षा धार्मिक ग्रंथों तक सीमित थी, जहां प्रश्न करना वर्जित था। लेकिन आज विकसित देशों जैसे अमेरिका, जापान, स्वीडन और जर्मनी में शिक्षा विज्ञान, दर्शन और इतिहास पर केंद्रित है। यहां बच्चे बचपन से ही ''क्यों'' और ''कैसे'' पूछना सीखते हैं। आलोचनात्मक सोच सिखाती है कि किसी भी दावे को प्रमाण के बिना स्वीकार न करें।

उदाहरणस्वरूप, डार्विन का विकासवाद सिद्धांत बताता है कि जीवन की उत्पत्ति ईश्वरीय सृष्टि नहीं, बल्कि प्राकृतिक चयन है। बिग बैंग थ्योरी ब्रह्मांड की शुरुआत को वैज्ञानिक रूप से समझाती है, जबकि धार्मिक कथाएं इसे चमत्कार मानती हैं। जब स्कूलों में ये तथ्य पढ़ाए जाते हैं, तो बच्चे ईश्वर को एक मिथक के रूप में देखने लगते हैं। यूरोपीय संघ के सर्वेक्षणों से पता चलता है कि स्वीडन और डेनमार्क जैसे देशों में 70-80त्न लोग नास्तिक हैं, क्योंकि उनकी शिक्षा प्रणाली आलोचनात्मक सोच पर जोर देती है।

पूजा स्थलों का लुप्त होना

पूजा स्थल समाज के केंद्र बिंदु रहे हैं, जहां लोग भय, उम्मीद और एकजुटता के लिए इकट्ठा होते थे। लेकिन जब शिक्षा आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देगी, तो ये स्थान अनावश्यक हो जाएंगे। लोग समझेंगे कि प्रार्थना से बीमारी ठीक नहीं होती; दवा और चिकित्सा विज्ञान करते हैं। प्राकृतिक आपदाओं को ईश्वर का प्रकोप नहीं, बल्कि जलवायु परिवर्तन का परिणाम माना जाएगा।

विकसित राष्ट्रों में यह प्रक्रिया पहले से शुरू हो चुकी है। नीदरलैंड्स में हजारों चर्चों को बंद कर दिया गया है और उन्हें लाइब्रेरी, जिम या आवासीय परिसर में बदल दिया गया है। ब्रिटेन में 20त्न चर्च खाली पड़े हैं। कारण स्पष्ट है–लोगों की धार्मिक भागीदारी घट रही है। प्यू रिसर्च सेंटर के अनुसार, अमेरिका में "No religion" वाली श्रेणी सबसे तेजी से बढ़ रही है, खासकर युवाओं में। जब हर व्यक्ति वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाएगा, तो पूजा स्थल केवल ऐतिहासिक स्मारक रह जाएंगे, जैसे प्राचीन मूर्तियां संग्रहालयों में।

सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

ईश्वर के अप्रचलित होने से समाज अधिक तर्कसंगत बनेगा। नैतिकता धार्मिक नियमों पर नहीं, मानवीय मूल्यों पर आधारित होगी। लोग सहानुभूति, न्याय और समानता से प्रेरित होंगे, न कि स्वर्ग-नरक के भय से। जापान जैसे देश, जहां शिंतो और बौद्ध धर्म प्रचलित हैं, लेकिन 60 प्रतिशत लोग धार्मिक नहीं मानते, फिर भी समाज शांतिपूर्ण और उन्नत है। यह साबित करता है कि ईश्वर के बिना भी नैतिकता संभव है।

हालांकि, चुनौतियां भी होंगी। धार्मिक संस्थाएं राजनीतिक शक्ति का स्रोत हैं। वे शिक्षा में हस्तक्षेप करेंगी, लेकिन विज्ञान की जीत अपरिहार्य है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने जानकारी को लोकतांत्रिक बना दिया है; कोई भी धार्मिक दावा अब छिप नहीं सकता।

जब शिक्षा अपनी वास्तविक राह पर चलेगी–आलोचनात्मक सोच, प्रमाण-आधारित ज्ञान और तर्क की राह–तो ईश्वर विकसित राष्ट्रों में अप्रचलित हो जाएगा। पूजा स्थल vanish हो जाएंगे, क्योंकि वे भय और अज्ञान पर टिके हैं। यह प्रक्रिया दर्दनाक हो सकती है, लेकिन यह मानवता की मुक्ति होगी। इंसान ईश्वर की बजाय इंसानियत को पूजेगा, और समाज अधिक न्यायपूर्ण, वैज्ञानिक और समृद्ध बनेगा। भविष्य शिक्षा का है, न कि अंधविश्वास का।

***

आप बीती

अंध भक्ति से तर्कशीलता का सफर

–रामेश्वर आजाद

मेरी शादी सिरसा डेरा में 1991 में हुई थी उस वक्त मैं डेरा का अंधभगत था। उस समय सतनाम और गुरमीत राम–रहीम बाबे दोनों गद्दी पर विराजमान थे। यद्यपि मैं पुलिस में था, लेकिन अंधविश्वासी होने में पढ़ाई लिखाई, रोजगार, पद, कार्य कोई मायने नहीं रखता?

अंधविश्वास धर्म के कारण ही होता है।अगर जीवन से धर्म हट जाए अंधविश्वास भी मिट जाता है।

स्वय डेरा बाबा सतनाम सिंह बताया करता था कि वो सभी व्यक्ति डेरे के अनुयाई बन सकते हैं जो किसी भी धर्म, ईश्वर ,आत्मा में विश्वास रखते हैं, लेकिन साथ ही कहते थे कि नास्तिक का कोई इलाज नहीं ?

वो चेला नहीं बनाया जा सकता ?

तभी से कई बार सोचता था कि आखिर ये नास्तिक क्या बला है और फिर जब राम–रहीम और डेरे की असलियत सामने आने लगी तो विश्वास टुटना लाजमी था। डेरा छोड़ दिया था। गुरु,डेरा,भगवान से विश्वास उठने लगा था? लेकिन तब एक विचार मन को कचोटता था कि आखिर सारी दुनिया भगवान को मानती है। क्या ये सब बेवकूफ हैं ? नास्तिक कौन होते हैं? उनके क्या विचार होते है? उन्हें मिलने की प्रबल इच्छा थी वे क्या कहते हैं? जबकि सारी दुनिया किसी न किसी भगवान को मानती है।

दो साल लग गए नास्तिकों को ढुंढते ढुंढते। आखिर में एक कम्युनिस्ट व्यक्ति मिला जिससे बात करके कुछ संतुष्टि हुई, लेकिन पूर्ण तसल्ली तब हुई इसी सब की तलाश में तर्कशील सोसायटी के सदस्यों से मिला तो नास्तिकता ,विज्ञान सब की जानकारी मिल गई मन बेहद हल्का हो गया तब से पुरा परिवार नास्तिक हैं।

जब व्यक्ति धार्मिक होता है तो उसे अंधभक्त बनते देर नहीं लगती और फिर वो अंधभक्ति में अपने जीवन को कष्टमय बना लेता है। उसके जीवन के सभी क्रिया कलाप गुरु, डेरा भगवान के इर्द गिर्द घूमने लगते हैं। व्यक्ति जीवन में सत्य को नहीं तलाश सकता है।

जब मेरी शादी डेरे में हुई तो ढेड साल बाद मेरे घर लड़का पैदा हुआ। हम महीने बाद डेरे में उसका नामकरण करवाने और आशीर्वाद लेने गए।

राम रहीम ने बच्चे का नाम प्रेममिश्रित रखा। हम दोनों ने इच्छा जाहिर की कि गुरु जी हम इसे आपके चरणों में अर्पित करने आए हैं और हम अन्य बच्चा भी पैदा नहीं करेंगे। हम बस आपके सानिध्य में रहना चाहते हैं, आप इसे डेरे में अपने पास रखो और साधू बना लो।

तब राम रहीम ने से कहा कि ये तो अभी बहुत छोटा है तुम इसे पाल पोस कर बड़ा करो जब14/15 साल का हो जाए तो हमें दे देना तब तक हमारी अमानत अपने पास रखो।इसके बाद घटती घटनाओं से हमारी आंखों से अंधविश्वास का चश्मा उतर चुका था डेरा और गुरु छोड़ दिया था। राम रहीम का रखा हुआ बच्चे का नाम भी बदलकर जतीन रख लिया, तब से जिंदगी बड़े मजे से चल रही है, अब सोचते हैं कि अगर यदि उस वक्त जतीन को डेरे का साधू बना देते तो आज बुढ़ापे में कौन सहारा बनता। अपना जीवन कैसा होता? बहू, बेटा और प्यारे पोते नहीं होते। यह सब सोच कर मन कांप उठता है कि जीवन कितना कष्टमय हो जाता अगर तर्कशीलता का मार्ग न मिलता।

जन साहित्य

जनता के लिए साहित्य का अर्थ यह है कि ऐसा साहित्य जो जनता के मूल्यों और आदर्शों का सम्मान करता है और उन्हें मुक्ति के मार्ग का मार्गदर्शन करता है। मुक्ति का यह मार्ग राजनीतिक मुक्ति से लेकर अज्ञान से मुक्ति तक फैला हुआ है।

साहित्य संबंध आपके अस्तित्व से है, आपकी भूख और प्यास के साथ है,मानसिक और सामाजिक जीवन से जुड़ा है। इसलिए, किसी भी प्रकार का आदर्शवादी साहित्य जनता से अलग नहीं है।

जो लोग साहित्य को महज निजी मामला या निजी जिम्मेदारी बताकर अपना पल्ला झाड़ लेते हैं, वही लोग 'जनता के लिए साहित्य' का नारा लगाते हैं, मानो उन्हें पता ही न हो कि वे जिन शब्दों को बार–बार दोहरा रहे हैं उनका क्या अर्थ है।

मुक्ति बोध

अधिनायकवादी पूंजीवाद की पराकाष्ठा और लोकतंत्र के सामने खड़ा वैश्विक संकट

–**कृष्ण कायत**

समकालीन विश्व व्यवस्था के भीतर अमेरिका स्वयं को लोकतंत्र, मानवाधिकार और अंतरराष्ट्रीय कानून का सबसे बड़ा संरक्षक बताता रहा है, किंतु हालिया घटनाएँ इस दावे को लगातार खोखला सिद्ध कर रही हैं। वेनेजुएला के राष्ट्रपति को अमेरिकी सैनिकों द्वारा बलपूर्वक उनके शयनकक्ष से गिरफ्तार कर अमेरिका ले जाया जाना, हथकड़ियों और आँखों पर पट्टी के साथ उनकी तस्वीरें जारी करना और खुलेआम यह कहना कि अब वेनेजुएला की सत्ता अमेरिका चलाएगा–ये घटनाएँ किसी एक देश की राजनीति भर नहीं हैं, बल्कि वैश्विक स्तर पर अधिनायकवादी पूंजीवादी व्यवस्था की मानसिकता को उजागर करती हैं। यह वह मानसिकता है जो सैन्य शक्ति, आर्थिक दबाव और भय के सहारे पूरे विश्व को अपने नियंत्रण में रखने की आकांक्षा रखती है।

अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा यह कहना कि ''जो किया वह कोई और देश नहीं कर सकता'' दरअसल अंतरराष्ट्रीय कानून, संयुक्त राष्ट्र चार्टर और राष्ट्रों की संप्रभुता के प्रति खुले तिरस्कार की अभिव्यक्ति है। यह वही अमेरिका है जो दशकों से लैटिन अमेरिका, पश्चिम एशिया और एशिया के अनेक देशों में सत्ता परिवर्तन, आर्थिक नाकेबंदी और सैन्य हस्तक्षेप के ज़रिए अपने हित साधता आया है। वेनेजुएला जैसे प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध देश पर कब्ज़े की घोषणा इस बात का प्रमाण है कि पूंजीवादी व्यवस्था में लोकतंत्र तभी तक स्वीकार्य है, जब तक वह वैश्विक पूंजी के हितों के अनुकूल हो।

इसी कड़ी में ईरान को दी जा रही अमेरिकी चेतावनियाँ भी देखी जानी चाहिए। परमाणु कार्यक्रम के नाम पर ईरान पर वर्षों से लगाए गए प्रतिबंध, सैन्य कार्रवाई की धमकियाँ और यह कहना कि यदि ईरान ने अमेरिकी शर्तें नहीं मानीं तो ''कठोर परिणाम'' भुगतने होंगे–ये सब उसी साम्राज्यवादी नीति के उदाहरण हैं।

वेनेजुएला के मामले में अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रियाएँ भी इस स्थिति की गंभीरता को रेखांकित करती हैं। अमेरिका के भीतर ही विरोध के स्वर उठना, भारत जैसे लोकतांत्रिक देश द्वारा अपने नागरिकों के लिए ट्रैवल एडवाइजरी जारी करना और उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग का इसे अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन बताते हुए विश्व युद्ध जैसी स्थिति की चेतावनी देना–ये सभी घटनाएँ बताती हैं कि अमेरिकी कार्रवाई को सामान्य या वैध मानने को विश्व तैयार नहीं है। यह भय वास्तविक है कि यदि इस प्रकार की एकतरफा सैन्य और राजनीतिक कार्रवाइयों को रोका नहीं गया, तो वैश्विक व्यवस्था अराजकता और बड़े संघर्ष की ओर बढ़ सकती है।

इन घटनाओं का मानवीय पक्ष अक्सर शक्ति प्रदर्शन के शोर में दब जाता है। किसी संप्रभु देश के राष्ट्रपति को इस तरह अपमानित करना केवल एक व्यक्ति का अपमान नहीं है, बल्कि उस देश की जनता के मत, उनकी गरिमा और उनके आत्मसम्मान का दमन है। जब लोकतंत्र का दावा करने वाली महाशक्ति किसी देश की चुनी हुई सरकार को जबरन हटाकर सत्ता अपने हाथ में ले लेती है, तो यह संदेश जाता है कि छोटे और विकासशील देशों का जनादेश निरर्थक है। यही वह क्षण होता है जब लोकतंत्र शब्द मात्र एक नारा बनकर रह जाता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि विश्व के लोकतांत्रिक देश इस अधिनायकवादी पूंजीवादी रवैये को पहचानें और समय रहते सचेत हों। यदि आज वेनेजुएला और ईरान निशाने पर हैं, तो कल कोई और देश भी इस सूची में हो सकता है। वैश्विक शांति और संतुलन तभी संभव है जब अंतरराष्ट्रीय कानून को शक्ति से ऊपर रखा जाए और संप्रभुता का सम्मान किया जाए। लोकतंत्र की रक्षा केवल भाषणों और घोषणाओं से नहीं, बल्कि एकजुटता, नैतिक साहस और मानवीय दृष्टि से होती है।

इतिहास साक्षी है कि फासीवादी और निरंकुश शक्तियाँ तब तक आगे बढ़ती हैं, जब तक उनका विरोध बिखरा हुआ रहता है। आज का समय मांग करता है कि लोकतांत्रिक राष्ट्र अपने मतभेदों से ऊपर उठकर साम्राज्यवादी पूंजीवादी वर्चस्व के विरुद्ध साझा स्वर में खड़े हों। यही एकमात्र रास्ता है जिससे विश्व को भय, युद्ध और दमन के उस अंधकार से बचाया जा सकता है, जिसकी छाया आज पहले से कहीं अधिक गहरी होती जा रही है।

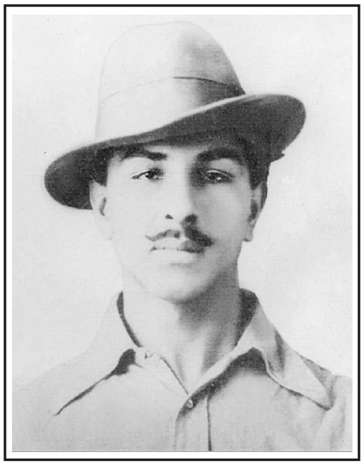
–**कृष्ण कायत, मंडी डबवाली**

धर्म, अनीश्वरवाद, नास्तिकता और भगत सिंह

–जयप्रकाश यादव

अनीश्वरवाद वह दार्शनिक सिद्धांत है जो ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखता। वह दुनिया का कर्ताधर्ता और नियंता ईश्वर को नहीं मानता। अनीश्वरवादी विचारधारा इस सृष्टि के निमित्त और उपादान के कारण के रूप में किसी ईश्वर जैसी सत्ता पर विश्वास नहीं करती है।

भारतीय दर्शन में चार्वाक, बौद्ध और जैन–इन वेदेतर दर्शनों के साथसाथ सांख्य और मीमांसा जैसे वैदिक दर्शन भी सृष्टि के अंतिम नियामक के रूप में ईश्वर की सत्ता का सहारा नहीं लेते हैं। आर्य समाज भी ईश्वर के अस्तित्व से इनकार करता है पर कर्मकांड में तो विश्वास करता है। अत: जिन मतों में सर्वोपरि सत्ता के रूप में ईश्वर की सत्ता को पूरी तरह नकार दिया जाता है, वह अनीश्वरवाद है।



आस्तिकता मानवीय दुर्बलता का प्रतीक

परंतु सिर्फ ईश्वर के अस्तित्व को नकारने से ही कोई पंथ या संप्रदाय धर्म की बुराइयों से नहीं बच सकता। इन वैदिक और बेदेतर दर्शनों में आध्यात्मिकता पर जोर दिया जाता रहा है। आस्तिकता मानवीय दुर्बलता या सीमित ज्ञान से पैदा होती है और इसी कारण आगे चल कर इन में व्यक्तिपूजा और व्यक्तिवाद हावी होते गए।

अनीश्वरवाद और धर्म की तुलना में नास्तिकता कहीं ज्यादा कठिन और चुनौतीपूर्ण है। अनीश्वरवादी जहां मुश्किलों से घबरा कर दर्शन का सहारा लेता है वहीं धार्मिक व्यक्ति जरा सी मुसीबत पड़ते ही ईश्वर की शरण में चला जाता है परंतु नास्तिक को बड़ी बहादुरी से कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए अपने विवेक और विचारधारा को कायम रखना होता है।

नास्तिक कहीं अधिक ताकतवर

भगत सिंह अपने लेख 'मैं नास्तिक क्यों हूं?' में लिखते हैं, ''आस्तिकता मुश्किलों को आसान कर देती है, यहां तक कि उन्हें खुशगवार भी बना सकती है। आदमी ईश्वर में बड़ी जबरदस्त राहत और दिलासा पा सकता है। उस के बिना आदमी को अपने ऊपर ही भरोसा करना पड़ता है। आंधीतूफान के बीच अपने पैरों पर खड़ा रहना बच्चों का खेल नहीं है।''

प्राय: तर्कों, विज्ञान, बुद्धि और विवेक के आधार पर धर्म और ईश्वर को नकारने वालों को घमंडी, काफिर और गद्दार कहा जाता है. कारण यह है कि, चूंकि हमारे पूर्वजों ने किसी परम सत्ता में सर्वशक्तिमान के कोप से उस पर पड़ने वाली मुसीबतों को भय दिखा कर भी उसे दबाया नहीं जा सकता है, इसलिए अहंकारी कह कर उस का और अहंमयता कह कर उस की भावना का मजाक उड़ाया ही जाना है।

भगत सिंह एक नास्तिक की कठिनाइयों का वर्णन अपना उदाहरण देते हुए कहते हैं, ''परीक्षा की घड़ियों में अहंकार अगर हो भी तो कपूर की तरह उड़ जाता है और आदमी प्रचलित विश्वासों को ठुकराने की हिम्मत नहीं कर पाता, अगर करता है तो हमें कहना पड़ेगा कि उस में निरे अहंकार के अलावा कोई और ताकत है।''

ठीक यही स्थिति आज है। सब लोग अच्छी तरह जानते हैं कि हमारे मुकदमे का फैसला क्या होना है. हफ्ते भर में वह सुना भी दिया जाएगा। मेरे लिए इस खयाल के अलावा और क्या राहत हो सकती है कि मैं एक उद्देश्य के लिए प्राणों का बलिदान करने जा रहा हूं?

विश्वास ही प्रलोभन का पुलिंदा

ईश्वर में विश्वास करने वाला हिंदू राजा बन कर पुनर्जन्म लेने की आशा कर सकता है।

मुसलमान या ईसाई जन्नत में मिलने वाले मजे लूटने और अपनी मुसीबतों और कुर्बानियों के बदले इनाम हासिल करने के सपने देख सकता है।

मगर वह किस चीज की उम्मीद करे, जो यह जानता है कि उस की गरदन में फांसी का फंदा डाल कर उस के पैरों के नीचे से तख्ते खींचें जाएंगे, तो सब कुछ समाप्त हो जाएगा।

नास्तिक यथार्थवादी होता है। वह बिना किसी स्वार्थ या लालच का जीवन जीता है। कम्युनिस्ट भी कहने के लिए

नास्तिक होते हैं जिन के लिए मनुष्य और मानवता ही सब कुछ है, ईश्वर नहीं।

जीवन का सही फलसफा नास्तिक ही जानते हैं

जिस दिन ऐसी मानसिकता वाले बहुत से लोग हो जाएंगे जो मानव सेवा और पीड़ित मानवता की मुक्ति को हर चीज से ऊपर समझ कर उस के लिए; इहलोक में, अगले जन्म या मृत्यु के उपरांत स्वर्ग में जा कर कोई अन्य पुरस्कार पाने के लिए नहीं बल्कि मानवता की गरदन पर रखा दासता और गुलामी का जुआ उतार फेंकने के लिए और स्वतंत्रता एवं शांति की स्थापना के लिए दमनकारियों, शोषकों और अत्याचारियों को चुनौती देने की प्रेरणा ग्रहण करेंगे, तभी वे इस मार्ग पर चल सकेंगे।

धार्मिक व्यक्ति धर्म और ईश्वर में अटूट आस्था रखता है, जो एक अंधी श्रद्धा या अंधे विश्वास के अलावा कुछ नहीं है। यह निरा विश्वास और अंधविश्वास खतरनाक होता है, इस से मस्तिष्क कुंठित होता है।

''प्रगतिशीलता की राह''

जहाँ विचार की धारा रुके, वह पंथ नहीं है,
जहाँ रूढ़ि का बंधन रहे, वह अंत नहीं है।
प्रगतिशीलता तो है प्रलय की उस अग्नि का नाम,
जिसमें जलकर राख हो जाता, हर पाखंडी काम।
उठो! कि अब यथार्थ के काँटों पर चलना होगा,
पुराने ढलते सूरज को, नए में ढलना होगा।
न धर्म की बेड़ियाँ, न जात की जंजीरें हों,
मिटा दो वो लकीरें, जो इंसानी तकदीरें हों।
यह केवल पहियों की दौड़ नहीं, मन का विस्तार है,
अन्याय के सीने में चुभती, एक पैनी तलवार है।
जब तक भूखा सोए बच्चा, फुटपाथ की धूल में,
तब तक क्या रखा है मंदिर-मस्जिद के इस फूल में?
तर्क की छेनी उठाओ, पाषाणों को आकार दो,
अंधविश्वास के अंधेरों को, विज्ञान का संसार दो।
प्रगति वही, जो दे सके हर हाथ को अधिकार,
जो बना दे इस मरुस्थल को, चेतना का द्वार।
मंजिल तो वह है जहाँ, सब एक समान हों,
धरा पर स्वर्ग उतरे, और ऊँचे आसमान हों।
यही है वह 'प्रगति', यही है वह क्रांति का गान,
जिसमें गूँजे निरंतर, बस मानवता का सम्मान।

राममूर्ति स्वामी (राजस्थान)

अब लड़ेंगे लोग मेरे देश के

-मुनेश त्यागी-

शोषण करने वालों से
अन्याय करने वालों से
भेदभाव करने वालों से
छुआछूत करने वालों से
अब लड़ेंगे लोग मेरे देश के।

जातिवाद बढाने वालों से
दंगा फसाद कराने वालों से
नफरत हिंसा करने वालों से
सांप्रदायिकता फैलाने वालों से
अब लड़ेंगे लोग मेरे गांव के।

वादे नारे तोड़ने वालों से
शिक्षा को छीनने वालों से
अमनचैन छीनने वालों से
बेरोजगारी बढाने वालों से
अब लड़ेंगे लोग मेरे शहर के।

दहेज मांगने वालों से
भ्रूण हत्या करने वालों से
बहुओं को जलाने वाले से
तलाक तलाक करने वालों से
अब लड़ेंगे लोग मेरे गांव के।

झूठ बोलने वालों से
मक्कारी करने वालों से
छल कपट करने वालों से
धोखाधड़ी करने वालों से
अब लड़ेंगे लोग मेरे शहर के।

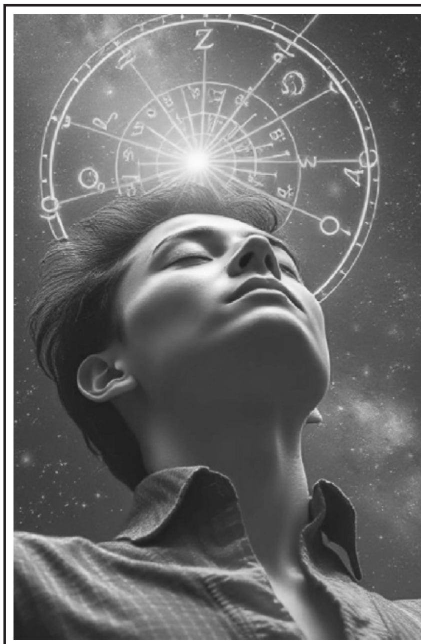
पाखंड फैलाने वालों से
धर्मांधता फैलाने वालों से
अंधविश्वास फैलाने वालों से
अज्ञानता के दीप जलाने वालों से
अब लड़ेंगे लोग मेरे गांव के।

भ्रष्टाचार फैलाने वालों से
हक अधिकार मारने वालों से
भाईचारा खत्म करने वालों से
समता समानता को डसने वालों से
अब लड़ेंगे लोग मेरे देश के।

भविष्यवाणी ?

–सीता राम गुप्ता

प्राय: अधिकांश व्यक्ति अपने भविष्य के विषय में जानने को बहुत अधिक उत्सुक रहते हैं। भविष्य के विषय में जानने की अनेक पद्धतियाँ भी लोगों ने विकसित कर रखी हैं। लेकिन क्या वास्तव में भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं के विषय में सही-सही बतलाया जा सकता है ? नहीं। यदि भविष्य के विषय में जानना संभव होता तो हम आने वाली बीमारियों के बारे में जानकर उनके आने से पहले ही उनका उपचार खोज लेते अथवा कर लेते। इससे हम न केवल अनेक दुर्घटनाओं से बच जाने अपितु अपराधों को रोकने में भी सफल हो जाते। साथ ही अपराधियों के विषय में जानकारी प्राप्त करके उन्हें उचित दंड देना भी संभव हो पाता। यदि हम विवेकपूर्वक विचार करें तो यही पाते हैं कि भविष्य में क्या होगा ये बतलाने की कोई विज्ञानसम्मत सटीक पद्धति अथवा विधि है ही नहीं। और यदि ये संभव है तो भी इससे लाभ नहीं हानियाँ ही होने की संभावना बढ़ जाती है।



किसी के बतलाए अनुसार घटित हो जाना एक संयोग मात्र है। इस संदर्भ में एक कहानी याद आ रही है। एक चरवाहा था। वह समझदार भी बहुत था। वर्तमान घटेनाक्रम को ठीक से समझकर उसके परिणाम के बारे में पहले ही बता देता था। लोग उससे इतने अधिक प्रभावित थे कि वे उसे पक्का भविष्यवक्ता मानने लगे। उसके भविष्यज्ञान की चर्चा दूर-दूर तक फैल गई। बात राजा के कानों तक पहुँचने में भी देर नहीं लगी। राजा ने अपनी मुट्ठी में एक टिड्डा बंद कर लिया और चरवाहे से पूछा कि बता मेरी मुट्ठी में क्या है। ठीक-ठीक जवाब देगा तो इनाम पाएगा वरना मौत के घाट उतार दिया जाएगा। चरवाहा बेचारा कैसे बताए कि राजा की मुट्ठी में क्या है? किसी चीज़ को बिना देखे हम कैसे बता सकते हैं कि वोक्या है ? चरवाहा डर के मारे थर-थर काँपने लगा।

संयोग से चरवाहे का नाम भी टिड्डा था। उसने घटनाक्रम को ठीक से समझकर अनुमान लगाया कि अब जान बचनी मुश्किल है और राजा से कहा, ''राजा तेरी मुट्ठी में बस टिड्डे की नन्हीं सी जान है और कुछ नहीं।'' चरवाहे ने तो बस इतना ही कहा था कि राजा की मुट्ठी में टिड्डे नामक उस चरवाहे की नन्हीं सी जान है लेकिन राजा ने समझा कि चरवाहे ने सही भविष्यवाणी की है और उसने उस चरवाहे को अपने राज्य का प्रमुख ज्योतिषी नियुक्त कर दिया। कई बार ऐसे संयोग सही होने के कारण ही लोग इन तथाकथित भविष्यवक्ताओं पर विश्वास करने लगते हैं और उनके चंगुल में फँस जाते हैं। एक उदाहरण से इस तथ्य को समझने का प्रयास करते हैं। कुछ लोग बच्चा पैदा होने से पहले ये बतलाने का कार्य करते हैं कि लड़का होगा या लड़की। साथ ही वे लड़का होने का उपाय भी बतलाते हैं। वैसे ये दोनों ही बातें कानून की दृष्टि से अपराध भी हैं।

इस तरह भविष्य बतलाना गैरकानूनी भी है और ये सब करना और करवाना दंडनीय अपराध की श्रेणी में आते हैं लेकिन लोग कब मानते हैं? अब यदि वे सबके लड़का होने की भविष्यवाणी कर देते हैं तो भी उनकी लगभग पचास प्रतिशत भविष्यवाणी तो ठीक ही बैठेगी क्योंकि ये स्वाभाविक है। अब जिन परिवारों में लड़का पैदा होगा वे उस भविष्यवक्ता पर अनायास ही विश्वास करने लगेंगे।

लेकिन इस प्रकार की घटनाओं अथवा संयोगों पर

विश्वास करना अंधविश्वास के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं। ये बिलकुल वैसा ही है जैसे परीक्षा में बहुविकल्पात्मक प्रश्नों के उत्तर देने के लिए केवल पहले, दूसरे, तीसरे अथवा चौथे विकल्प पर निशान लगा देना। इस प्रकार के प्रयास में बिना जानकारी के अथवा बुद्धि का प्रयोग किए बिना भी काफी उत्तर ठीक हो जाते हैं और कई बार बहुत अच्छे अंक भी मिल जाते हैं। लेकिन क्या इस सहाज ठहराया जा सकता है। शिरगति विवाह से पूर्व कुछ लोग लड़के और लड़की की... जन्म कुंडलियों को मिलवा कर देखते हैं और अपेक्षित संख्या में दोनों के गुण मिल जाने पर ही विवाह के लिए तैयार होते हैं। लेकिन वास्तविकता ये है कि कई बार लड़के और लड़की के पर्याप्त गुण मिल जाने के उपरांत भी विवाह सफल नहीं हो पाते। अब इससे क्या सिद्ध होता है? यहीं न कि कुंडली-मिलान का कोई औचित्य नहीं। एक सज्जन की ती यहाँ तक कहना है कि यदि जन्म कुंडलियों को मिलान करने के बाद विवाह सफल नहीं होता है तो जन्म कुंडलियों का मिलान करने वाले व्यक्ति की दोषी मानकर उसे दंड दिया जाना चाहिए। बात बिलकुल पते की है लेकिन इस पद्धति की कमियाँ छिमानेतेल के लिए कोई न कोई दूसरा बहाना ढूंढ लिझा जाता है। गलत बात की सही और सही बात को गलत सिद्ध करतेला के लिए हमारे पास कुतर्कों की कमी नहीं होती।

वास्तविकता ये है कि कई बार जन्म कुंडलियों का सही मिलान करने के चक्कर में लोग अच्छे रिश्तों को नजरअंदाज कर देते हैं और गलत जगह फैंस जाते हैं। कई बार जिसके बड़े भयंकर परिणाम होते हैं। भविष्य बतलाना केवल लोगों को बरगलाना व बेवकूफ बनाने का उपक्रम है और इसके परिणाम भी बहुत नुकसानदायक होते हैं। कोई विद्यार्थी पास होगा या फेल होगा ये कैसे बतलाया जा सकता है यदि वह परिश्रम करेंगी तो अवश्य पास होगा और यदि परिश्रम नहीं करेगा तो उसके पास होने की संभावना भी कम हो जाएगी। लेकिन यदि कोई भविष्यवक्ता इस प्रकार की पार्स या फैल होने की भविष्यवाणी करता है तो इसके दुष्परिणाम भी कम नहीं होते। यदि किसी अच्छे विद्यार्थी के विषय में भविष्यवाणी कर दी जाए कि वी पास होगा यो प्रथम स्थान प्राप्त करेगा ती संभव है कि इस भविष्यवाणी के पश्चात् बो विद्यार्थी परिश्रम करना ही छोड़ दे अथवा कम परिश्रम करें और पीस होने पर भी अच्छे अंक प्राप्त न कर सके। इसके विपरीत परिस्थितियों में भी कुछ ऐसा ही होने की संभावना बढ़ जाएगी इसमें संदेह नहीं। यदि किसी कमजोर विद्यार्थी के विषय में भविष्यवाणी कर दी जाए कि वो पास नहीं होगा तो इससे वो पूरी तरह से निराश हो जाएगा और वो पहले जितना परिश्रम करता था उतना परिश्रम करना भी छोड़ देगा और सचमुच फैल हो जाएगा जबकि वास्तविकता ये है कि परिश्रम करने र्को लिए प्रोत्साहित करके ऐसे विद्यार्थियों को भी सफलता के मार्ग पैशाअग्रसर किया जा सकता हैना कई व्यक्ति इन भविष्यवक्ताओं के चक्कर में पड़कर सही निर्णय लेने की क्षमता ही रखो बैठते हैं। कड़ी लोग इन तथाकथित भविष्यवक्ताओं से पूछे बिना कोई काम नहीं करते और उनके चक्कर में पड़कर काम करना ही छोड़ा देते हैं और इस तरह से कई बार अच्छे अवसर भी उनके हाथ से निकल जाते हैं। इस प्रकार से स्पष्ट हो जाता है कि भविष्य के विषय में बतलानाध्न केवल एक कपोलकल्पित विद्या है अपितु इसका दुष्प्रभाव भी कम नहीं पड़ती। ए यदि हमें पता चल जाए कि अमुक दिन परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु हो जाएगी तो उससे क्या होगा वैसे तो ये बतलाना संभव ही नहीं लेकिन यदि पता लगे भी जाए तो हम उसकी मृत्यु से पहले ही बहुत दुखी। हो जाएंगे। यदि हमें अपनी मृत्यु के समय के विषय में सही सही ज्ञात हो जाए तो हम उसी क्षण से जीवन के प्रति उदासीन हो जाएँगे जो किसी भी तरह से उचित नहीं कहाँ जा सकता, इसिलए हमें इस प्रकार की निरर्थको बातों अथवा अज्ञात भविष्य को जाननें की आवश्यकता बिलकुल भी नहीं होती। हमें भविष्य के लिए सही योजना तो बनानी चाहिए लेकिन अनिश्चित भविष्य की चिंता बिलकुल नहीं करनी चाहिए। यदि हमने अपना वर्तमान संवार लिया तो हमारा भविष्य तो अपने आप ही सँवरुजाएगति कुछ चालाक किस्म के लोग दूसरे लोगों को बेवकूफ बनाकर पैसे ऐंठने के लिए इस प्रकार की विद्या का प्रचार-प्रसार करने में लगे रहते हैं। हमें हर हाल में सकारात्मक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास कर अंधविश्वास और पाखण्ड से दूर रहना चाहिए अन्यथा हमारा पढाई लिखाई करना ही बेकार है।

95556-22323

भारत की दो महान शिक्षिकाएँ, सावित्रीबाई फुले और फातिमा शेख

–परवीन राही

सावित्रीबाई फुले को भारत की पहली महिला शिक्षिका माना जाता है और उनकी सहकर्मी फातिमा शेख भारत की पहली मुस्लिम महिला शिक्षिका । यह केवल पहली महिला शिक्षिकाओं के रूप में मान्यता प्राप्त करने की बात नहीं है, बल्कि दलित समुदायों की लड़कियों और बच्चों को शिक्षित करने के लिए उन्होंने जो संघर्ष किया, जिन कठिनाइयों का सामना किया और अपने मिशन के प्रति उनका दृढ़ संकल्प आज भी हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है।

सावित्री बाई का जन्म 3 जनवरी 1831 को महाराष्ट्र के एक पिछड़ी जाति (माली) में हुआ । नौ वर्ष की आयु में उनका विवाह ज्योतिराव फुले से हुआ। विवाह के समय सावित्री बाई पुरी तरह निरक्षर थीं, लेकिन ज्योतिराव शिक्षा को सामाजिक बुराइयों को दूर करने का एक महत्वपूर्ण साधन मानते थे। इसलिए उन्होंने घर से ही अध्यापन कार्य शुरू करने का निश्चय किया और स्वयं सावित्री बाई को पढ़ना-लिखना सिखाना शुरू किया। परिवार के सदस्यों ने उन्हें पढ़ाने का विरोध किया, लेकिन ज्योतिराव अपने इरादे पर अडिग रहे। वे उन्हें खेत में खाना देने आई को ही पढ़ाते रहते थे और जल्द ही सावित्री बाई ने भी पढ़ना-लिखना सीख लिया। कुछ और अध्ययन करने के बाद, उन्होंने दो शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम उत्तीर्ण किए। पहला उन्होंने एक अमेरिकी मिशनरी द्वारा संचालित संस्थान में और दूसरा पुणे के एक शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय में किया। इस प्रकार वे भारत की पहली प्रशिक्षित शिक्षिका बनीं।



शिक्षिका की शिक्षा पूरी करने के बाद, सावित्री बाई ने पुणे के पास महारवाड़ा में लड़कियों को पढ़ाना शुरू किया। इसके कुछ ही समय बाद, उन्होंने अपने पति और एक रिश्तेदार, सगुनबाई के साथ मिलकर अपना स्कूल खोला। उन्होंने अपने पाठ्यक्रम में पश्चिमी ज्ञान को शामिल किया और उनकी शिक्षण विधि इतनी अच्छी थी कि उनके पास पढ़ने वाले बच्चों की संख्या तेजी से बढ़ने लगी।

लेकिन सब कुछ इतना आसान नहीं था। फुले दंपति के स्कूल में पढ़ने वाली लड़कियाँ भी दलित वर्ग से थीं। प्राचीन धार्मिक ग्रंथों के अनुसार, लड़कियों और दलितों का पढ़ना-पढ़ना पाप है। इसलिए, जातिवाद और रूढ़िवादी विचारों से ग्रस्त स्थानीय लोगों ने उनका कड़ा विरोध करना शुरू कर दिया। यह विरोध केवल मौखिक नहीं था, बल्कि जब सावित्री बाई अपने स्कूल जाती थीं, तो वे लोग, विशेषकर उच्च वर्ग की महिलाएँ, उन पर गोबर, मिट्टी और पत्थर आदि फेंकती थीं। यह लगभग रोज़ की बात थी, इसलिए सावित्री बाई अपने साथ एक थैली में दूसरी साड़ी लेकर स्कूल जाती थीं और गंदी सोच वाले लोगों द्वारा गंदी की गई साड़ी को बदलकर साफ साड़ी पहन कर, पढ़ाने के कार्य में जुट जाती थी। जब इतने कोशिशों के बावजूद भी रूढ़िवादी विरोधी उन्हें स्कूल चलाने से नहीं रोक पाए, तो उन्होंने ज्योतिराव के पिता पर दबाव डालना शुरू कर दिया। अंततः, ज्योतिराव फुले के पिता ने उन्हें घर से निकाल दिया क्योंकि उनके अनुसार, लड़कियों और दलितों को शिक्षित करना शास्त्रों के विरुद्ध था।

घर से निकाले जाने के बाद, फुले दंपति ने ज्योतिराव के मित्र उस्मान शेख के घर में शरण ली। उस्मान शेख के घर में ही सावित्रीबाई को फातिमा बेगम शेख एक सहयोगी के रूप में मिली। फातिमा शेख पढ़ना-लिखना जानती थीं। उनके भाई उस्मान शेख ने उन्हें शिक्षक प्रशिक्षण पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने और सावित्रीबाई दोनों ने पुणे के नॉर्मल स्कूल से शिक्षक प्रशिक्षण पूरा किया और इस प्रकार फातिमा शेख भारत की पहली योग्य मुस्लिम महिला शिक्षिका बनीं। 1849 में, दोनों ने शेख के घर में एक स्कूल खोला।

1851 तक, उनके तीन स्कूलों में डेढ़ सौ बच्चे पढ़ते थे। चार वर्षों में, उन्होंने महाराष्ट्र में लड़कियों के लिए 18 स्कूल खोले। बाद में, उन्होंने महिलाओं और मजदूर बच्चों के लिए एक रात्रि विद्यालय भी खोला। उन्होंने गरीब बच्चों के लिए मुफ्त आवास और भोजन की व्यवस्था भी की।

ज्योतिराव ने एक साक्षात्कार में बताया कि उन्होंने बालिकाओं की शिक्षा को इतना महत्व क्यों दिया, ''मैं समझता हूँ कि बच्चे के जीवन को बेहतर बनाने में माँ की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। इसलिए, जो भी इस देश का कल्याण और प्रगति चाहते हैं, उन्हें महिलाओं की स्थिति सुधारने और उन्हें शिक्षित करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। इसी विचार से मैंने बालिका विद्यालय शुरू किया, लेकिन मेरी जाति के लोगों को यह बात पसंद नहीं आई कि मैं लड़कियों को पढ़ा रहा हूँ और मेरे पिता ने ही मुझे घर से निकाल दिया। कोई भी विद्यालय के लिए जगह देने को तैयार नहीं था और न ही हमारे पास स्कूल भवन निर्माण के लिए धन था। हमारे लोग भी अपने बच्चों को पढ़ने के लिए भेजने को तैयार नहीं थे, लेकिन हमने हार नहीं मानी और रंभा महार, लाहूजी राघव और कुछ अन्य लोगों ने हमारी जाति के लोगों को शिक्षा के लाभों के बारे में समझाया।''

सावित्री बाई और उनके पति का संघर्ष केवल महिलाओं और दलितों की शिक्षा तक ही सीमित नहीं था। 1873 में उन्होंने %सत्य शोधक समाज% की स्थापना की, जिसका मुख्य उद्देश्य जाति और धर्म की बाधाओं को तोड़कर सामाजिक समानता लाना था। उन्होंने सत्य शोधक विवाहों की एक श्रृंखला शुरू की, जिसमें विवाह सरल रीति-रिवाजों के साथ बिना पुजारियों के संपन्न किए जाते थे और दंपत्ति से शिक्षा और सामाजिक समानता के लिए काम करने का वादा लिया जाता था। विधवा विवाह और अंतरजातीय विवाहों को प्रोत्साहित किया गया। बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या और सती प्रथा के विरुद्ध अभियान चलाए गए।

उस समय विधवा महिलाओं की हालत बहुत दयनीय थी, उनके सिर मुंडवा दिए जाते थे। सावित्री बाई ने इस प्रथा के खिलाफ नाइयों को संगठित किया और उनसे विधवाओं के सिर मुंडवाने के काम का बाईकाट करवाया।

जब 1890 में ज्योतिराव फुले का देहांत हुआ, तो सावित्री बाई ने भारी विरोध के बावजूद स्वयं चिता को अग्नि देकर नया साहस दिखाया। इसके बाद उन्होंने अपना सारा समय सत्य शोधक समाज की गतिविधियों में समर्पित कर दिया। वे एक कुशल कवियत्री भी थीं, जिनकी दो काव्य पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

1897 में महाराष्ट्र में प्लेग की महामारी फैल गई। सावित्री बाई ने अपने दत्तक चिकित्सक पुत्र की सहायता से सेवा में हाथ बटाया। उन्होंने अपना सारा समय और संसाधन प्लेग पीड़ितों की सेवा में समर्पित कर दिए। एक दिन जब उन्होंने स्वयं प्लेग से पीड़ित एक बच्चे को उठाकर अस्पताल ले गईं, तो वे भी प्लेग की चपेट में आ गईं और 10 मार्च 1897 को उनका निधन हो गया। उनके सम्मान में, पुणे विश्वविद्यालय का नाम 2015 में बदलकर सावित्री बाई फुले पुणे विश्वविद्यालय कर दिया गया और महाराष्ट्र में उनका जन्मदिन %बालिका दिवस% के रूप में मनाया जाता है।

इस प्रकार, जहां सावित्री बाई का लड़कियों और दलित बच्चों को शिक्षित करने का कार्य बहुत साहसी था, वहीं शोषित वर्गों के प्रति उनकी सेवा और समाज में गहराई से जड़ें जमा चुकी गलत परंपराओं के खिलाफ उनका संघर्ष भी अनुकरणीय था।

मैं अब चुप ही रहूंगा अब यही मेरी भाषा है मेरी खामोशी ही मेरा प्रतिरोध है

जब सब बोल रहे हों गर्जनाद कर रहे हों हर दिशा में शोर हो सामूहिक अट्टहास हो भीड़ का गणराज्य हो तब ठहर जाना ही श्रेयकर है

स्वर, व्यंजन, वर्ण, शब्द, अर्थ से आकार लेती भाषा जब चुकने लगे अपना ही मूल जब बोले जाने में कुछ भी कहा जाना शामिल न हो तब चुप हो जाना ही बेहतर है

जब जो नहीं होना था उसी का उत्सव मनाया जा रहा हो और जो होना था उसकी विरुद्धावली गाई जा रही हो तब समझ लेना चाहिए थोड़ा थम जाना ही हितकर है

कहने में जोखिम है कहने का जोखिम उठाकर भी हम कहते हैं कि कोई सुने पर शोर से बहरे कानों में जब कहना शोकगीत बन उतरे तब कुछ न कहना ही प्रियकर है

इसलिए मैं अब चुप ही रहूंगा अब यही मेरी भाषा है मेरी खामोशी ही मेरा प्रतिरोध है।

मृत्युंजय प्रभाकर

सिजोफ्रेनिया : मन-मन के सवाल

–डॉ नरेंद्र दोभोलकर, डॉ हामिद दाभोकर

तर्कशील पथ के जनवरी-फरवरी के अंक में आपने शिजोफ्रेनिया क्या है? उसके अलग-अलग लक्षण क्या हैं ? उसके बारे में पढ़ा था, इस अंक में इस मनोविकार के बारे में जो अलग-अलग सवाल लोग पूछते हैं, उनके उत्तर दिए जा रहें हैं।

मैंने सुना है कि सिजोफ्रेनिया की बीमारी कभी भी ठीक नहीं होती है। क्या इस बीमारी का कुछ इलाज है?

सिजोफ्रेनिया एक लंबी अवधि की बीमारी है। किंतु आज उस बीमारी के लिए असरदार दवाइयाँ उपलब्ध हैं। सन 1953 में भ्रम-विभ्रम की उग्रता कम करनेवाली दवाइयों की खोज हुई थी, तब से विगत साठ साल की अवधि में सिजोफ्रेनिया की बीमारी पर असरदार दवाओं की भी खोज हुई है। इनमें कुछ पुरानी दवाइयाँ हैं जो भ्रम-विभ्रम होने के मुख्य कारण, मस्तिष्क में स्थित डोपामिन द्रव की बढ़ी हुई मात्रा को नियंत्रित करती हैं। इससे मरीज के संशय बढ़ना, कानों में आवाज गूँजना ऐसे सामान्य लक्षण नियंत्रित हो सकते हैं। किंतु इन दवाइयों के कुछ दुष्परिणाम थे, जिनमें कंपवात, हावभाव में धीमापन आदि थे। सिजोफ्रेनिया के लिए उपयुक्त कुछ नई दवाइयों में ये दुष्परिणाम बड़ी मात्रा में कम हुए, साथ ही ये नई दवाइयाँ मस्तिष्क के विशिष्ट हिस्से में स्थित सिरोटोनिन की मात्रा पर भी उचित असर करती हैं। इससे भ्रम-विभ्रम कम होने के साथ ही बीमारी के निगेटिव लक्षणों यानी अपनी देखभाल न करना, भावनिक क्षमता कम होना आदि पर भी ये असरदार साबित हुई हैं। दवाइयों के साथ सिजोफ्रेनिया के मरीज के लिए कुछ मनोसामाजिक इलाज जरूरी हैं। सबसे पहले मरीज और उसके परिवारजनों को इस बीमारी का स्वरूप समझाना चाहिए, साथ ही मरीज में दिखाई देनेवाले लक्षण टोना टोटका, भानमती नहीं हैं यहभी समझाना चाहिए। यह बीमारी लंबी अवधि तक चलनेवाली है इसलिए दवाओं की उपयुक्तता, नियमितता आदि की दृष्टि से भी समुपदेशन जरूरी है। हमारे समाज में इस बीमारी की ओर अपराधबोध की भावना से देखा जाता है। यह दृष्टिकोण इलाज के लिए बाधा बनता है। इसलिए इस दृष्टिकोण का कोई असर मरीज और रिश्तेदारों पर न पड़े इस पर ध्यान देना और उन्हें सक्षम बनाना इलाज की सफलता की दृष्टि से जरूरी है।

निगेटिव लक्षणों से ग्रस्त मरीज को खुद की देखभाल अच्छी तरह करना, साथ ही अपनी भावनाएँ उचित प्रकार से व्यक्त करना जैसी छोटी-छोटी बातों का भी उचित प्रशिक्षण देना पड़ता है।

कई बार सिजोफ्रेनिया के लक्षण उग्र हुए तो मरीज को अस्पताल में दाखिल कराके उसका इलाज कराना जरूरी होता है। उचित इलाज से सिजोफ्रेनिया के अधिकांश मरीज समाज में घुलमिलकर इलाज ले सकते हैं।

मेरे पिताजी को सिजोफ्रेनिया की बीमारी थी। उन्हें जो तकलीफ थी वह हमने अपनी आँखों से देखी है। मेरा लड़का रोहित अब 17 साल का है। वह इधर पिछले पाँच-छः महीनों से विक्षिप्त आचरण कर रहा है। किसी भी बातचीत की तरफ उसका ध्यान नहीं होता है और घंटे दो घंटे तक अकेला ही कमरे में बैठा रहता है। मुझे उसकी चिंता लग रही है। क्या सिजोफ्रेनिया की बीमारी आनुवंशिक है?

सिजोफ्रेनिया जैविक, मानसिक और सामाजिक इन तीनों प्रकार के कारणों या मनोविकारों का एकत्रित परिणाम होता है।सिजोफ्रेनिया में जैविक कारणों का प्रतिशत ज्यादा रहता है। जैविक कारणों में आनुवंशिकता एक महत्त्वपूर्ण घटक है। किसी व्यक्ति के नजदीकी रिश्तेदारों में कोई सिजोफ्रेनिया का मरीज है तो सामान्य व्यक्ति की तुलना में उसे सिजोफ्रेनिया की संभावना ज्यादा होती है। ऐसी संभावनाओं की मात्रा सिजोफ्रेनिया के मरीजों के करीबी रिश्ते के अनुपात में बढ़ती है। जैसे, मरीज के एक अभिभावक को सिजोफ्रेनिया है तो इसका मतलब 25 प्रतिशत, दोनों अभिभावकों को यह बीमारी है, ऐसे में 50 प्रतिशत, इस मात्रा में यह बीमारी मरीज में देखी जा सकती है। आनुवंशिकता के साथ ही मस्तिष्क के डोपामिन की मात्रा में वृद्धि होना और सिरोटोनिन द्रव की मात्रा कम होना यह भी

सिजोफ्रेनिया में दिखाई देता है।

मस्तिष्क के फ्रंटल लोब (आगे का हिस्सा) और टेंपोरल लोब (बाजू का हिस्सा) इन दो भागों में सिजोफ्रेनिया की बीमारी में दोष पाया जाता है। संक्षेप मेंकहा जाए तो आपके लड़के के वर्तन में हुए बदलाव को लेकर आपकी चिंता जायज है।

मानसिक विकारों का निदान लक्षणों के आधार पर किया जाने के कारण आपके लड़के की मनोविकार विशेषज्ञ से अच्छी जाँच कराके बीमारी का निदान करना जरूरी है। किसी भी मनोविकार का निदान जितनी जल्दी होता है, इलाज का परिणाम जल्द हो सकता है।

मुझे विगत पाँच-छः साल से सिजोफ्रेनिया की बीमारी है। लेकिन दवाइयों के कारण मेरी बीमारी अच्छी तरह से नियंत्रण में है। मैं सरकारी कार्यालय में काम करता हूँ, वहाँ लोगों को समझ में भी नहीं आता कि मुझे मनोविकार है, किंतु मुझे हमेशा डर लगता है कि मैं मनोरोगी हूँ यह लोगों को पता चला तो मुझे नौकरी से निकाल दिया जाएगा।

सिजोफ्रेनिया ही नहीं अन्य सभी मनोविकारों के संदर्भ में हमारे समाज में बड़ी मात्रा में अपराधबोध का भाव दिखाई देता है। जिसे मनोविकार हुआ है उससे कोई बहुत बड़ा पाप हुआ है ऐसा लोग समझते हैं। समाज का मनोविकार की ओर देखने का दृष्टिकोण बहुत संकुचित होने के कारण स्वयं मरीज और उसके रिश्तेदार भी सालों तक इस अपराधबोध के बोझ तले दबे होते हैं। कई बार किसी बीमारी का निदान मनोविकार के रूप में होगा इस डर से लोग बीमारी के लक्षण दिखाई देने के बावजूद डॉक्टर के पास जाना टालते हैं। इस कारण इलाज के लिए देर होती है, परिणामस्वरूप बीमारी की जटिलता बढ़ती है।

यह अपराधबोध की भावना मुख्य रूप से तीन स्तर पर कार्य करती है। पहला है सामाजिक स्तर। इस स्तर पर सामान्यतः समाज मनोविकारग्रस्त मरीज की ओर अपराधी भावना से देखता है। इसका परिणाम मरीज के कुछ सामाजिक अधिकार नकारने में होता है। जैसे, नौकरी का अधिकार या सामाजिक उत्सव, पर्व, त्योहारों में विकारग्रस्त व्यक्ति के सहभाग का अधिकार। अपराधबोध की भावना का दूसरा स्तर है रिश्तों के संबंध में। इस स्तर पर घटित बदलाव बिलकुल साधारण बातों से दिखाई देते हैं। किसी शारीरिक बीमारी के मरीज से अस्पताल में इलाज के समय ही बहुत लोग मिलने आते हैं। किंतु मनोविकारग्रस्त मरीज के इलाज लेते समय और बाद में भी मिलने को लोग टालते हैं। मनोविकारग्रस्त व्यक्ति की शादी तो दूर, जिस परिवार में मनोविकारग्रस्त व्यक्ति है ऐसे परिवार के साथ रिश्ता जोड़ने को भी लोग टालते हैं। इन तमाम बातों के परिणामस्वरूप तीसरे स्तर पर मरीज के मन में खुद के प्रति अपराधबोध की भावना तैयार होती है। शारीरिक दृष्टि से बीमार व्यक्ति का कोई भी पारिवारिक सदस्य सुधार के लिए कुछ न कुछ मददकरता है, किंतु मानसिक विकारग्रस्त व्यक्ति खुद को दोष देता रहता है। खुद को पापी, दोषी, अपराधी मानकर इस भावना के बोझ से कई मनोविकारग्रस्त व्यक्ति सालोसाल दबे रहते हैं।

मनुष्य का शरीर जिस तरह बीमार होता है, वैसे ही उसका मन भी बीमार होता है। इसलिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसमें अपराधबोध या लघुता महसूस हो ऐसा कुछ भी नहीं, इसलिए मरीज को अपने आपको अपराधी मानना नहीं चाहिए। पारिवारिक तथा सामाजिक स्तर पर अपराधबोध की भावना कम हो इसके लिए मनोविकारों के संदर्भ में मरीज के रिश्तेदारों और समाज का हमेशा प्रबोधन करना जरूरी है।

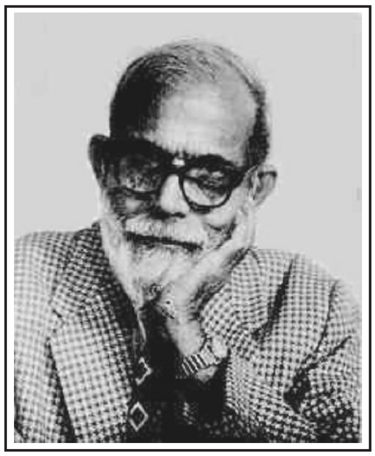
इसके बाद भी अगर कोई हमारी बीमारी के कारण हमसे लघुता की भावना से बर्ताव कर रहा है तो उस व्यक्ति के साथ सुसंवाद प्रस्थापित करके उसे बीमारी का स्वरूप समझाना यह भी एक महत्त्वपूर्ण विकल्प हो सकता है। अगर सहयोगी कर्मचारी या समाज जानबूझकर तकलीफ दे रहा है तो उसको नजरअंदाज करना भी फायदेमंद हो सकता है।

कानूनन मनोविकारग्रस्त व्यक्ति को सरकारी नौकरी से निकाला नहीं जा सकता। मनोविकार का उस व्यक्ति की कार्यक्षमता पर अगर कोई असर नहीं हो रहा है तो ऐसा व्यक्ति अपना वही पद और कार्य संभाल सकता है। किंतु मनोविकार के कारण उस व्यक्ति की कार्यक्षमता कम हुई तो उस व्यक्ति की क्षमता के अनुसार उसे काम देना सरकार के लिए अनिवार्य है। इसलिए बीमारी के बोझ और नौकरी की चिंता न करते हुए आप काम कर सकते हैं।

(शेष अगले अंक में)

अब्राहम टी. कावूर

भारत में अंधविश्वास, जादू-टोना और तंत्र-मंत्र जैसी कुप्रथाएँ आज भी कई लोगों की मानसिकता का हिस्सा हैं। इनसे समाज में डर, धोखा और अज्ञानता फैलती है। ऐसे समय में कुछ लोग तर्क और विज्ञान की मशाल लेकर समाज में जागरूकता फैलाने का काम करते हैं। अब्राहम थॉमस कावूर (Abraham T. Kovoor) ऐसे ही एक महान तर्कशील, वैज्ञानिक विचारक और निडर समाज सुधारक थे, जिन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग अंधविश्वासों का पर्दाफ़ाश करने और विज्ञान का प्रचार करने में समर्पित किया।



अब्राहम टी. कावूर का जन्म 10 अप्रैल 1898 को श्रीलंका में हुआ था। वे एक ईसाई परिवार में पले-बढ़े, परंतु समय के साथ उन्होंने धार्मिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों से दूरी बना ली। वे शिक्षा से जीवविज्ञानी (Biologist) थे और लंबे समय तक प्रोफेसर रहे। परंतु बाद में उन्होंने महसूस किया कि समाज को सबसे अधिक नुकसान धार्मिक अंधविश्वास और जादू-टोने से हो रहा है। इसीलिए उन्होंने ठान लिया कि वे वैज्ञानिक सोच का प्रचार करेंगे।

कावूर ने पूरे दक्षिण भारत और श्रीलंका में अंधविश्वासों, बाबाओं, तांत्रिकों और चमत्कारी दावों का पर्दाफ़ाश करने के लिए अभियान चलाया। वे कहते थे–

''दुनिया में कोई चमत्कार नहीं होता, हर घटना का एक वैज्ञानिक कारण होता है।''

उन्होंने ऐसे कई ''चमत्कारिक लोगों'' को चुनौती दी जो दावा करते थे कि वे ईश्वर से बात कर सकते हैं, आत्माओं को बुला सकते हैं या दैवी शक्तियाँ रखते हैं।

कावूर ने एक बहुत प्रसिद्ध चुनौती इनाम की घोषणा की थी –

''जो भी व्यक्ति यह साबित कर दे कि उसके पास कोई अलौकिक या दैवी शक्ति है, उसे मैं एक लाख रुपये का इनाम दूँगा।''

यह इनाम उन्होंने सार्वजनिक रूप से कई वर्षों तक रखा, परंतु कोई भी साधु, बाबा या तांत्रिक कभी भी इसका दावा साबित नहीं कर सका। यह चुनौती उनके साहस और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रतीक थी।

कावूर ने यह साबित किया कि कई ''चमत्कार'' केवल हाथ की सफ़ाई, मनोवैज्ञानिक चालें या लोगों की अज्ञानता का फायदा होते हैं।

उदाहरण के लिए –

कुछ लोग दावा करते थे कि वे आत्मा बुला सकते हैं, पर कावूर ने प्रयोगों द्वारा दिखाया कि यह मात्र दर्पण, धुआँ और भ्रम का खेल है।

उन्होंने नींबू-टोटके, भूत-प्रेत, चमत्कारी जल, दिव्य राख जैसे अंधविश्वासों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया और साबित किया कि इनका कोई अलौकिक आधार नहीं।

उन्होंने लोगों को समझाया कि भविष्यवाणी, कुंडली या ग्रह-नक्षत्र मनुष्य के जीवन को नियंत्रित नहीं करते – यह सब अंधविश्वास हैं, जिनका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

"Begone Godmen" और "Miracles E&posed" किताबों में

कावूर ने अपने अनुभवों और जांचों को लिखा। इन पुस्तकों में उन्होंने सैकड़ों ऐसे ''चमत्कारिक'' व्यक्तियों और घटनाओं के पीछे छिपे वैज्ञानिक सत्य को उजागर किया।

इन किताबों का प्रभाव इतना व्यापक था कि भारत और श्रीलंका में हजारों लोगों ने इनसे प्रेरणा लेकर वैज्ञानिक सोच और तर्कशीलता को अपनाया।

अब्राहम कावूर का उद्देश्य केवल अंधविश्वासों को तोड़ना नहीं था, बल्कि लोगों में सोचने और प्रश्न करने की प्रवृत्ति पैदा करना था। वे कहते थे –

''किसी बात को सिर्फ इसलिए मत मानो क्योंकि वह धर्म या परंपरा कहती है – पहले उसका कारण खोजो।''

उन्होंने बच्चों और युवाओं को विज्ञान की ओर आकर्षित किया, उन्हें प्रयोगों द्वारा समझाया कि हर घटना का तर्कसंगत कारण होता है।

उनकी निर्भीकता से कई ढोंगी बाबा, धार्मिक संगठन और तथाकथित चमत्कारी लोग नाराज़ रहते थे। उन्हें कई बार धमकियाँ भी मिलीं, परंतु कावूर कभी नहीं डरे। उनकी निडरता ने वैज्ञानिक और तर्कशील आंदोलन को नई दिशा दी।

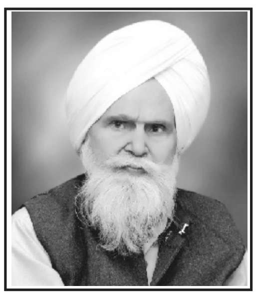
अब्राहम टी. कावूर का निधन 18 सितंबर 1978 को हुआ, परंतु उनका वैज्ञानिक और मानवतावादी विचार आज भी जीवित है।

अब्राहम टी. कावूर ने अपने जीवन से यह सिद्ध कर दिया कि विज्ञान ही सच्चा मार्गदर्शक है और अंधविश्वास मानवता का शत्रु। उन्होंने लोगों को सिखाया कि सवाल पूछना अपराध नहीं, बल्कि ज्ञान की शुरुआत है। उनके प्रयासों से हज़ारों लोग तांत्रिकों, ज्योतिषियों और बाबाओं के धोखे से बाहर निकला।

कावूर वास्तव में आधुनिक भारत के उन योद्धाओं में से एक थे जिन्होंने समाज को अंधकार से निकालकर विज्ञान की रोशनी की ओर अग्रसर किया।

मृतक शरीर प्रदान कर–समाज सेवा व वैज्ञानिक चेतना की मिसाल पेश की

रिटायर प्रिंसिपल गुरतेज सिंह ने अपने जीवन के बाद भी समाज के काम आने का निर्णय लेते हुए शरीरप्रदान का संकल्प लिया हुआ था। यह कदम न केवल मानवीय संवेदनशीलता का प्रतीक है, बल्कि चिकित्सा शिक्षा और वैज्ञानिक शोध के क्षेत्र के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है।



गुरतेज सिंह लंबे समय से तर्कशील सोसाइटी कालांवाली,समाज सेवा और जनहित के कार्यों से जुड़े रहे हैं। उन्होंने जीवन भर लोगों को जागरूक करने का काम किया और अंतत: अपने शरीर को भी मानवता के नाम समर्पित करने का अपनी पत्नी सुरजीत कौर व अपने परिवार की सहमति से निर्णय लिया हुआ था।

गत 30 जनवरी को 85 वर्षीय गुरतेज सिंह की मृत्यु की जानकारी व उनकी अंतिम इच्छा शरीरप्रदान के बारे में उनके बेटे एन. आर.आई. कमलजीत सिंह लाली ने तर्कशील जगदीश सिंहपुरा को दी। तत्पश्चात तर्कशील इकाई कालांवाली के सदस्यों ने सहारा क्लब की सहायता से मृत शरीर को ऐमज़ मेडिकल कालज बठिंडा पहुंचाया गया। उनकी बेटियां परमजीत कौर, सरबजीत कौर ने अर्थी को कंधा दिया तथा कालांवाली शहर की गलियों में गुजरते समय वैज्ञानिक चेतना के नारे लगाते हुए चौक पर शोक सभा आयोजित की गई जिसमें तर्कशीलों द्वारा किए जा रहे शरीर प्रदान के महत्त्व पर जानकारी दी गई।

तर्कशील इकाई कालांवाली के मुखिया शमशेर चोरमार ने बताया कि मृत्यु के बाद शरीर को जलाने या दफनाने की बजाय यदि वह मेडिकल शिक्षा और अनुसंधान के काम आ जाए, तो इससे बड़ी सेवा कोई नहीं हो सकती।

मृतक शरीर प्रदान से मेडिकल कॉलेजों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को मानव शरीर की संरचना को समझने का वास्तविक अवसर मिलता है। इससे भविष्य के डॉक्टर अधिक कुशल बनते हैं और समाज को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ मिलती हैं, लेकिन इस दिशा में जागरूकता की कमी और सामाजिक झिझक के कारण अभी भी बहुत कम लोग इस दिशा में आगे आते हैं।

जगदीश सिंहपुरा ने बताया कि ऐसे उदाहरण समाज में सकारात्मक सोच को जन्म देते हैं। यह संदेश भी मिलता है कि सेवा केवल जीवनकाल तक सीमित नहीं – इंसान मृत्यु के बाद भी मानवता के काम आ सकता है। जरूरत है कि सरकार, सामाजिक संस्थाएँ और शिक्षण संस्थान मिलकर शरीर प्रदान के बारे में व्यापक जागरूकता अभियान चलाएँ।

निस्संदेह, इस प्रकार का निर्णय साहस, संवेदना और दूरदर्शिता का प्रतीक है। यह हम सबको प्रेरित करता है कि हम भी समाज के लिए कुछ स्थाई और सार्थक करने का विचार करें।

इस अवसर पर सुरेंद्रपाल सिंह साथी ने परिवार के इस कार्य के लिए प्रशंसा की तथा परिवार जनों का हौंसला बढ़ाया। हरदेव अग्रोइया, जसवंत पेंटा, नरेश महेश्वरी,मास्टर महेंद्रपाल आदि शामिल थे।

अजायब जलालाना

गांव थानोद में अंधविश्वास के विरुद्ध व्याख्यान

-डा.दिनेश मिश्र

देश में अंधविश्वास और सामाजिक कुरीतियों के कारण अक्सर अनेक निर्दोष लोगों को प्रताड़ना का शिकार होना पड़ता है, जिससे निदान के लिए आम जन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास की अत्यंत आवश्यकता है।

कुछ लोग अंधविश्वास के कारण हमेंशा शुभ-अशुभ के फेर में पड़े रहते है। यह सब हमारे मन का भ्रम है। शुभ-अशुभ सब हमारे मन के अंदर ही है। किसी भी काम को यदि सही ढंग से किया जाये, तो सफलता जरूर मिलती है। 18वीं सदी की मान्यताएं व कुरीतियां अभी भी जड़े जमायी हुई है जिसके कारण जादू-टोना, डायन, टोनही, बलि व बाल विवाह जैसी परंपराएं व अंधविश्वास आज भी वजूद में है। जिससे प्रतिवर्ष अनेक मासूम जिन्दगियां तबाह हो रही है। उन्होंने कहा कि ऐसे में वैज्ञानिक जागरूकता को बढ़ाने और तार्किक सोच को अपनाने की आवश्यकता है। अंधविश्वास, कुरीतियों के विरूद्ध समाज के साथ विद्यार्थियों को भी एकजुट होकर आगे आना चाहिए।

प्राकृतिक आपदायें हर गांव में आती है, मौसम परिवर्तन व संक्रामक बीमारियां भी गांव को चपेट में लेती है, वायरल बुखार, मलेरिया, दस्त जैसे संक्रमण भी सामूहिक रूप से अपने पैर पसारते है। ऐसे में ग्रामीण अंचल में लोग कई बार बैगा-गुनिया के परामर्श के अनुसार विभिन्न टोटकों, झाड़-फूंक के उपाय अपनाते है। जबकि प्रत्येक बीमारी व समस्या का कारण व उसका समाधान अलग-अलग होता है, जिसे विचारपूर्ण तरीके से ढूंढा जा सकता है। बिजली का बल्ब फ्यूज होने पर उसे झाड़-फूंक कर पुनः प्रकाश नहीं प्राप्त कर सकता न ही मोटर साईकल, ट्रांजिस्टर बिगड़ने पर उसे ताबीज पहना करसुधारा जा सकता है। रेडियो, मोटर सायकल, टी.वी., ट्रेक्टर की तरह हमारा शरीर भी एक मशीन है जिसमें बीमारी आने पर उसके विशेषज्ञ के पास ही जांच व उपचार होना चहिए। सामाजिक कुरीतियों पर बच्चों को भूत-प्रेत, जादू-टोने के नाम से नहीं डराया जाए क्योंकि इससे उनके मन में काल्पनिक डर बैठ जाता है जो उनके मन में ताउम्र बसा होता है। बल्कि उन्हें आत्मविश्वास, निडरता के किस्से कहानियां सुनानी चाहिए। जिनके मन में आत्मविश्वास व निर्भयता होती है उन्हें न ही नजर लगती है और न कथित भूत-प्रेत बाधा लगती है। यदि व्यक्ति कड़ी मेहनत, पक्का इरादा का काम करें तो कोई भी ग्रह, शनि, मंगल, गुरू उसके रास्ता में बाधा नहीं बनता।

देश में जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, झाड़-फूँक की मान्यताओं एवं डायन/टोनही के संदेह में प्रताडऩा तथा सामाजिक बहिष्कार के मामलों की भरमार है। डायन के सन्देह में प्रताडऩा के मामलों में अंधविश्वास व सुनी-सुनाई बातों के आधार पर किसी निर्दोष महिला को डायन घोषित कर दिया जाता है तथा उस पर जादू-टोना कर बच्चों को बीमार करने, फसल खराब होने, व्यापार-धंधे में नुकसान होने के कथित आरोप लगाकर उसे तरह-तरह की शारीरिक व मानसिक प्रताडऩा दी जाती है। कई मामलों में आरोपी महिला को गाँव से बाहर निकाल दिया जाता है। बदनामी व शारीरिक प्रताडऩा के चलते कई बार पूरा पीड़ित परिवार स्वयं गाँव से पलायन कर देता है। कुछ मामलों में महिलाओं की हत्याएँ भी हुई है अथवा वे स्वयं आत्महत्या करने को मजबूर हो जाती है। जबकि जादू-टोना के नाम पर किसी भी व्यक्ति को प्रताड़ित करना गलत तथा अमानवीय है। वास्तव में किसी भी व्यक्ति के पास ऐसी जादुई शक्ति नहीं होती कि वह दूसरे व्यक्ति को जादू से बीमार कर सके या किसी भी प्रकार का आर्थिक नुकसान पहुँचा सके। जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, टोनही, नरबलि के मामले सब अंधविश्वास के ही उदाहरण हैं। महाराष्ट्र छत्तीसगढ़,मध्यप्रदेश ओडीसा, झारखण्ड, बिहार, आसाम सहित अनेक प्रदेशों में प्रतिवर्ष टोनही/डायन के संदेह में निर्दोष महिलाओं की हत्याएँ हो रही है जो सभ्य समाज के लिये शर्मनाक है। नेशनल क्राईम रिकॉर्ड ब्यूरो ने सन् 2001 से 2015 तक 2604 महिलाओं की मृत्यु डायन प्रताडऩा के कारण होना माना है। जबकि वास्तविक संख्या इनसे बहुत अधिक है अधिकतर मामलों में पुलिस रिपोर्ट ही नहीं हो पातीं। हमने जब आर टी आई से जानकारी प्राप्त की तब हमें बहुत ही अलग आंकड़े प्राप्त हुए। झारखंड, बिहार, छत्तीसगढ़, ओडिशा में, राजस्थान, आसाम में हजारों मामलों की प्रमाणिक जानकारी है। जब कुछ राज्यों से जवाब ही नहीं मिला। पर

समाचार पत्रों में लगभग सभी राज्यों से ऐसी घटनाओं के समाचार मिलते हैं।

आम लोग चमत्कार की खबरों के प्रभाव में आ जाते हैं। हम चमत्कार के रूप में प्रचारित होने वाले अनेक मामलों का परीक्षण व उस स्थल पर जाँच भी समय-समय पर करते रहे हैं। चमत्कारों के रूप में प्रचारित की जाने वाली घटनाएँ या तो सरल वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के कारण होती है तथा कुछ में हाथ की सफाई, चतुराई होती है जिनके संबंध में आम आदमी को मालूम नहीं होता। कई स्थानों पर स्वार्थी तत्वों द्वारा साधुओं को वेश धारण चमत्कारिक घटनाएँ दिखाकर ठगी करने के मामलों में वैज्ञानिक प्रयोग व हाथ की सफाई के ही करिश्में थे।

भूत-प्रेत जैसी मान्यताओं का कोई अस्तित्व नहीं है। भूत-प्रेत बाधा व भुतहा घटनाओं के रूप में प्रचारित घटनाओं का परीक्षण करने में उनमें मानसिक विकारों, अंधविश्वास तथा कहीं-कहीं पर शरारती तत्वों का हाथ पाया गया। आज टेलीविजन के सभी चैनलों पर भूत-प्रेत, अंधविश्वास बढ़ाने वाले धारावाहिक प्रसारित हो रहे हैं। ऐसे धारावाहिकों का न केवल जनता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है बल्कि छोटे बच्चों व विद्यार्थियों पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है। इस संबंध में हमने राष्ट्रीय स्तर पर एक सर्वेक्षण कराया है जिसमें लोगों ने ऐसे सीरीयलों को बंद किये जाने की मांग की है। ऐसे सीरीयलों को बंद कर वैज्ञानिक विकास व वैज्ञानिक दृष्टिकोण बढ़ाने व विज्ञान सम्मत अभिरूचि बढ़ाने वाले धारावाहिक प्रसारित होना चाहिए। भारत सरकार के दवा एवं चमत्कारिक उपचार के अधिनियम 1954 के अंतर्गत झाड़-फूँक, तिलस्म, चमत्कारिक उपचार का दावा करने वालों पर कानूनी कार्यवाही का प्रावधान है। इस अधिनियम में पोलियो, लकवा, अंधत्व, कुष्ठरोग, मधुमेह, रक्तचाप, सर्पदंश, पीलिया सहित 54 बीमारियाँ शामिल हैं। लोगों को बीमार पडने् पर झाड़-फूँक, तंत्र-मंत्र, जादुई उपचार, ताबीज से ठीक होने की आशा के बजाय चिकित्सकों से सम्पर्क करना चाहिए क्योंकि बीमारी बढ़ जाने पर उसका उपचार खर्चीला व जटिल हो जाता है।

अंधविश्वास, पाखंड एवं सामाजिक कुरीतियों का निर्मूलन एक श्रेष्ठ सामाजिक कार्य है जिसमें हाथ बंटाने हर नागरिक को आगे आना चाहिए। ग्रामीणों व छात्रों के समक्ष वैज्ञानिक अभिक्रियाओं पर आधारित ट्रिक्स का प्रदर्शन किया गया। ग्रामीणों एवम छात्रों के प्रश्नों एवम उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया गया. कार्यक्रम को अनंत पांडे ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन व आभार प्रदर्शन डॉ मल्लिका सूर ने किया। ग्राम थानौद में अन्धविश्वास एवं टोनही प्रताड़ना के खिलाफ़ अभियान चलाया गया, छात्रों एवं ग्रामीणों को पंपलेट किताबें प्रदान की गईं।

छत्तीसगढ़

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक बैठक एवं सेमिनार 25 जनवरी 2026 को सम्पन्न

यमुनानगर में होटल 7C में तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक मीटिंग को इस बार मास्टर बलवंत सिंह एवं आर.पी.गांधी की स्मृति को समर्पित किया गया। इस अवसर पर एक सेमिनार का आयोजन भी किया गया जिसमें स्थानीय इकाई के सदस्यों के अतिरिक्त राज्य भर से सौ से भी ज्यादा तर्कशील कार्यकर्ताओं एवं आम लोगों ने भाग लिया।इस सेमिनार का आयोजन यमुनानगर इकाई द्वारा किया गया था । मंच संचालन यमुनानगर इकाई के सचिव राजेश बिंद्रा ने किया एवं आने वाले सदस्यों का स्वागत किया।कार्यक्रम के प्रारम्भ में तर्कशील पथ पत्रिका के संपादक गुरमीत अंबाला ने अपने वक्तव्य में स्मृति शेष साथियों श्री आर पी गांधी एवं मास्टर बलवंत सिंह के योगदान को रेखांकित किया कि दोनों साथियों ने तर्कशील आंदोलन को राज्य में खड़े करने में अहम भूमिका निभाई। जनवादी लेखक संघ के राज्य-अध्यक्ष मास्टर जयपाल ने नरेन्द्र दाभोलकर, कलबुर्गी, पानसरे और गौरी लंकेश की शहादत को याद करते हुए तर्कशील आंदोलन को मजबूत करने का आह्वान किया उन्होंने अंध विश्वास के खिलाफ अपनी कविताओं का पाठ भी किया। तर्कशील कार्यकर्ता एवं किसान नेता रामेश्वर आजाद ने तर्कशील आंदोलन के सामने चुनौतियों पर अपनी बात रखी। संजीव वालिया का कहना था कि तर्कशीलता के फैलाव के लिए हर स्तर पर कार्यक्रम रखे जाने चाहिए। कांग्रेस पार्टी की जिला यमुनानगर की सोशल मीडिया

प्रभारी मोनिका डुमरा ने अपने जीवन में अंधविश्वासों से तर्कशील सोसायटी के माध्यम से निकलने के सफर को सामने रखा।कार्यक्रम के आज के अध्यक्ष बलबीर सिंह एडवोकेट ने अपने संबोधन में तर्कशील के विशाल दायरे की बात की उन्होंने अपनी बात रखते हुए कहा कि जीवन के प्रत्येक कदम पर तर्कशीलता को अपना कर हम बेहतर जीवन जी सकते हैं। उनका कहना था कि तर्कशीलता का अर्थ केवल ईश्वर के अस्तित्व पर सवाल उठाना नहीं है बल्कि हर अवैज्ञानिक/अतार्किक बात का विरोध करना है और यह सिद्ध करना है कि मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं है द्य सभी इंसान बराबर हैं। जनवादी लेखक संघ अंबाला इकाई की अध्यक्ष अनुपम शर्मा ने कहा कि महिलाओं का तर्कशील होना बहुत जरूरी है क्योंकि वही बच्चों की परवरिश करती है और उन्हें वैज्ञानिक सोच दे सकती है। उन्होंने महिलाओं के उत्थान से सम्बन्धित एक कविता भी सुनाई। सुभाष तितरम ने अपनी बात रखी और पुस्तक प्रदर्शनी भी लगाई फरियाद सिंह और राम प्रसाद ने बाबाओं के द्वारा चमत्कारों के नाम पर बेवकूफ बना कर शोषण करने वाले ट्रिक्स का पर्दाफाश करते हुए बताया कि चमत्कार नाम की कोई चीज़ नहीं होती बल्कि सब चमत्कारों के पीछे वैज्ञानिक कारण होता है। जींद इकाई ने कामरेड बलबीर सिंह को सम्मानित भी किया गया।कामरेड सतपाल कालड़ा ने नशे के खिलाफ अपनी मुहिम में पर्चों का वितरण भी किया गया।

इस राज्य स्तरीय सेमिनार के आयोजन में यमुनानगर इकाई के अनुपम सिंह, जसवंत सिंह, राजेश बिंद्रा, बलबीर सिंह एडवोकेट, रजनीश गुप्ता,लक्ष्मण विनायक,संजीव वालिया, सुमीतपाल सिंह, डाक्टर रविन्द्र गिल, हरीराम शर्मा, राम वर्मा, राम कुमार, मास्टर शिवदयाल सिंह आदि ने सहयोग किया।

रिपोर्ट : गुरमीत अंबाला

24वां कृष्ण बरगाड़ी स्मृति राज्य स्तरीय समारोह 2026

बिखेरी चिंतन और चेतना की रौशनी

तर्कशील आंदोलन के दिवंगत नेता कृष्ण बरगाड़ी की स्मृति में 8 फरवरी को तर्कशील भवन बरनाला में 24वां राज्य स्तरीय स्मृति समारोह का आयोजित किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता मीडिया संगठन %द वायर% की वरिष्ठ संपादक आरिफा खानम शेरवानी, प्रख्यात मानवाधिकार कार्यकर्ता डॉ. नवशरण, तर्कशील सोसाइटी कनाडा के अध्यक्ष बलदेव रहपा, कृष्ण बरगाड़ी की जीवन साथिन राजिंदर कौर बरगाड़ी, तर्कशील सोसायटी पंजाब के राज्य संगठन प्रमुख मास्टर राजिंदर भादौड़, कार्यालय सचिव हेम राज स्टैनो और %तर्कशील% पत्रिका के संपादक राजपाल सिंह ने की।

पहले सत्र की शुरुआत कुलवंत बठिंडा, मंदर जस्सी, अजमेर अकलिया और जगसीर जिदा के क्रांतिकारी गीतों की प्रस्तुति से हुई। वहीं धर्मेंद्र मसानी ने बाबा बुल्ले शाह के कलाम %बुल्ला की जाना मैं कौन?% को क्रांतिकारी अंदाज में प्रस्तुत किया। तर्कशील पत्रिका के संपादक राजपाल सिंह ने मुख्य वक्ता आरिफा खानम शेरवानी के पत्रकारिता क्षेत्र में लंबे समय में दिए गए योगदान के बारे में जानकारी साझा की।

इस अवसर पर बोलते हुए आरिफा खानम शेरवानी ने कहा कि पंजाब के लोग अधिकारों, सत्य और न्याय की आशा की किरण है, जो स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर जन संघर्षों का नेतृत्व करता आ रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार के संरक्षण से देश में सांप्रदायिक फासीवाद तेजी से बढ़ रहा है, उन्होंने आरोप लगाया कि मीडिया का एक बड़ा हिस्सा जनहितैषी पत्रकारिता करने के बजाय, अब साम्राज्यवादी सरकारों और कॉरपोरेट घरानों के दबाव में सांप्रदायिक नफरत और भीड़ हिंसा को बढ़ावा दे रहा है। उन्होंने कहा कि जन अधिकारों की बात करने वाले सोशल मीडिया और यूट्यूब चैनलों को छापेमारी और प्रतिबंधों के जरिए चुप कराया जा रहा है। उन्होंने सांप्रदायिक फासीवादी युग में वैज्ञानिक चेतना की लहर विकसित करने में तर्कशील सोसाइटी की भूमिका को सलाम किया और इसके आगे प्रचार-प्रसार के लिए आधुनिक डिजिटल तकनीकों को अपनाने का सुझाव दिया। प्रांतीय समिति ने उन्हें तर्कशील सोसाइटी की पुस्तकों का एक सेट भेंट करके सम्मानित किया।

दूसरे सत्र में, लोकतांत्रिक विचारक और क्रांतिकारी नाटककार गुरशरण भा जी की पुत्री डॉ. नवशरण को मानवाधिकार संरक्षण के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान के लिए 24वें कृष्ण बरगाड़ी स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया, साथ ही उन्हें एक शॉल और पुस्तकों का एक सेट देकर सम्मानित किया गया।

अपने भाषण में डॉ. नवशरण ने कहा कि वर्तमान सरकारें शिक्षा और शिक्षण संस्थानों का भगवाकरण कर रही हैं, जिससे

वैज्ञानिक विचारधारा और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर गंभीर हमले हो रहे हैं। हाल ही में हिंदुत्व संगठनों द्वारा तर्कशील बुद्धिजीवियों नरेंद्र दाभोलकर, एमएम कालबुर्गी, गोविंद पानसरे और गौरी लंकेश की कायरतापूर्ण हत्याएं हिंदुत्व फासीवाद का एक शर्मनाक उदाहरण हैं। उन्होंने आम लोगों के बुनियादी मुद्दों से ध्यान भटकाने और वोट की राजनीति के लिए धार्मिक कट्टरवाद, धर्म, जाति, संप्रदाय और बाबाओं की सांप्रदायिक राजनीति में लिप्त होने के लिए वर्तमान सरकारों की कड़ी निंदा की।

बरगा परिवार के घनिष्ठ मित्र राम कुमार भादौड़ ने तर्कशील आंदोलन और अन्य सामाजिक क्षेत्रों में दिवंगत नेता कृष्ण बरगाड़ी की महत्वपूर्ण भूमिका और जीवन पर प्रकाश डाला। मास्टर राजिंदर भादौड़ ने तर्कशील आंदोलन के काफले से बिछड़ चुके शेष साथियों के योगदान को याद करते हुए कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों और कार्यक्रम के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करने वालों का धन्यवाद किया। वहीं, कृष्ण बरगाड़ी पुरस्कार प्राप्त करने वाले डॉ. नवशरण के सम्मान पत्र को पढ़ने और मंच का संचालन करने की जिम्मेदारी तर्कशील नेता राम स्वर्ण लख्खेवाली ने बखूबी निभाई।

इस अवसर पर, राज्य मीडिया प्रमुख सूमीत अमृतसर द्वारा प्रस्तुत प्रस्तावों में पत्रकारों और आरटीआई कार्यकर्ताओं के खिलाफ दर्ज अवैध मामलों को रद्द करने, विद्युत संशोधन विधेयक, बीज विधेयक, जी राम जी एमएनआरईजीए योजना और चार श्रम संहिताओं को निरस्त करने, भूमि अधिग्रहण संघर्ष समिति के नेता मुकेश मलाउद और गिरफ्तार बीकेयू (एकता उगराहन) के नेताओं को बिना शर्त रिहा करने, भारत–अमेरिका मुक्त व्यापार समझौते को रद्द करने, पुलिस मुठभेड़ों में आदिवासियों और क्रांतिकारी कार्यकर्ताओं की हत्या रोकने, उमर खालिद, शरजील इमाम सहित छह साल से जेल में बंद बुद्धिजीवियों, लेखकों, पत्रकारों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और अपनी सजा पूरी कर चुके सभी कैदियों को रिहा करने, बाबा बुल्ले शाह के मकबरे पर तोड़फोड़ करने वाले सांप्रदायिक तत्वों को गिरफ्तार करने और यूएपीए, एनएसए, एफएसपीए और एनआईए के काले कानूनों को निरस्त करने की जोरदार मांगें शामिल थीं,को सर्वसमिति से पारित किया गया।

राजेश अकालिया, गुरप्रीत शहना, बिंदर धनौला और जरनैल सिंह ने कार्यक्रम की समग्र व्यवस्थाओं का जिम्मा संभाला। वहीं, तर्कशील साहित्य प्रदर्शनी का आयोजन जसवीर सोनी ने किया था।

इस कार्यक्रम में अमेरिका से प्रेम समालसर, इक्कत्र सोढ़ी, रिजाईना (कनाडा) के विधायक भजन बराड़, सिसकाटून (कनाडा) के विधायक डॉ. तेजिंदर सिंह, बीरबल भदौड़, पावेल कुस्सा, प्रोफेसर ए. के. मल्लेरी के अलावा तर्कशील सोसाइटी के पदाधिकारी, जोन अध्यक्ष और पंजाब के सभी जोन और इकाइयों से सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

सूमीत अमृतसर
प्रांतीय मीडिया प्रमुख
तर्कशील सोसाइटी पंजाब

---

8 मार्च महिला दिवस पर

भंवर जाल में फंसी औरतें

भंवर जाल में फंसी औरतें
कशमकश में बंधी औरतें
कुछ कर गुजरने की चाह थी
पर बंधनों में बांधी गई औरतें
स्वच्छंद उड़ने की चाह थी
पर उनकी आंखों से डरी औरतें
कलम चलाने की चाह थी
दो पाटन में पीसी गईं औरतें
साहित्य पढ़ने की चाह थी
भटियार खाने में झोंकी गई औरतें
आसमान छूने की चाह थी
परम्पराओं में जकड़ी गई औरतें
नारी सशक्तिकरण के नारों में थी
सिर्फ विज्ञापनों में छपी औरतें।
आधुनिकता की अंधी दौड़ में
कब तक जाएंगी ठगी औरतें
भंवर जाल में फंसी औरतें
कशमकश में बंधी औरतें

–अनुपम शर्मा

तर्कशील संस्थाओं की समन्वय समिति की दो दिवसीय कार्यशाला हुई, कई मुद्दों पर चर्चा की

उत्तर भारतीय राज्यों की तर्कशील संस्थाओं की समन्वय समिति का सम्मेलन 21 - 22 फरवरी 2026 को उत्तराखंड राज्य में रामनगर जिला नैनीताल में कराया गया। इसमें तर्कशील सोसायटी पंजाब, साइंस फार सोसाइटी उत्तराखंड, तर्कशील सोसायटी हरियाणा, ज्ञान विज्ञान समिति हरियाणा, भारतीय नागरिक सामाजिक बल राजस्थान, तर्कशील सोसायटी राजस्थान, मानववादी विश्व समाज राजस्थान, अग्रगामी नौजवान छात्र सभा दिल्ली, आरंभ युवा मंच झारखंड, छत्तीसगढ़ विज्ञान मंच आदि संस्थाओं के सदस्यों तथा शिक्षक संघ उत्तर प्रदेश से साथी परम सिंह उनकी पत्नी मालती, ओमबीर तथा विनोद कुमार, दिल्ली से साथी मुकेश, मुक्तेश्वर उत्तराखंड से गोपाल लोढिआल आदि साथियों ने हिस्सा लिया। अग्रवाल धर्मशाला में 2 दिन तक चले इस सम्मेलन की व्यवस्था साइंस फार सोसाइटी उत्तराखंड की ओर से की गई। दूर दराज के राज्यों से आने वाले डैलीगेटस की रजिस्ट्रेशन का काम कर रही उषा पटवाल और लक्ष्मी मुस्कुराहट के साथ उनका स्वागत करती। नाश्ता व जलपान करने के बाद डेलिगेट्स ने पहले सेशन में एक दूसरे से जान पहचान कराई तथा अपनी-अपनी संस्थाओं की सरगर्मियों के बारे में बताया। इस सेशन की संचालन कमेटी में पंजाब से जसवंत मोहाली, दिल्ली से साथी प्रशांत और हरियाणा से ईश्वर नास्तिक शामिल थे तथा स्टेज की कार्यवाही उत्तराखंड से मैडम उषा पटवाल ने चलाई। दूसरे सेशन का विषय था - वैज्ञानिक चेतना के प्रसार में चुनौतियां और कार्यभार जिसका संचालन राजस्थान से साथी राम मूर्ति, पंजाब से साथी भूरा सिंह और उत्तराखंड से साथी गिरीश जी ने किया । स्टेज संचालन का काम उत्तराखंड से साथी मदन ने बखूबी निभाया। मुख्य पेपर पंजाब से साथी भूरा सिंह में प्रस्तुत किया। इस पेपर में विस्तार से बताया गया कि किस तरह संविधान में दर्ज लोकहित के मूल्यों को एक-एक करके निष्क्रिय किया जा रहा है जिसमें विज्ञानक चेतना के प्रसार के लिए 51 ए. एच. भी शामिल है। दूसरे पेपर अग्रगामी छात्र नौजवान सभा के साथी विकास तथा साइंस फार सोसाइटी उत्तराखंड से बीर जी ने पेश किये। इस महत्वपूर्ण विषय पर राजस्थान से साथी जगदीश ढाका तथा शीशपाल जी ने सुझाव दिया कि हमें संविधान की प्रस्तावना के शुरुआती शब्दों ''हम भारत के लोग...'' के नाम से अभियान शुरू करना चाहिए जिसमें सभी धर्मो, संप्रदायों के लोगों को शामिल करके सामाजिक एकजुटता बढ़ानी चाहिए। उत्तर प्रदेश से साथी इंद्रजीत और ऐस. ऐ. खान आदि साथियों ने भी विस्तार से चर्चा की। इस दरमियान दिल्ली से साथी विकास तथा एकता महिला मंच उत्तराखंड की महिला कलाकारों ने बहुत भावपूर्त गीत समुह गान के रूप में पेश किए। शाम को, पुणे में शहीद कर दिए गए हमारे काफले के साथी डा. नरेंद्र दाभोलकर के जीवन के बारे में दस्तावेजी फिल्म विवेक दिखाई गई । दूसरे दिन का पहला सेशन था - तर्कशीलों की समन्वय समिति के व्यवहारिक काम, जिसका संचालन राममूर्ति जी, हरचंद भिंडर तथा झारखंड से साथी विकास ने किया। इस विचार चर्चा में फतेहाबाद से साथी संदीप, अंबाला से श्री आत्मा सिंह, पंजाब से साथी जसवंत जीरख आदि साथियों ने हिंदी पत्रिका तर्कशील पथ की गिनती बढ़ाने तथा विद्यार्थियों में काम करने पर जोर दिया। छत्तीसगढ़ से साथी फरैंक अगस्टाइन ने अपनी संस्था की जान पहचान कराते हुए बताया कि छत्तीसगढ़ में 8 एकड़ में विज्ञान आश्रम बनाया गया है। दूसरे दिन का दूसरा सेशन था - संस्था का पुनर-नामकरण तथा पदों का निर्धारण। जिसका संचालन साथी सर्वोच्च, मैडम मंजू तथा ईश्वर नास्तिक ने किया। लंबी विचार चर्चा के बाद संस्था का पुनर नाम तय किया - रैश्नलिस्ट फैडरेशन ऑफ़ इंडिया - नॉर्थ जोन (Rationalist federation of India- North Zone)। यह बात भी खास तौर पर रखी गई कि सभी संस्थाएं अपना अपना काम पहले की तरह ही आज़ाद तरीके से करती रहेंगी।इस संस्था का उद्देश्य आपसी ताल-मेल बढ़ाना तथा कुछ सांझा काम निकालना है, जैसे -

- हिंदी पत्रिका तर्कशील पथ की गिनती बढ़ाना, उसमें

लेख, गतिविधियां आदि मैटर भेजना।

– लोगों की समस्याओं की बात करते हुए उनसे जुड़ना, खास तौर पर विद्यार्थी और नौजवानों से।

– पुस्तकों का अध्ययन और सोशल मीडिया का संतुलन बनाए रखना।

– संस्था की मीटिंग में साल का कोई एक दिन तय किया जाएगा जिस दिन संस्था के आह्वान पर इसकी सभी घटक संस्थाएं अपनी–अपनी जगह पर मनाएंगी।

आखरी व खुले स्तर में स्थानक लोगों ने भी भाग लिया जिसमें औरतों की बड़ी गिनती शामिल थी। इसमें पंजाब से रामकुमार जी तथा हरिंदर कौर ने जादू के ट्रिक दिखाते हुए अंधविश्वास को प्रति जागरूक किया जिसमें दर्शकों ने गहरी दिलचस्पी दिखाई। दिल्ली से साथी प्रशांत जी ने उत्तराखंड के साथियों द्वारा इस सम्मेलन की बढ़िया व्यवस्था करने और उसे सुचारू रूप से चलाने के लिए धन्यवाद किया और बधाई दी। इस मौके पर गार्गी प्रकाशन की ओर से पुस्तक प्रदर्शनी छात्रा श्रुति ने लगाई। आए हुए सदस्यों ने साहित्य की अच्छी खरीदारी की। क्रांतिकारी शुभकामनाओं के साथ सम्मेलन की समाप्ति हुई। पूरे प्रोग्राम का कोई एक खास नुक्ता निकलना हो तो मैं कह सकता हूं कि उत्तराखंड के साथियों के इस प्रोग्राम को मुख्यत: औरत कार्यकर्ताओं ने संभाल रखा था – रजिस्ट्रेशन डेस्क पर, किताबों की प्रदर्शनी पर, पहले सेशन का स्टेज संचालन, बीच–बीच में डफली पर समूह गान सिर्फ टाइमपास के लिए नहीं बल्कि बहुत अर्थपूर्ण व उत्साहवर्धक। महिला एकता मंच की इन जुझारू कार्यकर्ताओं से हम सभी संस्थाओं को सीखना चाहिए।

–रिपोर्ट जसवंत मोहाली

अध्यक्ष राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय तालमेल विभाग

तर्कशील सोसाइटी पंजाब

नैंसी गांव (कुरुक्षेत्र) में तर्कशील मेले का आयोजन

तर्कशील सोसाइटी हरियाणा द्वारा 15 फरवरी, 2026 को गांव नैसी जिला कुरुक्षेत्र में तर्कशील मेले का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारी संख्या में लोगों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन जसप्रीत कौर व कर्मजीत ठसका ने किया। पंजाबी फिल्मों एवं टी.वी. के कलाकार एकत्र सिंह के नेतृत्व मे चंडीगढ़ स्कूल ऑफ ड्रामा की टीम ने नाटक 'ठगी' और 'ब्लाकी राम' नाटक तथा कोरियोग्राफी 'मजदूर दी लुट' व 'देश नू चल्लो' प्रस्तुत किए। तर्कशील जादूगर 'फरियाद सन्याना' व 'राम प्रसाद' की टीम ने 'चमत्कारों का पर्दाफाश' शो में विभिन्न मैजिक ट्रिक्स दिखाए व उनकी व्याख्या भी प्रस्तुत की।उन्होंने इस के साथ ही चमत्कारों में न फंसने की अपील की और बताया कि दुनिया में चमत्कार के नाम पर आम जन की लूट की जाती है। बलजीत भारती महासचिव ने तर्कशील सोसाइटी का परिचय देते हुए संस्था की 23 शर्तों की चुनौती रखी जिसे दुनियां का कोई भी व्यक्ति करके करोड़ों का ईनाम जीत सकता है। रेयांश कुंडू व सुभाष तितरम ने तर्कशील साहित्य की प्रदर्शनी लगाई जिसमें लोगों ने भारी संख्या में पुस्तकें खरीदीं। कार्यक्रम का प्रबंध नैसी इकाई के प्रधान बलचित्र सिंह ढिल्लों ने किया जिसमें अन्य साथियों रवनीत गिल, करमजीत ठसका ने भरपूर सहयोग किया। राज्य कमेटी की ओर से बलजीत भारती, ईश्वर सिंह, अनुपम सिंह, आत्मा सिंह, हरबिलास, सुभाष तितरम व परविंदर सिंह उपस्थित रहे। कंवलजीत सिंह ढिल्लों सरपंच व दिलबाग सिंह गुराया समाज सेवी मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल हुए। उपस्थित लोगों ने कार्यक्रम की भरपूर सराहना की एवं आर्थिक सहयोग भी किया। यह कार्यक्रम स्मृति शेष तर्कशील साथी टहल सिंह गिल को समर्पित रहा,जिनकी कुछ वर्ष पूर्व एक्सीडेंट में मृत्यु हो गई थी, साथी टहल सिंह गिल इलाके में तर्कशील मेले करवाने के नाम से जाने जाते थे।

इस अवसर पर ग्राम पंचायत एवं स्थानीय लोगों का बेहद सहयोग रहा।कार्यक्रम में जनवादी लेखक संघ , भारतीय किसान यूनियन,मजदूर यूनियन तथा अन्य सामाजिक संगठनों के सदस्य भी उपस्थित रहे।

रिपोर्ट–गुरमीत अंबाला / बलजीत भारती।



नैंसी गांव (हरियाणा) में चंडीगढ़ स्कूल का ड्रामा की टीम नाटक पेश करती हुई।



नाटक मेले में मुख्य अतिथियों को सम्मानित करते हुए तर्कशील कार्यकर्ता।

कृष्ण बरगाड़ी स्मृति समारोह 2026



समागम में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंची 'द वायर' की वरिष्ठ संपादक
आरफ़ा खानुम शेरवानी दर्शकों को संबोधित करते हुए।



तर्कशील सोसायटी पंजाब डॉ. नवशरण और
आरफ़ा खानुम शेरवानी को सम्मानित करते हुए।

मार्च-अप्रैल 2026 Reg. No. HARHIN/2014/60580 वर्ष 13 अंक 2



सम्मेलन में उपस्थित विभिन्न उत्तर भारतीय राज्यों के तर्कशील कार्यकर्ता।

राम नगर (उत्तराखंड) में आयोजित उत्तर भारत के तर्कशील संगठनों के दो दिवसीय सम्मेलन में विभिन्न वक्ता संबोधित करते हुए।



भूरा सिंह (पंजाब)



राममूर्ति (राजस्थान)



प्रशांत



उषा पटवाल



संदीप माहिया



जसवंत मोहाली
(अध्यक्ष राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय तालमेल विभाग तर्कशील सोसाइटी पंजाब)

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Cell. 98769 53561, 98728 74620
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....